दैनिक जागरण

समय का सदुपयोग ही सफलता का सबसे बड़ा सूत्र है

बेलगाम होता पाकिस्तान

दिल्ली क्राइम ब्रांच की ओर से पाकिस्तान से जुड़े हथियार तस्करी रैकेट का भंडाफोड़ किए जाने पर हैरानी नहीं। पाकिस्तान यह काम पहले से कर रहा है। अभी तक वह ड्रोन के जरिये पंजाब में मादक पदार्थों के साथ जो हथियार भेजता था, वे खालिस्तान समर्थक आतंकियों के लिए होते थे। अब पता चल रहा है कि वह गैंगस्टरों को भी हथियार भेज रहा है। इसका निष्कर्ष यही है कि पाकिस्तान भारत को अशांत और अस्थिर करने का काम कहीं अधिक बड़े पैमाने पर हरसंभव तरीके से कर रहा है। वह केवल नशीले पदार्थ और हथियार ही नहीं भेज रहा है, बल्कि मुस्लिम युवकों को मजहबी कट्टरता का पाठ पढ़ाकर उन्हें जिहादी भी बना रहा है। यह एक तथ्य है कि दिल्ली में लाल किले के निकट आतंकी हमले को अंजाम देने वाले फरीदाबाद माड्यूल के तार पाकिस्तान से जुड़ रहे हैं। इसके पहले अनेक ऐसे आतंकी पकड़े जा चुके हैं, जो पाकिस्तान में पल रहे आतंकवादी संगठन लश्कर या जैश के इशारे पर जिहादी गतिविधियों में लिप्त थे। इसकी भी अनदेखी न की जाए कि सीमा पार से आतंकियों की घुसपैठ की कोशिश होती ही रहती है। इसका सीधा मतलब है कि आपरेशन सिंदूर से पस्त पड़े पाकिस्तान का दुस्साहस फिर से चरम पर है। इसका कारण केवल जिहादी सोच वाले जनरल आसिम मुनीर का निरंकुश हो जाना ही नहीं, अमेरिकी राष्ट्रपति की ओर से पाकिस्तान की पीठ पर हाथ रख देना भी है।

अब इसमें कोई संदेह नहीं कि पाकिस्तान के बेलगाम होते भारत विरोधी रवैये के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति सीधे तौर पर जिम्मेदार हैं। वे उसी पाकिस्तान की वाहवाही करने का कोई अवसर नहीं छोड़ रहे हैं, जिसे अपने पिछले कार्यकाल में खुद उन्होंने धोखेबाज और आतंकियों को शरण देने वाला बताया था। यदि इस कार्यकाल में अचानक उनका हृदय परिवर्तन हो गया तो इसका कारण उनके अपने निजी स्वार्थ हैं। वे अमेरिका के बजाय अपने निजी हितों को प्राथमिकता दे रहे हैं। ट्रंप अपने संकीर्ण स्वार्थों को पूरा करने के लोभ के अलावा इसलिए भी पाकिस्तान के चंगुल में फंस रहे हैं, क्योंकि उन्हें अपनी झूठी प्रशंसा बहुत भाती है और पाकिस्तानी इसमें माहिर हैं। आतंकवाद को पालने-पोसने और नशीले पदार्थों की तस्करी को बढ़ावा देने वाले पाकिस्तान की तरफदारी कर अमेरिकी राष्ट्रपति केवल भारत के लिए ही संकट नहीं पैदा कर रहे हैं, बल्कि दक्षिण एशिया की शांति को भी खतरे में डाल रहे हैं। भारत के लिए आवश्यक केवल यह नहीं कि वह पाकिस्तान के आतंकी चेहरे को अमेरिका के समक्ष उजागर करता रहे, बल्कि पाकिस्तानी सेना, खुफिया एजेंसी आइएसआइ और उनकी ओर से पाले जा रहे आतंकी संगठनों पर दबाव बनाने और साथ ही उन्हें निशाने पर लेने की तैयारी भी करता रहे।

खतरे में स्वास्थ्य

केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन के ताजा ड्रग अलर्ट ने फिर देश की दवा निगरानी व्यवस्था की कमजोरियों को उजागर किया है। गुणवत्ता में खराब पाई जाने वाली 211 दवाओं में से 66 हिमाचल प्रदेश के उद्योगों में बनी हैं। यह स्थिति न केवल चिंताजनक है, बल्कि प्रदेश में दवा निर्माण की गुणवत्ता के साथ प्रतिष्ठा पर भी प्रश्नचिह्न खड़ा करता है। दवाएं वह भरोसा हैं जिन पर मरीज जिंदगी टिकाकर रखते हैं, और जब वही टूटने लगे तो स्वास्थ्य व्यवस्था की नींव हिलने लगती है। पांच दवाएं नकली पाई गई हैं। नकली दवाएं समाज के लिए विष के समान हैं। ये न केवल मरीज की बीमारी को बढ़ा सकती हैं, बल्कि कई बार जानलेवा भी साबित होती हैं। यह सवाल उठना लाजमी है कि इतनी बड़ी संख्या में दवाओं की गुणवत्ता कैसे प्रभावित हो रही है और निगरानी तंत्र कहां चूक रहा है। क्या गुणवत्ता जांच में कमी है, या उत्पादन प्रक्रिया में अनियमितताएं बढ़ रही हैं? दवा उद्योग को लेकर हिमाचल एक बड़ा हब माना जाता है, ऐसे में यहां से लगातार गुणवत्ता-विहीन दवाओं का सामने आना प्रदेश की साख पर भी आंच डालता है। सरकार और नियामक एजेंसियों को इसे गंभीर संकट की तरह देखना होगा। नियमित सैंपलिंग के साथ गैर-मानक दवाएं बनाने वाले निर्माताओं पर कठोर दंडात्मक कार्रवाई समय की मांग है। स्वास्थ्य सुरक्षा राष्ट्र की रीढ़ है, और दवाओं की गुणवत्ता उसकी सबसे अहम कड़ी। यदि इस कड़ी में कमजोरी आती है, तो उसका असर आम आदमी की जान पर पड़ता है। दवा निगरानी को दिखावा नहीं, बल्कि प्राथमिकता बनाना होगा।

> इतनी बड़ी संख्या में दवाओं के सैंपल फेल होना उत्पादन में गुणवत्ता पर प्रश्न खड़े करता है

झूठे आरोपों पर टिका विपक्ष

संजय गुप्त

विपक्ष को भाजपा की राजनीतिक बढ़त रोकनी है तो उसे ऐसा नैरेटिव बनाना होगा, जिससे लोगों का भरोसा मिल सके। यह झूठे आरोपों के सहारे नहीं हो सकता

अवधेश राजपूत

नीतीश कुमार ने बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में दसवीं बार शपथ ले ली और मंत्रियों के विभागों का बंटवारा भी हो गया, पर यह चर्चा थम नहीं रही कि आखिर राजग ने इतनी प्रचंड जीत कैसे हासिल कर ली। चुनावी जीत कई कारणों पर निर्भर करती है। बिहार में राजग की जीत के भी कई कारण रहे। एक बड़ा कारण रहा जदयू-भाजपा के साथ उसके अन्य सहयोगी दलों के बीच बेहतर सीट बंटवारा और तालमेल। इसके अलावा एक अन्य प्रमुख कारण है नीतीश कुमार के 20 साल के शासन में बिहार का पटरी पर आना। इसका संज्ञान इसलिए अधिक लिया गया, क्योंकि इसके पहले लालू-राबड़ी यादव का शासनकाल इस कदर जंगलराज का पर्याय बन गया था कि पिछले चुनावों की तरह इस चुनाव में भी मुद्दा बना और उसने अपना असर भी दिखाया। विपक्ष यह सब देखने से इन्कार कर रहा है। विपक्षी दल और विशेष रूप से कांग्रेस वोट चोरी का ही राग अलाप रही है। वोट चोरी का आरोप चुनावों के पहले तभी उछाल दिया गया था, जब चुनाव आयोग ने मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआइआर कराना शुरू ही किया था। विपक्ष ने वोट चोरी का आरोप लगाकर धरना-प्रदर्शन करने के साथ वोटर अधिकार यात्रा तक निकाली, लेकिन चुनाव आते-आते यह कोई मुद्दा ही नहीं रहा। चुनाव बाद के आंकड़े यह बताते हैं कि कुछ ऐसे क्षेत्र जहां बड़ी संख्या में लोगों के नाम वोटर लिस्ट से कटे, वहां कहीं राजग जीता तो कहीं विपक्ष। ऐसा कुछ भी सामने नहीं आया कि राजग को एसआइआर का लाभ मिला। मतदाता सूची से लाखों नाम कट जाने के बाद भी किसी ने यह शिकायत नहीं की कि उसका नाम गलत तरीके से काट दिया गया है। यानी जो नाम कटे, वे सही कटे। यदि ऐसा नहीं होता तो लोगों ने शिकायत की होती। ऐसे लोगों को सामने लाकर राजनीतिक दल भी शिकायत नहीं कर सके तो इसीलिए कि उन्हें कोई ऐसा मिला ही नहीं।

चुनाव आयोग ने बिहार में कम समय में जिस तरह एसआइआर कराया और उसके उपरांत सफलतापूर्वक चुनाव कराए, इसके लिए उसे साधुवाद दिया जाना चाहिए, लेकिन विपक्ष उसकी आलोचना करने के साथ नौ राज्यों और तीन केंद्रशासित क्षेत्रों में हो रहे एसआइआर का विरोध कर रहा है। विपक्ष शासित राज्य और विशेष रूप से पश्चिम बंगाल, केरल और तमिलनाडु में सत्तारूढ़ दल एसआइआर का कुछ ज्यादा ही विरोध कर रहे हैं। बंगाल की मुख्यमंत्री ने एसआइआर के विरोध में चुनाव आयोग को चिट्ठी लिखी है और उसे अनावश्यक बताया है। वे ऐसा इसके बाद भी कह रही हैं कि बंगाल में रह रहे हजारों बांग्लादेशी वापस अपने देश लौट रहे हैं। यह एसआइआर का ही असर है कि तमाम बांग्लादेशी बांग्लादेश लौटने को आतुर हैं। वे इसीलिए लौट रहे हैं, क्योंकि उन्होंने घुसपैठ की थी। उनके बांग्लादेश लौटने से गृहमंत्री अमित शाह की यह बात सही सिद्ध होती है कि देश में घुसपैठिए रह रहे हैं और वे भारत के संसाधनों का दोहन कर रहे हैं। भारत जैसे विकासशील देश में अवैध रूप से आ बसे लोगों के लिए कोई जगह नहीं हो सकती। उन्हें निकालने के लिए अन्य उपाय भी किए जाने चाहिए, क्योंकि यह काम चुनाव आयोग का नहीं कि वह घुसपैठियों के खिलाफ कदम उठाए।

यह उम्मीद की जाए कि एसआइआर की मौजूदा प्रक्रिया से बंगाल समेत सभी राज्यों में वोटर लिस्ट दुरुस्त होगी। चूंकि इसके पहले वोटर लिस्ट ठीक करने का काम करीब दो दशक पहले हुआ था, इसलिए उसमें तमाम खामियां घर कर गई हैं। वोटर लिस्ट में केवल दोहराव ही नहीं है, उनमें मृतकों और अन्यत्र बस गए लोगों के नाम भी दर्ज हैं। निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए वोटर लिस्ट का सही होना आवश्यक है। समझना कठिन है कि विपक्षी दलों को वोटर लिस्ट ठीक किए जाने से क्या परेशानी है। वे वोटर लिस्ट में गड़बड़ी की शिकायत भी करते हैं और एसआइआर भी नहीं होने देना चाहते। आखिर एसआइआर पहली बार तो हो नहीं रहा। उसे कराना चुनाव आयोग का संवैधानिक दायित्व है। इसीलिए सुप्रीम कोर्ट ने बिहार में एसआइआर पर रोक लगाने की जरूरत नहीं समझी। सुप्रीम कोर्ट की ओर से एसआइआर को जरूरी बताए जाने के बाद भी विपक्षी दल यह माहौल बना रहे हैं कि इसके जरिये भाजपा चुनाव जीतने के लिए जोड़तोड़ करती है और चुनाव आयोग उसका साथ देता है। इसी शिकायत के साथ 12 राज्यों में हो रहे एसआइआर के खिलाफ फिर से सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया गया है। बिहार में निराशाजनक प्रदर्शन करने वाली कांग्रेस दिल्ली के रामलीला मैदान में जिस तरह एक रैली करने जा रही है, उससे साफ है कि वह इस मुद्दे पर अपने झूठे अभियान को जारी रखेगी। इसके संकेत राहुल गांधी के साथ कांग्रेस के अन्य नेताओं के चुनाव आयोग के खिलाफ आए बयानों से मिल रहा है। राहुल गांधी चुनाव आयोग को जिस तरह निशाने पर ले रहे हैं, वह एक संवैधानिक संस्था का अपमान ही है। वे संवैधानिक संस्था को कमजोर करने की कोशिश में खुद के साथ अपने दल को ही कमजोर कर रहे हैं, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट एसआइआर को सही मान रहा है। भले ही विपक्षी नेताओं समेत कुछ कथित लोकतंत्र हितैषी 12 राज्यों में हो रहे एसआइआर के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंचे हों, पर इसमें संदेह है कि वे वहां से इस प्रक्रिया को रुकवा सकेंगे।

विपक्ष यह समझने से इन्कार कर रहा है कि वह झूठे आरोपों के सहारे न तो जनता के बीच अपनी विश्वसनीयता बढ़ा सकता है और न ही भाजपा की राजनीतिक बढ़त को रोक सकता है। बिहार में बड़ी जीत के साथ देश भर में भाजपा के विधायकों की संख्या 1654 हो चुकी है, जो उसके लिए एक रिकार्ड है। आने वाले समय में उसके विधायकों की संख्या में और वृद्धि होना तय है। यदि विपक्ष को भाजपा की राजनीतिक बढ़त रोकनी है तो उसे अपना नैरेटिव ऐसा बनाना होगा, जिससे वह लोगों का भरोसा जीत सके। यह काम झूठे आरोपों के सहारे नहीं हो सकता। विडंबना यह है कि एसआइआर पर झूठे आरोप का ही सहारा लिया जा रहा है। लोकतंत्र में जैसे सत्ताधारी दल का अत्यधिक सशक्त होना ठीक नहीं, वैसे ही विपक्ष का बहुत कमजोर होना भी शुभ नहीं।

response@jagran.com

हवा का मूड सुधरने का इंतजार

हास्य-व्यंग्य

संतोष त्रिवेदी

सर्दियों में खराब हवा के लिए पहले पराली, दीवाली पर ठीकरा फूटता था। अब उसकी भी जरूरत नहीं

राजधानी दिल्ली समेत उत्तर भारत का एक बड़ा हिस्सा फिर से धुंध की गिरफ्त में है। बीसियों दिन हो गए, साफ हवा रूठी हुई है। शायद उसे भी किसी के खत का इंतजार है। वैसे राजधानी और उसके आसपास प्रदूषण होना कोई खबर भी नहीं रही। इस मौसम में हर साल हवा का मूड बिगड़ता है। पहले पराली, दीवाली पर ठीकरा फूटता था। अब उसकी भी जरूरत नहीं रही। आम आदमी ने इसे अपनी नियति मान लिया है और सरकार ने बेहतरी दिखाते हुए दीगर मसलों की तरह प्रदूषण को भी 'न्यू नार्मल' की श्रेणी में डाल दिया है। उसकी प्राथमिकता में सरकार बनाना भर है। उसे भरोसा है कि सारे देश में जब एक सी हवा बहेगी, राजधानी की हवा अपने आप साफ हो जाएगी या आम आदमी ही। इसमें पहले कौन साफ होता है, देखने वाली बात यही है।

सारी दुनिया दिल्ली के प्रदूषण पर शोध कर रही है। 'कूड़े का पहाड़' पहले ही इसकी शान में चार चांद लगा रहा था, अब जहर भरी हवा और धूल के महीन कण दिल्ली के मुकुट में स्थायी रूप से जड़ गए हैं। घर से बाहर निकलते ही आंखें बाहर निकलने लगती हैं। पहले ऋषि-मुनि लंबी तपस्या करके आंखों से अग्नि प्रज्वलित करते थे। सामने वाला देखते-देखते राख हो जाता था। अब यह प्रताप आम आदमी को हासिल हो गया है। फर्क सिर्फ इतना भर हुआ है कि उसने उसी आग को आत्मसात कर लिया है। फेफड़े ठीक से फड़फड़ा भी नहीं पा रहे। अभी तक मुई सिगरेट अकेले यह काम करती थी, लेकिन जबसे सरकार ने इस पर तबीयत से टैक्स ठोका है, लोग बिजली और पानी के बाद फ्री में धुआं ले रहे हैं। विकास के लिए और कोई कितना हासिल कर लेगा?

एक तो यह कोई समस्या नहीं है। अगर है भी तो साफ हवा देने की जिम्मेदारी सीधे जनता पर है। अव्वल तो वह सड़कों पर निकले नहीं। अगर निकलती भी है तो रैली, जुलूस और शोभायात्रा संग निकले। बिना डीजल और पेट्रोल की गाड़ी में निकले। सम-विषम सोचकर घर से निकले। मंत्री, सांसद, विधायक और पार्षद चुनाव जीतने के बाद से आराम फरमा रहे हैं। उनसे मिलने में कृपया मारामारी न करें। यह पक्की बात है कि यदि उन्हें धुंध का तनिक भी संज्ञान होता तो अब तक जरूर इस गंदी हवा का मान-मर्दन कर देते। आखिर सब कुछ सरकार ही क्यों करे? वैसे भी लोगों को महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और आतंक से मुक्ति के बाद हवा भी साफ चाहिए। सरकार और जरूरी कामों से सांस ले सके तो आम आदमी की सांस की भी खैर ले। हालांकि शहर में हर आदमी परेशान है, ऐसा भी नहीं है। कुछ ने शुद्ध हवा को अपने-अपने कमरों में पैदा कर लिया है। वह दिन भी जल्द आएगा, जब समृद्ध लोग अपनी नाक घर पर ही रखकर आएंगे। यदि नाक के साथ निकलना जरूरी हुआ तो नाक में कुप्पी लगाकर निकला करेंगे।

हम बीस दिन पहले आखिरी बार सैर पर निकले थे। डाक्टर ने कहा कि पहले सांसें बचाओ। जिंदा रहोगे तो घुटने भी बदलवा लेना। अच्छी बात है कि इसी बहाने घर को भी कुछ टाइम दे पाओगे। घर पर रहने के अपने खतरे हैं, पर जीवन बचाने के लिए कुछ खतरे उठाने पड़ेंगे। बस वाद-विवाद से दूर रहना। अब डाक्टर साहब को कौन समझाए। झगड़े से दूर रहने से खतरा नहीं टलता। अक्सर झगड़ा खुद सिर पर आकर बैठ जाता है। बाहर जहरीली हवा लेने से बेहतर है कि घर पर ही जहर के घूंट पिए जाएं। बाहर किसी ने रेडियो चला दिया है। उसमें हमारी पीढ़ी का गाना बज रहा है 'तुम अपना रंजो-गम, अपनी परेशानी मुझे दे दो।' तभी श्रीमती जी की आवाज आती है, 'खिड़की बंद कर लो जी। धुंध अंदर आ रही है'। और मैं खिड़की बंद करके कमरे में ही टहलने लगता हूं।

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य

अयोध्या में श्रद्धालुओं का आगमन

(संख्या करोड़ में)

स्रोत: उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग (*जून 2025 तक के आंकड़े)

ऊर्जा

जीवन-पथ

परिस्थितियां जीवन-पथ में अवरोध उत्पन्न करती हैं, किंतु वे मनुष्य की नियति की अंतिम निर्धारक नहीं होतीं। मनुष्य का साहस, संकल्प, धैर्य और सतत कर्म ही उसके भविष्य की दिशा और दशा तय करते हैं। जीवन का प्रत्येक चरण हमें यह सीख देता है कि परिश्रम का कोई पर्याय नहीं है। चाहे लक्ष्य कितना भी दुर्गम, दुष्कर अथवा जटिल क्यों न प्रतीत हो, यदि प्रयास सुविचारित दिशा में अनवरत रूप से किया जाए, तो सफलता का द्वार अनिवार्यतः उद्घाटित होता है। प्रतिकूल परिस्थितियां ही मनुष्य के असली धैर्य, उद्यमशीलता और मानसिक दृढ़ता की परीक्षा लेती हैं। विपत्तियां मनुष्य को निर्बल नहीं करतीं, अपितु भीतर सुप्त पड़ी क्षमताओं को जाग्रत करती हैं। जब मनुष्य कठिनाइयों का सामना निर्भीकता और विवेक के साथ करता है, तभी उसका वास्तविक व्यक्तित्व उभरकर सामने आता है। सफलता वस्तुतः सुनियोजित योजना, अनुशासन और निरंतर साधना का फल है। जो व्यक्ति परिस्थितियों का रोना रोते हुए हाथ पर हाथ धरे बैठा रहता है, वह अपने ही भविष्य के द्वार बंद कर लेता है। जबकि जो व्यक्ति चुनौतियों को अवसर में परिवर्तित करने की क्षमता विकसित कर लेता है, वही जीवन-पथ पर विजय प्राप्त करता है। पर्वतों को भी पिघलाने वाली शक्ति उसी के पास होती है, जिसके पास अटूट श्रद्धा, दृढ़विश्वास और अखंड प्रयास का संबल हो।

मनुष्य को परिस्थितियों से डरने के बजाय अपने अंतःशक्ति पर विश्वास कर आगे बढ़ना चाहिए। मनुष्य की महानता उसके संसाधनों में नहीं, बल्कि उसकी इच्छाशक्ति में निहित है। जो व्यक्ति प्रतिकूलताओं के समक्ष झुकने के बजाय उनसे संघर्ष करने का साहस रखता है, वह अपने भाग्य का निर्माता बन जाता है। मनुष्य परिस्थितियों का उत्पाद नहीं, बल्कि परिस्थितियों का निर्माता है। वह उनसे बड़ा और अधिक सामर्थ्यवान है।

समराज चौहान

सुपरकंप्यूटर से बना डिजिटल मस्तिष्क

मुकुल व्यास

डिजिटल मस्तिष्क से रोग की प्रगति, तंत्रिका की गतिशीलता और संभावित उपचारों का अध्ययन किया जा सकता है

हमारा मस्तिष्क ऊपर से अखरोट की गिरी जैसा दिखता है। इसकी उभरी हुई सिलवटें वाली सतह को सेरिब्रल कार्टेक्स कहा जाता है। ज्ञान और स्मृति जैसे अनेक उच्च स्तरीय संज्ञानात्मक कार्य मस्तिष्क के कार्टेक्स से जुड़े हुए हैं। विज्ञानी कार्टेक्स की गहन जांच करके मस्तिष्क की कार्य प्रणाली का अध्ययन करना चाहते हैं। इस दिशा में अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ताओं के एक दल ने जापान के शक्तिशाली फुगाकू सुपरकंप्यूटर का उपयोग करके चूहे के मस्तिष्क के कार्टेक्स का एक डिजिटल माडल बनाया है। डिजिटल मस्तिष्क एक वास्तविक मस्तिष्क की तरह व्यवहार करता है, जिससे विज्ञानी रोग की प्रगति, तंत्रिका की गतिशीलता और संभावित उपचारों का अध्ययन कर सकते हैं। यह विज्ञानियों को एक आभासी वातावरण में अल्जाइमर या मिर्गी जैसी स्थितियों का पुनर्निर्माण करके मस्तिष्क के काम करने के तरीके का पता लगाने की एक नई विधि प्रदान करता है। वे देख सकते हैं कि क्षति तंत्रिका नेटवर्क के माध्यम से कैसे आगे बढ़ती है। इस माडल से अनुभूति और चेतना से संबंधित प्रक्रियाओं की भी जांच की जा सकती है। यह माडल संरचना और गतिविधि दोनों को दर्शाता है, जिसमें लगभग एक करोड़ स्नायु कोशिकाएं (न्यूरांस), 26 अरब स्नायु कनेक्शन (सिनेप्स) और 86 जुड़े हुए मस्तिष्क क्षेत्र शामिल हैं।

यह उपलब्धि फुगाकू सुपरकंप्यूटर की वजह से संभव हुई है, जो जापान का प्रमुख सिस्टम है। यह दुनिया के सबसे तेज सुपर कंप्यूटरों में गिना जाता है। यह सिस्टम प्रति सेकेंड अरबों गणनाएं करने में सक्षम है। अमेरिका के एलन इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं ने जापान की इलेक्ट्रो-कम्युनिकेशंस यूनिवर्सिटी और तीन अन्य जापानी संस्थानों की टीमों के साथ मिलकर इस परियोजना को साकार किया। विज्ञानी अब कार्टेक्स के इस माडल का उपयोग यह पता लगाने के लिए कर सकते हैं कि बीमारियां कैसे विकसित होती हैं, मस्तिष्क तरंगें ध्यान को कैसे प्रभावित करती हैं या दौरे मस्तिष्क में कैसे फैलते हैं। पहले, इस तरह के अध्ययनों के लिए वास्तविक जैविक ऊतक की आवश्यकता होती थी और एक समय में केवल एक ही प्रयोग किया जा सकता था। अब शोधकर्ता आभासी स्थान में कई तरह के आइडिया की जांच कर सकते हैं। ये माडल लक्षणों के प्रकट होने से पहले ही तंत्रिका संबंधी विकारों के शुरुआती लक्षणों को उजागर करने में मदद कर सकते हैं और विज्ञानियों को डिजिटल सेटिंग में संभावित उपचारों या चिकित्सा पद्धतियों का मूल्यांकन करने में सक्षम बना सकते हैं।

विज्ञानियों का दीर्घकालिक लक्ष्य संपूर्ण-मस्तिष्क माडल बनाना है, जिसमें मानव मस्तिष्क भी शामिल है।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

राजरंग

चुनावी राग

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी-20 शिखर सम्मेलन के लिए शुक्रवार को जोहानिसबर्ग पहुंचे और जैसी कि परंपरा है, वहां की सरकार ने हवाई अड्डे से लेकर होटल तक उनकी जमकर आगवानी की। भारतीय उच्चायोग के सहयोग से तैयार कई नृत्य टोलियों एवं भारतीय पारंपरिक गानों का आयोजन हुआ, जिसका पीएम मोदी ने खूब लुत्फ भी उठाया, लेकिन इन आयोजनों में भी कहीं न कहीं भारत के चुनावी माहौल के मिजाज के संकेत मिले। स्वागत में एक तरफ तो गिरमिटिया गीत गंगा मईया की प्रस्तुति हुई, जिसके बारे में पीएम ने स्वयं भोजपुरी में अपना संदेश इंटरनेट मीडिया पर लिखा। इसके साथ ही असम के नृत्य का भी आयोजन हुआ। अब बिहार के बाद अगले दो वर्षों के भीतर उत्तर प्रदेश और असम में भी विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। वैसे पीएम के विदेश दौरे में अक्सर विभिन्न राज्यों का रंग दिखता रहा है।

शादी होगी या चिंतन-बैठक

कृषि मंत्रालय में चिंतन बैठक को लेकर सर्वोच्च स्तर पर मंजूरी मिल गई थी। शहर से बाहर किसी अच्छे रमणीय स्थल पर देश के कृषि क्षेत्र के भविष्य पर मंथन करने को लेकर तैयारियां भी शुरू कर दी गई थीं, लेकिन शादियों के मौसम की वजह से तैयारियों पर पानी फिर रहा है। हुआ यह है कि जहां-जहां भी चिंतन बैठक के लिए अच्छे होटलों या आयोजन स्थलों का चयन किया गया, बाद में मालूम चला कि उन सभी में शादियों की बुकिंग है। अब चूंकि 60-80 शीर्ष अधिकारियों एवं दूसरे अधिकारियों को एक जगह ठहराने के लिए हर जगह इनका आयोजन भी नहीं किया जा सकता। यह सूचना दूसरे उन मंत्रालयों तक भी पहुंच गई है, जो चिंतन शिविर कराने की तैयारियां कर रहे थे। फिलहाल शादियों के बाद ही चिंतन बैठक आयोजित करने का फैसला किया गया है।

रिटर्न सुनामी

बिहार के चुनावी नतीजों ने राजनीतिक दलों को इस कदर दंग किया है कि चुप्पी छा गई है। विपक्षी दल सहम गए हैं कि यह 2014 की सुनामी की वापसी तो नहीं, जिसके बाद भाजपा हरियाणा, महाराष्ट्र फिर असम और त्रिपुरा जैसे राज्यों में भी सत्ता में आ गई थी। इन राज्यों में पहली बार भाजपा का मुख्यमंत्री बन गया था। आगे बंगाल समेत जिन राज्यों में चुनाव होने हैं खासकर वहां राजनीतिक दल परेशान हैं। एसआइआर को जनता का मुद्दा बनाने की कोशिश हुई थी, जिसे खारिज किया जा चुका है। जिस तरह का डाटा आया है और सुप्रीम कोर्ट में साक्ष्य पेश किए गए हैं, उसके बाद नैरेटिव के स्तर पर भी यह फुस्स हो गया है। प्रधानमंत्री मोदी को टारगेट करने की कोशिश हुई, अदाणी-अंबानी और आरएसएस का राग अलापा गया, वह भी खारिज हो गया तो फिर लड़ें कैसे। दिल्ली के बाद बिहार में भी भाजपा की ओर से जिस तरह का संकल्प पत्र लाया गया था, उसके बाद यह तो तय है कि आगामी चुनावों में भी विकास के साथ-साथ लालीपाप भी होगा। यही कारण है कि विपक्षी दलों में चुप्पी है, लेकिन यह लंबा चल गया तो फिर...।

लिमिट में सत्कार

हाल में मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेरी मंत्रालय में एक नया सर्कुलर आया है जिससे कुछ लोग रोष में हैं, क्योंकि पहली बार मंत्रालय ने आतिथ्य सत्कार के लिए एक लिमिट लगाने का काम किया है। अभी तक आतिथ्य सत्कार में उच्च पदों के लिए खर्च करने की कोई ऐसी सीमा नहीं थी और फिर संबंधित विभाग के अधिकारियों की मर्जी से खर्चे होते थे। इस बारे में कई बार सवाल भी आंतरिक तौर पर उठे थे। ऐसे में आतिथ्य की सीमा तय कर दी गई है। संयुक्त सचिव, अतिरिक्त सचिव या इस तरह के पदों पर बैठे व्यक्ति आतिथ्य पर सिर्फ 12 हजार रुपये ही खर्च कर सकेंगे।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****

300 करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार किया कन्नड़ फिल्म कांतारा ने, जबकि हिंदी फिल्मों का कारोबार आजकल 100 या 200 करोड़ से अधिक बहुत ही मुश्किल से हो पाता है।

आजकल

हिंदी फिल्मों से छूटता संवेदना का सिरा

अनंत विजय
anant@nda.jagran.com

हिंदी में यदि कोई फिल्म आजकल 100 या 200 करोड़ रुपये का कारोबार कर लेती है तो उसे बहुत ही सफल माना जाता है। वहीं, कन्नड़ फिल्म कांतारा ने केवल कन्नड़ दर्शकों के बीच 300 करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार किया। जबकि कन्नड़ की तुलना में हिंदी फिल्मों के दर्शकों की संख्या कई गुना अधिक है। ऐसे में हिंदी फिल्मकारों को यह सोचना होगा कि यदि अच्छी फिल्म बनेगी तो कितने सौ करोड़ पार कर सकेगी। संभवत: हिंदी फिल्मों में लोक की संवेदना से जुड़े हुए तथ्य अब पीछे छूटते जा रहे हैं

जागरण फिल्म फेस्टिवल के दौरान मंच पर अभिनेत्री खुशबू सुंदर, जागरण प्रकाशन लिमिटेड में ब्रांड के सीनियर वीपी बसंत राठौर, निर्माता-निर्देशक प्रियदर्शन और निर्माता किरन शांताराम (बाएं से दाएं)। जागरण

पिछले दिनों मुंबई में जागरण फिल्म फेस्टिवल, 2025 का समापन हुआ। सितंबर के पहले सप्ताह में दिल्ली में आरंभ हुआ जागरण फिल्म फेस्टिवल 14 शहरों से होता हुआ मुंबई पहुंचा। मुंबई में फिल्म फेस्टिवल के अंतिम दिन पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम था। प्रख्यात निर्देशक प्रियदर्शन को जागरण फिल्म फेस्टिवल में जागरण अचीवर्स अवार्ड से सम्मानित किया गया। प्रियदर्शन ने बताया कि उनके पिता लाइब्रेरियन थे, इस कारण उनको पुस्तकों तक पहुंचने की सुविधा थी। घर पर भी ढेर सारी पुस्तकें थीं। उन्हें बचपन से अलग-अलग विधाओं की पुस्तकें पढ़ने की आदत हो गई। किशोरावस्था में उन्होंने कामिक्स भी खूब पढ़ा। इससे उनको फ्रेम और अभिव्यक्ति की समझ बनी। प्रियदर्शन ने कहा कि उनका अध्ययन उनके निर्देशक होने की राह में सहायक रहा। आगे बताया कि पुस्तकों में पढ़ी गई घटना किसी फिल्म की शूटिंग के दौरान याद आ जाती है जिससे फिल्मों के दृश्यों को इंप्रोवाइज करने में मदद मिलती है। प्रियदर्शन ने विरासत, हेराफेरी जैसी कई सफल हिंदी फिल्में बनाई हैं। इसके अलावा, अंग्रेजी, मराठी, मलयालम, तमिल और तेलुगु में उन्होंने बेहतर फिल्में बनाई हैं। पुरस्कार वितरण समारोह समाप्त होने के बाद फिल्मों से जुड़े लोगों से बात होने लगी। इसी दौरान फिल्म ओ माय गाड- 2 के निर्देशक अमित राय वहां आए। उनसे मैंने प्रियदर्शन की पुस्तक वाली बात बताई। वो मुस्कुराए और बोले मेरे पास भी एक अनुभव है, सुनाता हूं।

अमित राय ने जो सुनाया वह बेहद चिंताजनक बात थी। उन्होंने बताया कि एक दिन किसी फिल्म पर चर्चा हो रही थी। वहां एक निर्देशक भी थे। अपेक्षाकृत युवा हैं, लेकिन उनकी दो-तीन फिल्में सफल हो चुकी हैं। कहानियों पर बात होने लगी। एक उत्साही लेखक ने कहा कि उसने कहानी पर स्क्रिप्ट डेवलप की है और वह सुनाना चाहता है। निर्देशक महोदय ने सुनने की स्वीकृति दी। दो दिन बाद मिलना तय हुआ। तय समय पर स्क्रिप्ट लेकर लेखक महोदय वहां पहुंचे। दो घंटे की बैठक हुई। स्क्रिप्ट और कहानी सुनकर निर्देशक महोदय बेहद खुश हो गए। उन्होंने जानना चाहा कि यह किसकी कहानी है। स्क्रिप्ट लेखक ने बहुत उत्साह के साथ बताया कि कहानी प्रेमचंद की है। निर्देशक महोदय ने फौरन कहा कि प्रेमचंद को फौरन टिकट भिजवाइए और मुंबई बुलाकर इस कहानी के अधिकार उनसे खरीद लिए जाएं। कहानी के अधिकार के एवज में उन्हें 20-25 हजार रुपये भी दिए जा सकते हैं। निर्देशक महोदय की ये बातें सुनकर बेचारे स्क्रिप्ट लेखक को झटका लगा। उन्होंने कहा कि सर प्रेमचंद जी अब इस दुनिया में नहीं हैं और उनकी कहानियां कापीराइट मुक्त हो चुकी हैं। निर्देशक महोदय यह सुनकर प्रसन्न हुए और बोले तब तो कोई झंझट भी नहीं है। इस पर काम आरंभ किया जाए।

उस समय तो अमित राय की बातें सुनकर मुझे हंसी आई। हम सबने इस प्रसंग को मजाक के तौर पर लिया। लेकिन देर रात जब मैं होटल लौट रहा था, तब अमित को फोन करके पूछा कि क्या सचमुच ऐसा घटित हुआ था। अमित ने बताया कि हां, यह बिल्कुल सच्ची घटना है। उसके बाद मैं विचार करने लगा कि हिंदी फिल्मों का निर्देशक प्रेमचंद को नहीं जानता। जो हिंदी प्रेमचंद के नाम पर गर्व करती है, जो हिंदी के शीर्षस्थ लेखक हैं और जिनकी कितनी रचनाओं पर फिल्में बनी हैं, उनको एक सफल निर्देशक नहीं जानता। यह बहुत ही अफसोस की बात है।

आज हिंदी फिल्म इंडस्ट्री की बात करें तो वहां हिंदी जानने वाले कम होते जा रहे हैं। हिंदी की परंपरा को जानने वाले तो और भी कम। आज हिंदी फिल्मों के गीतों के शब्द देखें तो लगता है कि युवा गीतकारों के शब्द भंडार कितने विपन्न हैं। हिंदी पट्टी के शब्दों से उनका परिचय ही नहीं है। वो शहरों में बोली जाने वाली हिंदी और उन्हीं शब्दों के आधार पर लिख देते हैं। यह अकारण नहीं है कि समीर अंजान के गीत पूरे भारत में पसंद किए जाते हैं। समीर वाराणसी के रहने वाले हैं और नियमित अंतराल पर काशी या हिंदी पट्टी के साहित्य समारोह से लेकर अन्य कार्यक्रमों में जाते रहते हैं। एक बातचीत में उन्होंने बताया था कि लोगों से मिलने-जुलने से और उनको सुनने से शब्द संपदा समृद्ध होती है। इससे गीत लिखने में मदद मिलती है।

हिंदी फिल्मों के एक सुपरस्टार के बारे में भी एक किस्सा मुंबई में प्रचलित है। कहा जाता है कि उनके पास तीन-चार सौ चुटकुलों का एक संग्रह है। वह अपनी हर फिल्म में चाहते हैं कि उनके चुटकुला बैंक से कुछ चुटकुले निकालकर संवाद में जोड़ दिए जाएं। उनका इस तरह का प्रयोग एक-दो फिल्मों में सफल रहा है। नतीजा यह कि अब वह अपनी हर फिल्म में चुटकुला बैंक का उपयोग करना चाहते हैं। आज हिंदी फिल्मों के संकट के मूल में यही प्रवृत्ति है। हिंदी पट्टी की जो संवेदना है, उसको मुंबई में रहने वाले हिंदी के निर्देशक न तो पकड़ पा रहे हैं और न ही उसको अपनी फिल्मों में चित्रित कर पा रहे हैं। भारत की कहानियों की और भारतीय समाज की ओर जब फिल्में लौटती हैं तो दर्शकों को पसंद आती हैं। दर्शकों को फिल्म पसंद आती है तो वह अच्छा बिजनेस भी करती है। कोई हिंदी फिल्म 100 करोड़ का बिजनेस करती है तो शोर मचा दिया जाता है कि फिल्म ने 100 या 200 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया। उनको यह समझ क्यों नहीं आता कि कन्नड़ फिल्म कांतारा ने केवल कन्नड़ दर्शकों के बीच 300 करोड़ का कारोबार किया। कन्नड़ की तुलना में हिंदी फिल्मों के दर्शकों की संख्या कई गुना अधिक है। अगर अच्छी फिल्म बनेगी तो कितने सौ करोड़ पार कर सकेगी। फिल्मकारों को यह सोचना होगा।

ऐसे कई उदाहरण हैं जहां हिंदी फिल्मों में हिंदी के दर्शकों की संवेदना को छुआ नहीं गया और दर्शकों ने उसको नकार दिया। पौराणिक पात्रों पर फिल्में बनाने वालों से भी इस तरह की चूक होती रही है। कई बार तो आधुनिकता के चक्कर में पड़कर पात्रों से जो संवाद कहलवाए जाते हैं, वह भी दर्शकों के गले नहीं उतरते हैं। हिंदी का लोक बहुत संवेदनशील है। जब उसकी संवेदना से छेड़छाड़ की जाती है तो नकार का सामना करना पड़ता है। राज कपूर यूं ही नहीं कहा करते थे कि हिंदी फिल्मों की कहानियां प्रभु राम के चरित से या रामकथा से प्रेरित होती हैं। एक नायक है, एक नायिका है और खलनायक आ गया। अब यह लेखक के ऊपर है कि वह रामकथा को क्या स्वरूप प्रदान करता है और निर्देशक उसको किस तरह से ट्रीट करता है। जो भी लेखक या निर्देशक रामकथा के अवयवों को पकड़ लेता है, उसकी फिल्में बेहद सफल हो जाती हैं। कारोबार भी अच्छा होता है। लेकिन जो निर्देशक पहले से ही 100 या 200 करोड़ का लक्ष्य लेकर चलता है, वह कहानी में मसाला डालने के चक्कर में राह से भटक जाता है और फिल्म असफल हो जाती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि फिल्मों के लेखक और निर्देशक भारतीय मानस को समझें और उसकी संवेदना की धरातल पर फिल्मों का निर्माण करें। बेसिर-पैर की कहानी एक-दो बार करोड़ों कमा सकती है, लेकिन यह दीर्घकालीन सफलता का सूत्र बिल्कुल नहीं है।

स्मरण

धर्म रक्षा की विलक्षण प्रतिबद्धता

डा. आशीष त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारत विश्व की महानतम संस्कृति और सभ्यता का देश है। भारतीय गुरु परंपरा ने देश और समाज के अनेक स्तंभों को गढ़ा है। इसी महान गुरु परंपरा के वाहक हैं गुरु तेग बहादुर। बाल्यकाल से ही वह अति मेधावी, साहसी और धार्मिक व्यक्ति थे। सिख धर्म से जुड़ी ऐतिहासिक पुस्तकों के अनुसार सिखों के आठवें गुरु हरकृष्ण साहिब के आकस्मिक निधन के पश्चात ई. 1665 में गुरु तेग बहादुर साहिब ने अमृतसर के निकट के एक कस्बे बकाला में गुरु गद्दी पर आसीन हुए और सिख परंपरा के नौवें गुरु बने।

गुरु तेग बहादुर ने पूर्ववर्ती गुरुओं के जीवन चरित से प्रेरणा लेकर और उनके द्वारा बताए हुए जीवन मूल्यों पर चलकर सिख परंपरा का सच्चा प्रतिनिधित्व किया। वे अपने वचनों में सदा ही लोक कल्याण और धर्मनिष्ठ जीवन को बल देते हैं। उन्होंने स्वयं के जीवन में त्याग और बलिदान का सच्चे अर्थों में उदाहरण प्रस्तुत किया। 17वीं सदी में मुगलों के काल में जब औरंगजेब ने कट्टरता और बर्बरता से कश्मीर के हिंदुओं का जबरन धर्म परिवर्तन कराने का प्रयास किया तो यहां के निवासी पंडित कृपा राम के निर्देशन में कश्मीरी पंडितों ने पंजाब के आनंदपुर साहिब पहुंचकर गुरु तेग बहादुर साहिब की शरण ली और उनसे अपनी पीड़ा व्यक्त की।

'द प्रोफेट-मार्टियर गुरु तेग बहादुर' नामक पुस्तक में लेखक हरबंस सिंह गुरु के शहादत दिवस की घटना का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि औरंगजेब ने गुरु को इस्लाम कबूल करने या चमत्कार दिखाने को कहा। लेकिन गुरु तेग बहादुर ने इन्कार कर दिया। अंत में शीश कटाकर 24 नवंबर, 1675 को उन्हें अपना बलिदान देना पड़ा। उनके इसी बलिदान स्थल पर आज गुरुद्वारा शीशगंज बना हुआ है। गुरु तेग बहादुर ने कभी भी परिस्थितियों के साथ कोई समझौता नहीं किया और अपने स्वाभिमान व धर्म की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। उनका जीवन त्याग, संघर्ष और बलिदान का एक अनुपम उदाहरण है।

उनके वचनों में भी संदेश छुपा हुआ है। डा. महीप सिंह अपनी

गुरु तेग बहादुर

पुस्तक 'लोकप्रिय संत-भक्त-कवि गुरु तेग बहादुर' में गुरु की रचनाओं का उल्लेख कर इन्हें 'अंतरात्मा के जीवंत प्रमाण' के रूप प्रस्तुत करते हैं, गुरु की रचनाएं उनके व्यक्तित्व और विशेषताओं को व्यक्त करती हैं।

एक संत के साथ वह एक समाज सुधारक भी थे। उन्होंने समाज में फैले अंधविश्वास और कुरीतियों को दूर करने के लिए अथक प्रयास किए। उनकी शिक्षा हमें बंधुत्व और एकता का संदेश देती है। हम उनके बलिदान दिवस के 350 वर्ष पूर्ण होने पर उनको स्मरण करें और उनके बताए हुए आदर्शों को जीवन में आत्मसात करें। यही उन्हें सच्चे अर्थों में हमारी श्रद्धांजलि होगी।

पोस्ट

विपक्षी दल जब तक नकारात्मक राजनीति करते रहेंगे, तब तक देश की जनता बिहार जैसा परिणाम देती रहेगी।
डा. अवनेंद्र कुमार राय@avanindra43

बंगाल में बांग्लादेश से सटी सीमा पर वतन वापसी करते घुसपैठियों की भीड़ बता रही है कि बंगाल में एसआइआर बहुत पहले हो जाना चाहिए था। अमन चोपड़ा@AmanChopra_

इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया के बीच टेस्ट दो दिन में खत्म हो गया। बैजबाल खेलने तो इंग्लैंड चला था, लेकिन आस्ट्रेलिया उसे अमल में ले आया। ट्रेविस हेड ने अकेले ही मैच का रुख पलट दिया।
सुशील दोशी@RealSushilDoshi

दुबई एयर शो के दौरान जान गंवाने वाले विंग कमांडर नमांश स्याल ने देश की सेवा के मिशन में अंतिम समय तक उड़ान भरी और हमें याद दिलाया कि यह समर्पण सिर्फ वायुसेना के एक पायलट का नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की उम्मीदों, भरोसे और शौर्य की पराकाष्ठा है। उनकी शानदार विरासत जीवित है, आकाश की ऊंचाइयों में, भारत माता की रक्षा में।
आदित्य राज कौल@AdityaRajKaul

मैं कभी तेजस का मुरीद नहीं रहा, लेकिन हवाई करतब दिखाने के दौरान अगर हादसा हो गया तो इससे विमान और पायलट की क्षमताओं का आकलन करना उचित नहीं होगा। ऐसी घटनाएं घटित होती रहती हैं।
अभिजीत अय्यर मित्रा @Iyervval

जागरण जनमत कल का परिणाम

क्या तेजस के दुर्घटनाग्रस्त होने से स्वदेशी लड़ाकू विमान योजना प्रभावित होगी?

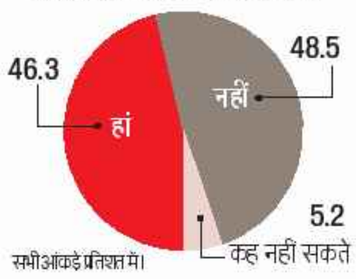

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल
क्या नए श्रम सुधारों से अर्थव्यवस्था को लाभ पहुंचेगा?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

कुछ तो गड़बड़ है दया करो ठीक से जांच,
क्यों विमान इस देश के पकड़ रहे हैं आंच।
पकड़ रहे हैं आंच लग रही साजिश गहरी,
है मसला गंभीर गिरें यदि अपने प्रहरी।
जो दुश्मन प्रत्यक्ष नहीं पाता हमसे लड़,
कर सकता है दूर बैठकर कुछ तो गड़बड़!
- ओमप्रकाश तिवारी

रचनाकर्म

खून जमा देगी खुशी की यह तलाश

मनीष त्रिपाठी

रिश्तों में रिसते जहर और खुशी के रास्ते में आने वाले हर व्यक्ति को ठिकाने लगा देने की सनक को रूपायित किया है दक्षिण कोरियाई लेखिका यू-जियोंग जियोंग ने अपने इस उपन्यास के माध्यम से...

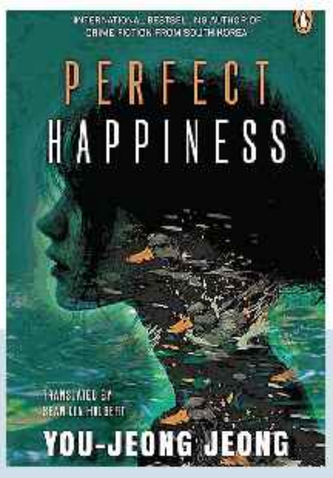

पुस्तक : परफेक्ट हैप्पीनेस
लेखिका : यू-जियोंग जियोंग
प्रकाशक : पेंगुइन रैंडम हाउस
मूल्य : 599 रुपये

कुछ पाकर तो सभी खुश होते हैं, परंतु तब क्या होगा जब किसी के लिए 'खुशी' का मतलब कुछ खो देना हो। न रिश्ते-न मकसद, बस हर उस चीज को खत्म कर देना, जो नाखुशी ला सकती हो और तब तक ऐसी चीजों, यादों अथवा जिंदगियों को मिटाते रहना, जब तक अपनी जिंदगी हमेशा के लिए खुशनुमा न हो जाए! रोंगटे खड़े कर देने वाले कोरियाई थ्रिलर उपन्यास 'परफेक्ट हैप्पीनेस' की कसावट इसी ताने-बाने पर है। पुरानी पीढ़ी और जेन-जी दोनों के बीच समान रूप से लोकप्रिय लेखिका यू-जियोंग जियोंग को दक्षिण कोरिया का स्टीफन किंग कहा जाता है, किंतु उनका यह नया उपन्यास स्टीफन के सर्द उपन्यासों से कहीं अधिक खून जमा देने वाला है।

यू-जियोंग जियोंग की कलम पाठकों के दिलो-दिमाग में बने साइकोलाजिकल स्टीरियोटाइप्स को तोड़ते हुए खतरनाक ढंग से खेलती है। उनके पूर्व प्रकाशित उपन्यास 'द गुड सन' और 'सेवन ईयर्स आफ डार्कनेस' अपने अंग्रेजी अनुवाद के साथ दुनिया भर में छा गए। यह कृति भी परिवार के अंदर चल रहे द्वंद्व और रिश्तों के उलझे धागों के बीच जमीन पाती तो है, मगर दलदली। एक मंगेतर, जिसके लिए खुशी का मतलब इसकी राह में आने वाली हर चीज का खात्मा है। एक बहन, जो प्यार को सबसे धारदार हथियार बनाने में विश्वास रखती है। एक मां, जिसके लिए संतान के सुख का अर्थ है बेटी की घिघियाती हुई घुटी-घुटी सी आवाज और ताज्जुब यह कि उपन्यास के पन्ने पलटते हुए यह तीनों ही चेहरे एक-दूसरे में गड्ड-मड्ड होते दिखते हैं।

उपन्यास के केंद्र में है युना शिन, जिसकी पूर्णता के प्रति आसक्ति अंततः ठंडी-खतरनाक हिंसा में बदल जाती है। लेखिका ने इस पात्र को इतनी शिद्दत से गढ़ा है कि इसका मौन आपको उपन्यास के अन्य पात्रों, जिनकी जिंदगी पर वह असर डाल रही है, के संवादों से सुनाई देता है। दूसरा पति, जो समझाइश का अंजाम मालूम होने की वजह से उसकी बातों से कभी इन्कार नहीं करता, बड़ी बहन, जिसने उसे बड़ा और जिद्दी बनते हुए देखा है, बेटी, जो अपनी मां के साए में पीपल के तले पौधे जैसी परवरिश में है। यह युना शिन का अजब यूएसपी है कि वह जहां भी जाती है, कोई असामान्य-सी मौत होती है। चाहे वह उसका प्रेमी हो, जिसने अचानक उसे छोड़ दिया था, उसका पिता हो, जिसने उसकी चोरी का पता चलने पर अपनी कंपनी से निकाल दिया था; या उसका सौतेला बेटा, जिसका अस्तित्व युना के 'खुशहाल परिवार' की कल्पना में रोड़ा बनता है।

शुरुआत में इन मौतों में कोई करीबी संबंध नहीं दिखता, मगर धीरे-धीरे शक, साजिश और भय की परतें गहरी होने लगती हैं। रिश्तों के इस रोलरकोस्टर में एक के बाद एक राज खुलते हैं। मूलकथा में इतनी सफाई से उपकहानियां गूंथने की यह कला हर-एक को हासिल नहीं, मगर सबसे रोमांचक मोड़ तो यह है कि युना की सनक के शिकार लोग उसे छोड़ देने या सबक सिखाने की जगह उससे बंधे हुए क्यों हैं? यह लालच है, अपराधबोध या अपरिपक्व परवरिश की पुरानी फसल, जिसे काटने के लिए शिन परिवार अभिशप्त है!

वर्ष 2016 में प्रकाशित अपने पहले उपन्यास 'द गुड सन' में यू-जियोंग जियोंग ने उस बेटे की कहानी सुनाई थी, जो अपनी मां की हत्या के असली कारण का पता लगाने की कोशिश कर रहा है, दूसरा उपन्यास 'सेवन ईयर्स आफ डार्कनेस' एक सामुदायिक हिंसा की घटना की जटिल पड़ताल थी तो अब यह तीसरा उपन्यास रिश्तों से रिसते विष की तसल्ली से पढ़ने वाली कहानी है। कोरिया की 'क्राइम फिक्शन क्वीन' कहलाने वाली इस बेस्टसेलिंग लेखिका की कलम खतरनाक खेल खेलती है, सुकून से पढ़ेंगे-तभी पाएंगे 'परफेक्ट हैप्पीनेस'!

लोकतंत्र में राजनीतिक व्यवहार

कन्हैया झा

तीसरी दुनिया में शासन, लोकप्रिय संप्रभुता, लोकतंत्र और उससे शासित होने वाली जनता के बीच कई प्रकार के वैध या अवैध विरोधाभास पनप रहे हैं। यह पुस्तक इन सबकी पड़ताल करते हुए उत्तर-औपनिवेशिक समाज के संदर्भ में शासन (राज्य), लोकतंत्र और शासित वर्ग के बीच राजनीतिक व्यावहारिकता की जद्दोजहद का विश्लेषण करती है। पार्थ चटर्जी पश्चिमी समाज के अनुभव और मूल्यों पर आधारित राजनीतिक सिद्धांतों की सार्वभौमिकता को नकारते हैं। उनके अनुसार, पश्चिमी सिद्धांत के लिए संपूर्ण समाज ही नागरिक समाज है। लेकिन भारत के संदर्भ में समाज का एक बड़ा हिस्सा आधुनिकता और नागरिकता के दायरे से बाहर है।

पुस्तक के पहले भाग में व्याख्या की गई है कि तीसरी दुनिया की झुग्गी बस्तियों, सार्वजनिक स्थानों, फुटपाथों और सड़कों पर की जाने वाली लोकप्रिय राजनीति ही प्रायः वह जगह है, जहां राजनीतिक आधुनिकता का निर्माण हो रहा है। इस 'लोकप्रिय राजनीति' ने राज्य को जनसंख्या समूहों पर शासन करने की नई तकनीकों के विकास करने का मौका दिया है। वहीं पुस्तक में यह भी दर्शाया गया है कि लोकतंत्र अब लोगों की, लोगों द्वारा और लोगों के लिए सरकार नहीं रह गया है, बल्कि शासितों की राजनीति बन गया है।

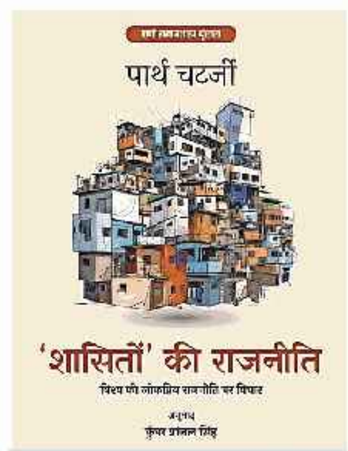

पुस्तक : 'शासितों' की राजनीति : विश्व की लोकप्रिय राजनीति पर विचार
लेखक : पार्थ चटर्जी
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन
मूल्य : 695 रुपये

दूसरे भाग में, वैश्वीकरण के संदर्भ में 11 सितंबर, 2001 की आतंकी घटना को आधार बनाकर, संप्रभुता और लोकप्रिय राजनीति के बदलते स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। तीसरी दुनिया में भी इस घटना का असर साफ तौर पर देखा गया। पुस्तक का अनुवाद सहज प्रतीत हो रहा है। अनुवादक ने समाज-विज्ञान की जटिल भाषा को स्पष्ट बनाने के साथ ही उसे एक नए रूप, नए मुहावरे और नई संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास भी अत्यंत रोचक ढंग से किया है।

रेडियो और दूरदर्शन की कहानियां

यतीन्द्र मिश्र

संगीता अग्रवाल की पुस्तक 'दूरदर्शन : आधी आबादी की सशक्त गाथा' आकाशवाणी और दूरदर्शन की कुछ प्रमुख महिला समाचार उद्घोषिकाओं के माध्यम से देश के पहले और सबसे बड़े लोक प्रसारक माध्यम आल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन के विकास यात्रा को सुंदर ढंग से प्रस्तुत करती है। तीन खंडों- 'आकाशवाणी', 'दूरदर्शन' और 'डीडी न्यूज' में विभक्त यह कृति आकाशवाणी के साथ महात्मा गांधी के पहले संवाद से शुरू होती है और इन महिलाओं के योगदान के बहाने इन दृश्य-श्रव्य माध्यमों की यात्रा का संक्षिप्त रूप से दस्तावेज बनाती है। गांधी जी का आकाशवाणी में पहला संबोधन 12 नवंबर, 1947 को हुआ, जिस दिन दीपावली थी। गांधी जी के इस संबोधन के बाद बिड़ला भवन से गांधी जी की सभाओं का प्रसारण शुरू किया गया। वहीं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जनता तक अपनी बात को पहुंचाने के लिए आकाशवाणी को ही चुना। 'मन की बात' मासिक कार्यक्रम है और देश भर में लोकप्रिय है। यहां कई समाचार वाचिकाओं का स्मरण किया गया है, जिनमें एक चंद्रिका जोशी भी हैं, जो लगभग 35 वर्षों तक लगातार सुबह छह बजे देश और दुनिया का समाचार दिया करती थीं।

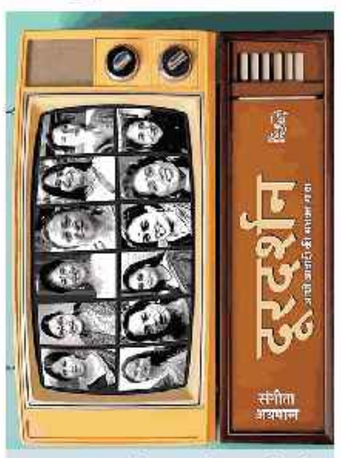

पुस्तक : दूरदर्शन : आधी आबादी की सशक्त गाथा
लेखिका : संगीता अग्रवाल
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन
मूल्य : 495 रुपये

दूरदर्शन की यात्रा में संगीता गोयल, कंचन प्रसाद, अर्चना गुप्ता, सलमा सुल्तान, आर जयश्री पुरी के माध्यम से इन महिलाओं के काम का संक्षिप्त आकलन मनोरंजक है। वरिष्ठ खेल पत्रकार सुचित्रा भारद्वाज की बात हो या डी.डी. न्यूज एंकर ममता चोपड़ा की कहानी, फाल्गुनी हिरेन, श्वेता सिंह, बीना सिंह राजपूत, मुनमुन भट्टाचार्य, प्रिया कुमार, मेघना देव आदि अनगिनत नाम हैं, जिन्होंने बाकायदा टेलीविजन माध्यम के लिए गहरे सामाजिक, सांस्कृतिक दायित्वों को न सिर्फ निभाया, बल्कि मीडिया जगत को गरिमा भी प्रदान की।

सलमा सुल्तान, जिनकी लोकप्रियता असंदिग्ध रही, ने भारतीय संस्कृति और सभ्यता के साथ खबरों को एक शास्त्रीय गरिमा दी। एक समाचार वाचक को किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, किसी ब्रेकिंग न्यूज को संभालकर परोसने की कवायद, प्रतिपल बदलते घटनाक्रमों के बीच संयत बने रहने की मीडिया की भूमिका और उसके अंतर्द्वंद्वों और ऊहापोहों को समझने के लिए भी एक पठनीय और जरूरी किताब।

मैं तुम्हारी रोशनी से ही चमकती हूं

अपनी पत्नी एलिस फैज को लिखे फैज अहमद फैज के पत्रों की अनूठी किताब है- 'सुखन तुम्हारे', जिसे दो इंकलाबी दिलों की खत-ओ-किताबत कहा गया है। दरअसल वर्ष 1951 में रावलपिंडी साजिश केस के तहत उर्दू के मशहूर शायर फैज अहमद फैज के घर छापा पड़ा और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। यह वाकया जिस समय हुआ, उस समय उनकी पत्नी एलिस और उनकी दो पुत्रियां लाहौर में ही घर पर अकेली रह गई थीं। इस हादसे ने एलिस और फैज दोनों को ही अपनी तकलीफों को समझने की जो कैफियत सौंपी, उसके अंतर्गत इन खतों के लिखे जाने की शुरुआत हुई। शायद इन्हीं पत्रों के कारण एलिस और उनके शायर पति को हिम्मत और बहादुरी से उस मुसीबत से निकलने में मदद मिली।

यह एक ऐसी घटना थी, जिसने एक बिल्कुल दूसरे ही रंग में, कैद में जिंदगी बसर कर रहे फैज को अपनी पत्नी से स्वतंत्र और शायराना ढंग से नजदीक आने के लिए उस जज्बे को जन्म दिया, जिनके अंदर की बात इन चिट्ठियों के हवाले से आज ऐतिहासिक और मानीखेज बन चुकी है। स्वयं इसे एक जिल्द में प्रकाशित होने की बात को फैज ने यह कहकर स्वीकारा कि यह कोई साहित्यिक रचना नहीं है, निजी खत हैं, जो बगैर सोचे-समझे लिखे गए। इनसे किसी व्यवस्थित और संजीदा बहस की तलाश बेकार है। सिर्फ इतना है कि जेलखानों में वक्त काटने के कम जरियों में से एक जरिया खतो-किताबत भी है।

पुस्तक : सुखन तुम्हारे: दो इंकलाबी दिलों की खत-ओ-किताबत
लेखक : एलिस फैज एवं फैज अहमद फैज
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन
मूल्य : 550 रुपये

मिर्जा जफरुल हसन, जिनके कारण ये पत्र प्रकाशित हुए और पहली बार दुनिया के सामने आए, उन्होंने इसकी भूमिका लिखते हुए यह कहा था कि जिस तरह यह वजूद में आया, इसे मैं फैज की जिंदगी का हिस्सा समझता हूं और यह भी कि इन चिट्ठियों में ढेरों ऐसे विषय शामिल हैं, जिनमें मुहब्बत, जिंदगी, शायरी, बागवानी, अध्ययन, वक्त, शिकायतें, घमंड, कारोबार और न जाने कितनी चीजें शामिल हैं। 1951 से शुरू होकर 1955 के मार्च तक के कालखंड में ये चिट्ठियां समाई हुई हैं। इन चिट्ठियों से यह बात उभरती है कि दोनों ही लोगों ने किस तरह अपने दुख को समेटकर सीधे सत्ता से टकरा जाने का हौसला दिखाया था। एक अद्भुत आत्मीय, ऐतिहासिक दस्तावेज, जो हुकूमत की तकलीफों से बेनियाज होकर फैज को एक मुकम्मल क्रांतिकारी शायर बनाता है। फैज की यह पंक्ति आज भी अपना सिर उठाए खड़ी है- 'मता ए लौह ओ कलम छिन गई तो क्या गम है?' उस दौर को समझने की एक बेहतरीन किताब।

****

संपादकीय जागरण

रविवार, 23 नवंबर, 2025: मार्गशीर्ष शुक्ल - 3 वि. 2082

समय का सदुपयोग ही सफलता का सबसे बड़ा सूत्र है

बेलगाम होता पाकिस्तान

दिल्ली क्राइम ब्रांच की ओर से पाकिस्तान से जुड़े हथियार तस्करी रैकेट का भंडाफोड़ किए जाने पर हैरानी नहीं। पाकिस्तान यह काम पहले से कर रहा है। अभी तक वह ड्रोन के जरिये पंजाब में मादक पदार्थों के साथ जो हथियार भेजता था, वे खालिस्तान समर्थक आतंकियों के लिए होते थे। अब पता चल रहा है कि वह गैंगस्टरों को भी हथियार भेज रहा है। इसका निष्कर्ष यही है कि पाकिस्तान भारत को अशांत और अस्थिर करने का काम कहीं अधिक बड़े पैमाने पर हरसंभव तरीके से कर रहा है। वह केवल नशीले पदार्थ और हथियार ही नहीं भेज रहा है, बल्कि मुस्लिम युवकों को मजहबी कट्टरता का पाठ पढ़ाकर उन्हें जिहादी भी बना रहा है। यह एक तथ्य है कि दिल्ली में लाल किले के निकट आतंकी हमले को अंजाम देने वाले फरीदाबाद माड्यूल के तार पाकिस्तान से जुड़ रहे हैं। इसके पहले अनेक ऐसे आतंकी पकड़े जा चुके हैं, जो पाकिस्तान में पल रहे आतंकवादी संगठन लश्कर या जैश के इशारे पर जिहादी गतिविधियों में लिप्त थे। इसकी भी अनदेखी न की जाए कि सीमा पार से आतंकियों की घुसपैठ की कोशिश होती ही रहती है। इसका सीधा मतलब है कि आपरेशन सिंदूर से पस्त पड़े पाकिस्तान का दुस्साहस फिर से चरम पर है। इसका कारण केवल जिहादी सोच वाले जनरल आसिम मुनीर का निरंकुश हो जाना ही नहीं, अमेरिकी राष्ट्रपति की ओर से पाकिस्तान की पीठ पर हाथ रख देना भी है।

अब इसमें कोई संदेह नहीं कि पाकिस्तान के बेलगाम होते भारत विरोधी रवैये के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति सीधे तौर पर जिम्मेदार हैं। वे उसी पाकिस्तान की वाहवाही करने का कोई अवसर नहीं छोड़ रहे हैं, जिसे अपने पिछले कार्यकाल में खुद उन्होंने धोखेबाज और आतंकियों को शरण देने वाला बताया था। यदि इस कार्यकाल में अचानक उनका हृदय परिवर्तन हो गया तो इसका कारण उनके अपने निजी स्वार्थ हैं। वे अमेरिका के बजाय अपने निजी हितों को प्राथमिकता दे रहे हैं। ट्रंप अपने संकीर्ण स्वार्थों को पूरा करने के लोभ के अलावा इसलिए भी पाकिस्तान के चंगुल में फंस रहे हैं, क्योंकि उन्हें अपनी झूठी प्रशंसा बहुत भाती है और पाकिस्तानी इसमें माहिर हैं। आतंकवाद को पालने-पोसने और नशीले पदार्थों की तस्करी को बढ़ावा देने वाले पाकिस्तान की तरफदारी कर अमेरिकी राष्ट्रपति केवल भारत के लिए ही संकट नहीं पैदा कर रहे हैं, बल्कि दक्षिण एशिया की शांति को भी खतरे में डाल रहे हैं। भारत के लिए आवश्यक केवल यह नहीं कि वह पाकिस्तान के आतंकी चेहरे को अमेरिका के समक्ष उजागर करता रहे, बल्कि पाकिस्तानी सेना, खुफिया एजेंसी आइएसआइ और उनकी ओर से पाले जा रहे आतंकी संगठनों पर दबाव बनाने और साथ ही उन्हें निशाने पर लेने की तैयारी भी करता रहे।

गंभीरता जरूरी

यमुना की सफाई में हो रही लापरवाही पर हाई कोर्ट ने चिंता जताई है। कोर्ट की चिंता सही है, क्योंकि पिछले करीब 40 वर्षों से नदी की सफाई को लेकर सिर्फ दावे किए जा रहे हैं। तीन यमुना एक्शन प्लान तैयार किए गए। करोड़ों रुपये खर्च करने के बाद भी स्थिति में सुधार नहीं है। अधिकारियों की लापरवाही के कारण नदी साफ होने की जगह और प्रदूषित हो गई है। सफाई के लिए बजट भी आवंटित होता है, लेकिन जमीन पर गंभीरता के साथ काम नहीं हो रहा। इसे लेकर एनजीटी और दिल्ली हाई कोर्ट द्वारा दिए गए आदेश का भी सही तरह से पालन नहीं किया जाता है।

दिल्ली के 22 किलोमीटर क्षेत्र में यमुना सबसे अधिक प्रदूषित है, इस स्थिति में सुधार करने की आवश्यकता है

न तो सीवेज उपचार संयंत्रों (एसटीपी) की दशा सुधारने के लिए वर्षों तक कोई ठोस कदम उठाया गया और न इसके शोधित पानी के सदुपयोग पर ध्यान है। 37 एसटीपी में से कई मानक के अनुरूप काम नहीं कर रहे हैं। दिल्ली और पड़ोसी राज्यों के नालों का गंदा पानी और औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला अपशिष्ट सीधे नदी में गिर रहा है। यही कारण है कि दिल्ली के 22 किलोमीटर क्षेत्र में यमुना सबसे अधिक प्रदूषित है। इस स्थिति में सुधार करने की आवश्यकता है। केंद्र सरकार के सहयोग से दिल्ली सरकार ने यमुना की सफाई को लेकर विस्तृत कार्य योजना तैयार की है। अगले तीन वर्षों में इसे स्वच्छ व अविरल बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संबंधित अधिकारियों की जवाबदेही तय करनी होगी।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या तेजस के दुर्घटनाग्रस्त होने से स्वदेशी लड़ाकू विमान योजना प्रभावित होगी?

आज का सवाल

क्या नए श्रम सुधारों से अर्थव्यवस्था को लाभ पहुंचेगा?

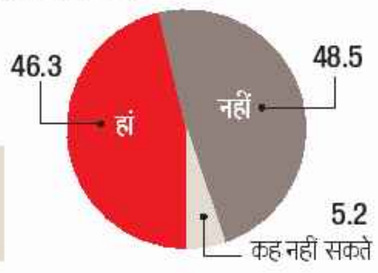

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

झूठे आरोपों पर टिका विपक्ष

संजय गुप्त

विपक्ष को भाजपा की राजनीतिक बढ़त रोकनी है तो उसे ऐसा नैरेटिव बनाना होगा, जिससे लोगों का भरोसा मिल सके। यह झूठे आरोपों के सहारे नहीं हो सकता

नीतीश कुमार ने बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में दसवीं बार शपथ ले ली और मंत्रियों के विभागों का बंटवारा भी हो गया, पर यह चर्चा थम नहीं रही कि आखिर राजग ने इतनी प्रचंड जीत कैसे हासिल कर ली। चुनावी जीत कई कारणों पर निर्भर करती है। बिहार में राजग की जीत के भी कई कारण रहे। एक बड़ा कारण रहा जदयू-भाजपा के साथ उसके अन्य सहयोगी दलों के बीच बेहतर सीट बंटवारा और तालमेल। इसके अलावा एक अन्य प्रमुख कारण है नीतीश कुमार के 20 साल के शासन में बिहार का पटरी पर आना। इसका संज्ञान इसलिए अधिक लिया गया, क्योंकि इसके पहले लालू-राबड़ी यादव का शासनकाल इस कदर जंगलराज का पर्याय बन गया था कि पिछले चुनावों की तरह इस चुनाव में भी मुद्दा बना और उसने अपना असर भी दिखाया। विपक्ष यह सब देखने से इन्कार कर रहा है। विपक्षी दल और विशेष रूप से कांग्रेस वोट चोरी का ही राग अलाप रही है। वोट चोरी का आरोप चुनावों के पहले तभी उछाल दिया गया था, जब चुनाव आयोग ने मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआइआर कराना शुरू ही किया था। विपक्ष ने वोट चोरी का आरोप लगाकर धरना-प्रदर्शन करने के साथ वोटर अधिकार यात्रा तक निकाली, लेकिन चुनाव आते-आते यह कोई मुद्दा ही नहीं रहा। चुनाव बाद के आंकड़े यह बताते हैं कि कुछ ऐसे क्षेत्र जहां बड़ी संख्या में लोगों के नाम वोटर लिस्ट से कटे, वहां कहीं राजग जीता तो कहीं विपक्ष। ऐसा कुछ भी सामने नहीं आया कि राजग को एसआइआर का लाभ मिला। मतदाता सूची से लाखों नाम कट जाने के बाद भी किसी ने यह शिकायत नहीं की कि उसका नाम गलत तरीके से काट दिया गया है। यानी जो नाम कटे, वे सही कटे। यदि ऐसा नहीं होता तो लोगों ने सड़कों पर उतरकर शिकायत की होती। ऐसे लोगों को सामने लाकर राजनीतिक दल भी शिकायत नहीं कर सके तो इसीलिए कि उन्हें कोई ऐसा मिला ही नहीं।

चुनाव आयोग ने बिहार में कम समय में जिस तरह एसआइआर कराया और उसके उपरांत सफलतापूर्वक चुनाव कराए, इसके लिए उसे साधुवाद दिया जाना चाहिए, लेकिन विपक्ष उसकी आलोचना करने के साथ नौ राज्यों और तीन केंद्रशासित क्षेत्रों में हो रहे एसआइआर का विरोध कर रहा है। विपक्ष शासित राज्य और विशेष रूप से पश्चिम बंगाल, केरल और तमिलनाडु में सत्तारूढ़ दल एसआइआर का कुछ ज्यादा ही विरोध कर रहे हैं। बंगाल की मुख्यमंत्री ने एसआइआर के विरोध में चुनाव आयोग को चिट्ठी लिखी है

अवधेश राजपूत

और उसे अनावश्यक बताया है। वे ऐसा इसके बाद भी कह रही हैं कि बंगाल में रह रहे हजारों बांग्लादेशी वापस अपने देश लौट रहे हैं। यह एसआइआर का ही असर है कि तमाम बांग्लादेशी बांग्लादेश लौटने को आतुर हैं। वे इसीलिए लौट रहे हैं, क्योंकि उन्होंने घुसपैठ की थी। उनके बांग्लादेश लौटने से गृहमंत्री अमित शाह की यह बात सही सिद्ध होती है कि देश में घुसपैठिए रह रहे हैं और वे भारत के संसाधनों का दोहन कर रहे हैं। भारत जैसे विकासशील देश में अवैध रूप से आ बसे लोगों के लिए कोई जगह नहीं हो सकती। उन्हें निकालने के लिए अन्य उपाय भी किए जाने चाहिए, क्योंकि यह काम चुनाव आयोग का नहीं कि वह घुसपैठियों के खिलाफ कदम उठाए। बांग्लादेशी घुसपैठिए इसीलिए लौट रहे हैं, क्योंकि उन्हें डर है कि एसआइआर के चलते उनकी पोल खुल जाएगी।

यह उम्मीद की जाए कि एसआइआर की मौजूदा प्रक्रिया से बंगाल समेत सभी राज्यों में वोटर लिस्ट दुरुस्त होगी। चूंकि इसके पहले वोटर लिस्ट ठीक करने का काम करीब दो दशक पहले हुआ था, इसलिए उसमें तमाम खामियां घर कर गई हैं। वोटर लिस्ट में केवल दोहराव ही नहीं है, उनमें मृतकों और अन्यत्र बस गए लोगों के नाम भी दर्ज हैं। निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए वोटर लिस्ट का सही होना आवश्यक है। समझना कठिन है कि विपक्षी दलों को वोटर लिस्ट ठीक किए जाने से क्या परेशानी है। वे वोटर लिस्ट में गड़बड़ी की शिकायत भी करते हैं और एसआइआर भी नहीं होने देना चाहते। आखिर एसआइआर पहली बार तो हो नहीं रहा। उसे कराना चुनाव आयोग का संवैधानिक दायित्व है। इसीलिए सुप्रीम कोर्ट ने बिहार में एसआइआर पर रोक लगाने की जरूरत नहीं समझी। सुप्रीम कोर्ट की ओर से एसआइआर को जरूरी बताए जाने के बाद भी विपक्षी दल यह माहौल बना रहे हैं कि इसके जरिये भाजपा चुनाव जीतने के लिए जोड़तोड़ करती है और चुनाव आयोग उसका साथ देता है। इसी शिकायत के साथ 12 राज्यों में हो रहे एसआइआर के खिलाफ फिर से सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया गया है। बिहार में निराशाजनक प्रदर्शन करने वाली कांग्रेस दिल्ली के रामलीला मैदान में जिस तरह एक रैली करने जा रही है, उससे साफ है कि वह इस मुद्दे पर अपने झूठे अभियान को जारी रखेगी। इसके संकेत राहुल गांधी के साथ कांग्रेस के अन्य नेताओं के चुनाव आयोग के खिलाफ आए बयानों से मिल रहा है। राहुल गांधी चुनाव आयोग को जिस तरह निशाने पर ले रहे हैं, वह एक संवैधानिक संस्था का अपमान ही है। वे संवैधानिक संस्था को कमजोर करने की कोशिश में खुद के साथ अपने दल को ही कमजोर कर रहे हैं, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट एसआइआर को सही मान रहा है। भले ही विपक्षी नेताओं समेत कुछ कथित लोकतंत्र हितैषी 12 राज्यों में हो रहे एसआइआर के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंचे हों, पर इसमें संदेह है कि वे वहां से इस प्रक्रिया को रुकवा सकेंगे।

विपक्ष यह समझने से इन्कार कर रहा है कि वह झूठे आरोपों के सहारे न तो जनता के बीच अपनी विश्वसनीयता बढ़ा सकता है और न ही भाजपा की राजनीतिक बढ़त को रोक सकता है। बिहार में बड़ी जीत के साथ देश भर में भाजपा के विधायकों की संख्या 1654 हो चुकी है, जो उसके लिए एक रिकार्ड है। आने वाले समय में उसके विधायकों की संख्या में और वृद्धि होना तय है। यदि विपक्ष को भाजपा की राजनीतिक बढ़त रोकनी है तो उसे अपना नैरेटिव ऐसा बनाना होगा, जिससे वह लोगों का भरोसा जीत सके। यह काम झूठे आरोपों के सहारे नहीं हो सकता। विडंबना यह है कि एसआइआर पर झूठे आरोप का ही सहारा लिया जा रहा है। लोकतंत्र में जैसे सत्ताधारी दल का अत्यधिक सशक्त होना ठीक नहीं, वैसे ही विपक्ष का बहुत कमजोर होना भी शुभ नहीं।

response@jagran.com

हवा का मूड सुधरने का इंतजार

हास्य-व्यंग्य

संतोष त्रिवेदी

सर्दियों में खराब हवा के लिए पहले पराली, दीवाली पर ठीकरा फूटता था। अब उसकी भी जरूरत नहीं

राजधानी दिल्ली समेत उत्तर भारत का एक बड़ा हिस्सा फिर से धुंध की गिरफ्त में है। बीसियों दिन हो गए, साफ हवा रूठी हुई है। शायद उसे भी किसी के खत का इंतजार है। वैसे राजधानी और उसके आसपास प्रदूषण होना कोई खबर भी नहीं रही। इस मौसम में हर साल हवा का मूड बिगड़ता है। पहले पराली, दीवाली पर ठीकरा फूटता था। अब उसकी भी जरूरत नहीं रही। आम आदमी ने इसे अपनी नियति मान लिया है और सरकार ने बेहतरी दिखाते हुए दीगर मसलों की तरह प्रदूषण को भी 'न्यू नार्मल' की श्रेणी में डाल दिया है। उसकी प्राथमिकता में सरकार बनाना भर है। उसे भरोसा है कि सारे देश में जब एक सी हवा बहेगी, राजधानी की हवा अपने आप साफ हो जाएगी या आम आदमी ही। इसमें पहले कौन साफ होता है, देखने वाली बात यही है।

सारी दुनिया दिल्ली के प्रदूषण पर शोध कर रही है। 'कूड़े का पहाड़' पहले ही इसकी शान में चार चांद लगा रहा था, अब जहर भरी हवा और धूल के महीन कण दिल्ली के मुकुट में स्थायी रूप से जड़ गए हैं। घर से बाहर निकलते ही आंखें बाहर निकलने लगती हैं। पहले ऋषि-मुनि लंबी तपस्या करके आंखों से अग्नि प्रज्वलित करते थे। सामने वाला देखते-देखते राख हो जाता था। अब यह प्रताप आम आदमी को हासिल हो गया है। फर्क सिर्फ इतना भर हुआ है कि उसने उसी आग को आत्मसात कर लिया है। फेफड़े ठीक से फड़फड़ा भी नहीं पा रहे। अभी तक मुई सिगरेट अकेले यह काम करती थी, लेकिन जबसे सरकार ने इस पर तबीयत से टैक्स ठोका है, लोग बिजली और पानी के बाद फ्री में धुआं ले रहे हैं। विकास के लिए और कोई कितना हासिल कर लेगा?

एक तो यह कोई समस्या नहीं है। अगर है भी तो साफ हवा देने की जिम्मेदारी सीधे जनता पर है। अव्वल तो वह सड़कों पर निकले नहीं। अगर निकलती भी है तो रैली, जुलूस और शोभायात्रा संग निकले। बिना डीजल और पेट्रोल की गाड़ी में निकले। सम-विषम सोचकर घर से निकले। मंत्री, सांसद, विधायक और पार्षद चुनाव जीतने के बाद से आराम फरमा रहे हैं। उनसे मिलने में कृपया मारामारी न करें। यह पक्की बात है कि यदि उन्हें धुंध का तनिक भी संज्ञान होता तो अब तक जरूर इस गंदी हवा का मान-मर्दन कर देते। आखिर सब कुछ सरकार ही क्यों करे? वैसे भी लोगों को महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और आतंक से मुक्ति के बाद हवा भी साफ चाहिए। सरकार और जरूरी कामों से सांस ले सके तो आम आदमी की सांस की भी खैर ले। हालांकि शहर में हर आदमी परेशान है, ऐसा भी नहीं है। कुछ ने शुद्ध हवा को अपने-अपने कमरों में पैदा कर लिया है। वह दिन भी जल्द आएगा, जब समृद्ध लोग अपनी नाक घर पर ही रखकर आएंगे। यदि नाक के साथ निकलना जरूरी हुआ तो नाक में कुप्पी लगाकर निकला करेंगे।

अभी की बात करें तो हम बीस दिन पहले आखिरी बार सैर पर निकले थे। डाक्टर ने कहा कि पहले सांसें बचाओ। जिंदा रहोगे तो घुटने भी बदलवा लेना। अच्छी बात है कि इसी बहाने घर को भी कुछ टाइम दे पाओगे। घर पर रहने के अपने खतरे हैं, पर जीवन बचाने के लिए कुछ खतरे उठाने पड़ेंगे। बस वाद-विवाद से दूर रहना। अब डाक्टर साहब को कौन समझाए। झगड़े से दूर रहने से खतरा नहीं टलता। अक्सर झगड़ा खुद सिर पर आकर बैठ जाता है। बाहर जहरीली हवा लेने से बेहतर है कि घर पर ही जहर के घूंट पिए जाएं। बाहर किसी ने रेडियो चला दिया है। उसमें हमारी पीढ़ी का गाना बज रहा है 'तुम अपना रंजो-गम, अपनी परेशानी मुझे दे दो।' तभी श्रीमती जी की आवाज आती है, 'खिड़की बंद कर लो जी। धुंध अंदर आ रही है'। और मैं खिड़की बंद करके कमरे में ही टहलने लगता हूं।

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य

अयोध्या में श्रद्धालुओं का आगमन

(संख्या करोड़ में)

स्रोत: उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग

(* जून 2025 तक के आंकड़े)

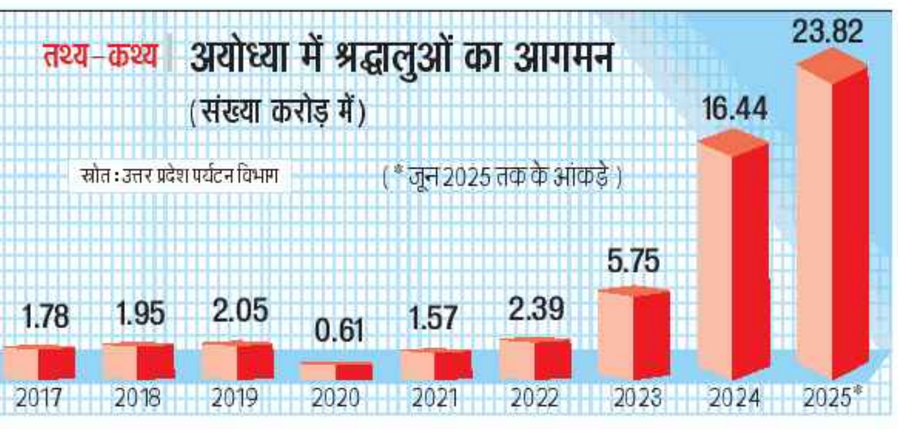

ऊर्जा

जीवन-पथ

परिस्थितियां जीवन-पथ में अवरोध उत्पन्न करती हैं, किंतु वे मनुष्य की नियति की अंतिम निर्धारक नहीं होतीं। मनुष्य का साहस, संकल्प, धैर्य और सतत कर्म ही उसके भविष्य की दिशा और दशा तय करते हैं। जीवन का प्रत्येक चरण हमें यह सीख देता है कि परिश्रम का कोई पर्याय नहीं है। चाहे लक्ष्य कितना भी दुर्गम, दुष्कर अथवा जटिल क्यों न प्रतीत हो, यदि प्रयास सुविचारित दिशा में अनवरत रूप से किया जाए, तो सफलता का द्वार अनिवार्यतः उद्घाटित होता है। प्रतिकूल परिस्थितियां ही मनुष्य के असली धैर्य, उद्यमशीलता और मानसिक दृढ़ता की परीक्षा लेती हैं। विपत्तियां मनुष्य को निर्बल नहीं करतीं, अपितु भीतर सुप्त पड़ी क्षमताओं को जाग्रत करती हैं। जब मनुष्य कठिनाइयों का सामना निर्भीकता और विवेक के साथ करता है, तभी उसका वास्तविक व्यक्तित्व उभरकर सामने आता है।

सफलता वस्तुतः सुनियोजित योजना, अनुशासन और निरंतर साधना का फल है। जो व्यक्ति परिस्थितियों का रोना रोते हुए हाथ पर हाथ धरे बैठा रहता है, वह अपने ही भविष्य के द्वार बंद कर लेता है। जबकि जो व्यक्ति चुनौतियों को अवसर में परिवर्तित करने की क्षमता विकसित कर लेता है, वही जीवन-पथ पर विजय प्राप्त करता है। पर्वतों को भी पिघलाने वाली शक्ति उसी के पास होती है, जिसके पास अटूट श्रद्धा, दृढ़विश्वास और अखंड प्रयास का संबल हो।

मनुष्य को परिस्थितियों से डरने के बजाय अपने अंतःशक्ति पर विश्वास कर आगे बढ़ना चाहिए। मनुष्य की महानता उसके संसाधनों में नहीं, बल्कि उसकी जिजीविषा और अदम्य इच्छाशक्ति में निहित है। जो व्यक्ति प्रतिकूलताओं के समक्ष झुकने के बजाय उनसे संघर्ष करने का साहस रखता है, वह अपने भाग्य का निर्माता बन जाता है। अतः यह सत्य है कि मनुष्य परिस्थितियों का उत्पाद नहीं, बल्कि परिस्थितियों का निर्माता है। वह उनसे बड़ा और अधिक सामर्थ्यवान है।

समराज चौहान

चुनावी राग

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी-20 शिखर सम्मेलन के लिए शुक्रवार को जोहानिसबर्ग पहुंचे और जैसी कि परंपरा है, वहां की सरकार ने हवाई अड्डे से लेकर होटल तक उनकी जमकर आगवानी की। भारतीय उच्चायोग के सहयोग से तैयार कई नृत्य टोलियों एवं भारतीय पारंपरिक गानों का आयोजन हुआ, जिसका पीएम मोदी ने खूब लुत्फ भी उठाया, लेकिन इन आयोजनों में भी कहीं न कहीं भारत के चुनावी माहौल के मिजाज के संकेत मिले। स्वागत में एक तरफ तो गिरमिटिया गीत गंगा मईया की प्रस्तुति हुई, जिसके बारे में पीएम ने स्वयं भोजपुरी में अपना संदेश इंटरनेट मीडिया पर लिखा। इसके साथ ही असम के नृत्य का भी आयोजन हुआ। अब बिहार के बाद अगले दो वर्षों के भीतर उत्तर प्रदेश और असम में भी विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। वैसे पीएम के विदेश दौरे में अक्सर विभिन्न राज्यों का रंग दिखता रहा है।

शादी होगी या चिंतन-बैठक

कृषि मंत्रालय में चिंतन बैठक को लेकर सर्वोच्च स्तर पर मंजूरी मिल गई थी। शहर से बाहर किसी अच्छे

राजरंग

रमणीय स्थल पर देश के कृषि क्षेत्र के भविष्य पर मंथन करने को लेकर तैयारियां भी शुरू कर दी गई थीं, लेकिन शादियों के मौसम की वजह से तैयारियों पर पानी फिर रहा है। हुआ यह है कि जहां-जहां भी चिंतन बैठक के लिए अच्छे होटलों या आयोजन स्थलों का चयन किया गया, बाद में मालूम चला कि उन सभी में शादियों की बुकिंग है। अब चूंकि 60-80 शीर्ष अधिकारियों एवं दूसरे अधिकारियों को एक जगह ठहराने के लिए हर जगह इनका आयोजन भी नहीं किया जा सकता। यह सूचना दूसरे उन मंत्रालयों तक भी पहुंच गई है, जो चिंतन शिविर कराने की तैयारियां कर रहे थे। फिलहाल शादियों के बाद ही चिंतन बैठक आयोजित करने का फैसला किया गया है।

रिटर्न सुनामी

बिहार के चुनावी नतीजों ने राजनीतिक दलों को इस कदर दंग किया है कि चुप्पी छा गई है। विपक्षी दल सहम गए हैं कि यह 2014 की सुनामी की वापसी तो नहीं, जिसके बाद भाजपा हरियाणा, महाराष्ट्र फिर असम और त्रिपुरा जैसे राज्यों में भी सत्ता में आ गई थी। इन राज्यों में पहली बार भाजपा का मुख्यमंत्री बन गया था। आगे बंगाल समेत जिन राज्यों में चुनाव होने हैं खासकर वहां राजनीतिक दल परेशान हैं। एसआइआर को जनता का मुद्दा बनाने की कोशिश हुई थी, जिसे खारिज किया जा चुका है। जिस तरह का डाटा आया है और सुप्रीम कोर्ट में साक्ष्य पेश किए गए हैं, उसके बाद नैरेटिव के स्तर पर भी यह फुस्स हो गया है। प्रधानमंत्री मोदी को टारगेट करने की कोशिश हुई, अदाणी-अंबानी और आरएसएस का राग अलापा गया, वह भी खारिज हो गया तो फिर लड़ें कैसे। दिल्ली के बाद बिहार में भी भाजपा की ओर से जिस तरह का संकल्प पत्र लाया गया था, उसके बाद यह तो तय है कि आगामी चुनावों में भी विकास के साथ-साथ लालीपाप भी होगा। यही कारण है कि विपक्षी दलों में चुप्पी है, लेकिन यह लंबा चल गया तो फिर...।

लिमिट में सत्कार

हाल में मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेरी मंत्रालय में एक नया सर्कुलर आया है जिससे कुछ लोग रोष में हैं, क्योंकि पहली बार मंत्रालय ने आतिथ्य सत्कार के लिए एक लिमिट लगाने का काम किया है। अभी तक आतिथ्य सत्कार में उच्च पदों के लिए खर्च करने की कोई ऐसी सीमा नहीं थी और फिर संबंधित विभाग के अधिकारियों की मर्जी से खर्चे होते थे। इस बारे में कई बार सवाल भी आंतरिक तौर पर उठे थे। ऐसे में आतिथ्य की सीमा तय कर दी गई है। संयुक्त सचिव, अतिरिक्त सचिव या इस तरह के पदों पर बैठे व्यक्ति आतिथ्य पर सिर्फ 12 हजार रुपये ही खर्च कर सकेंगे।

पोस्ट

विपक्षी दल जब तक नकारात्मक राजनीति करते रहेंगे, तब तक देश की जनता बिहार जैसा परिणाम देती रहेगी।

डा. अवनेंद्र कुमार राय@avanindra43

बंगाल में बांग्लादेश से सटी सीमा पर वतन वापसी करते घुसपैठियों की भीड़ बता रही है कि बंगाल में एसआइआर बहुत पहले हो जाना चाहिए था।

अमन चोपड़ा@AmanChopra_

इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया के बीच टेस्ट दो दिन में खत्म हो गया। बैजबाल खेलने तो इंग्लैंड चला था, लेकिन आस्ट्रेलिया उसे अमल में ले आया। ट्रेविस हेड ने अकेले ही मैच का रुख पलट दिया।

सुशील दोशी@RealSushilDoshi

दुबई एयर शो के दौरान जान गंवाने वाले विंग कमांडर नमांश स्याल ने देश की सेवा के मिशन में अंतिम समय तक उड़ान भरी और हमें याद दिलाया कि यह समर्पण सिर्फ वायुसेना के एक पायलट का नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की उम्मीदों, भरोसे और शौर्य की पराकाष्ठा है। उनकी शानदार विरासत जीवित है, आकाश की ऊंचाइयों में, भारत माता की रक्षा में।

आदित्य राज कौल@AdityaRajKaul

जनपथ

कुछ तो गड़बड़ है दया करो ठीक से जांच,
क्यों विमान इस देश के पकड़ रहे हैं आंच।
पकड़ रहे हैं आंच लग रही साजिश गहरी,
है मसला गंभीर गिरें यदि अपने प्रहरी।
जो दुश्मन प्रत्यक्ष नहीं पाता हमसे लड़,
कर सकता है दूर बैठकर कुछ तो गड़बड़ !

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 128

****

एक नजर में

सीईसी का फर्जी वीडियो प्रसारित, केस दर्ज

तिरुअनंतपुरम: केरल में स्थानीय निकाय चुनाव से संबंधित मुख्य निर्वाचन आयुक्त(सीईसी) का एक फर्जी वीडियो इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित हुआ है। अधिकारियों के अनुसार, शुक्रवार को सीईसी का फर्जी वीडियो देखा गया। इसके बाद तिरुअनंतपुरम सिटी साइबर पुलिस ने इस संबंध में मामला दर्ज किया। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि यह फर्जी वीडियो एक्स पर देखा गया, जिसमें आगामी स्थानीय निकाय चुनावों के बारे में झूठी जानकारी फैलाई जा रही थी। इस फर्जी पोस्ट में मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार की फर्जी तस्वीर और संपादित वीडियो शामिल था। वहीं, पुलिस को इस बात का संदेह है कि यह वीडियो अन्य इंटरनेट मीडिया मंचों पर भी प्रसारित किया गया होगा। इस मामले में अज्ञात पर मामला दर्ज किया गया है। (प्रेट्र)

मराठी युवक की आत्महत्या के मुद्दे पर भाजपा का प्रदर्शन

मुंबई: मुंबई भाजपा ने शनिवार को शिवाजी पार्क स्थित बालासाहेब ठाकरे स्मृति स्थल पर काली पट्टी बांधकर मौन प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन हिंदी-मराठी भाषाई विवाद में लोकल ट्रेन में पीटे जाने के बाद एक मराठी युवक की आत्महत्या के विरोध में किया गया था। मुंबई भाजपा के महासचिव आचार्य पवन त्रिपाठी के अनुसार, मुंबई भाजपा के अध्यक्ष अमित साटम के नेतृत्व में भाजपा कार्यकर्ताओं ने मुंह पर काली पट्टी बांधकर शिवाजी पार्क में बालासाहेब ठाकरे स्मृति स्थल के निकट प्रदर्शन किया और फिर स्मृति स्थल पर पुष्पार्पण कर भाषा के नाम पर वैमनस्य फैला रहे शिवसेना (यूबीटी) एवं मनसे जैसे दलों को सदबुद्धि देने की प्रार्थना की। (राज्य)

नीतीश को समर्थन, शर्त बस इतनी कि सीमांचल के साथ करें इंसाफ: ओवैसी

किशनगंज: सीमांचल पहुंचे एआइएमआइएम के प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने पूर्णिया, अररिया और किशनगंज जिले में आयोजित कार्यक्रमों में पार्टी को मिली सफलता पर जनता को धन्यवाद दिया। शनिवार को उन्होंने किशनगंज जिले के कोचाधामन प्रखंड के रहमतपाड़ा में नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री बनने पर बधाई देते हुए कहा कि मैं नीतीश कुमार को समर्थन देने के लिए तैयार हूं। बस शर्त इतनी है कि वे सीमांचल के साथ इंसाफ करें। बदहाली दूर करने का काम करें। (जागरण टीम)

श्रम संहिता लागू होने पर नियोक्ता व कर्मियों में संवाद जरूरी: आइएलओ

नई दिल्ली, प्रेट्र: अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आइएलओ) के महानिदेशक गिल्बर्ट एफ हौंग्बो ने कहा कि भारत में श्रम संहिताएं लागू होने के बीच नियोक्ता और कर्मचारियों के बीच सामाजिक संवाद बहुत जरूरी है। तभी ये संहिताएं कर्मचारियों और कारोबार, दोनों के लिए फायदेमंद होंगी। उन्होंने एक्स पर पोस्ट किया, सामाजिक सुरक्षा और न्यूनतम मजदूरी सहित भारत की नई श्रम संहिताओं को लागू किए जाने को मैं बड़ी दिलचस्पी से देख रहा हूं।

बताते चलें, श्रम कानूनों में ऐतिहासिक बदलाव करते हुए सरकार ने शुक्रवार को सभी चार श्रम संहिताओं को अधिसूचित कर दिया। इससे गिग वर्कर्स के लिए सामाजिक सुरक्षा कवरेज, सभी कर्मचारियों के लिए अनिवार्य नियुक्ति पत्र और सभी क्षेत्रों में न्यूनतम मजदूरी और समय पर भुगतान सहित प्रमुख सुधारों की शुरुआत हुई।

पालिसीबाजार फार बिजनेस के निदेशक प्रवीण चौधरी ने कहा कि 40 साल से ऊपर के कर्मचारियों के लिए सालाना स्वास्थ्य जांच अनिवार्य करना यह दिखाता है कि अब संगठन अपने कर्मचारियों की सेहत को कितनी गंभीरता से ले रहे हैं। फाउंडेशन फार इकोनमिक डेवलपमेंट के संस्थापक और निदेशक राहुल अहलूवालिया ने कहा कि नई श्रम संहिताएं विनिर्माताओं के लिए अनुपालन के बोझ को कम करती हैं।

'लंबित मामले निपटाना व मध्यस्थता को बढ़ावा देना प्राथमिकता'

माला दीक्षित ● जागरण

नई दिल्ली: सोमवार को देश के 53वें प्रधान न्यायाधीश (सीजेआइ) की शपथ लेने जा रहे जस्टिस सूर्यकांत की प्राथमिकता सुप्रीम कोर्ट और देश की विभिन्न अदालतों में लगे मुकदमों के ढेर को खत्म करने की होगी। यानी लंबित मामलों का शीघ्र निपटारा और मध्यस्थता के जरिये विवादों के निराकरण को बढ़ावा दिया जाएगा। सीजेआइ का पद संभालने के बाद एक दिसंबर तक जमानत और तत्काल (अरजेंट) मामलों की सुनवाई को लेकर कोई सुखद खबर आ सकती है, ऐसा उन्होंने संकेत दिया। भारत के प्रधान न्यायाधीश बीआर गवई 23 नवंबर रविवार को सेवानिवृत हो जाएंगे और 24 नवंबर सोमवार को जस्टिस सूर्यकांत सीजेआइ पद की शपथ लेंगे।

जस्टिस सूर्यकांत ने शनिवार को पत्रकारों से अनौपचारिक बातचीत में अपनी प्राथमिकताएं बताईं। कहा कि उनकी प्राथमिकता लंबित मुकदमों का शीघ्र निपटारा करना है। सिर्फ सुप्रीम कोर्ट में ही नहीं, बल्कि देश की अदालतों में लंबित मुकदमों का जल्द निपटारा उनकी प्राथमिकता होगी। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट में लंबित मुकदमों की संख्या 90 हजार पार कर चुकी है। इसका कारण चाहें जो भी हो, लेकिन हमें मुकदमे निपटाने का लक्ष्य रखना होगा। हमें सुप्रीम कोर्ट में उपलब्ध क्षमता का पूर्ण उपयोग करना होगा। सुप्रीम कोर्ट के

जस्टिस सूर्यकांत ● फाइल फोटो

- सोमवार को सीजेआइ पद की शपथ लेने जा रहे जस्टिस सूर्यकांत ने बताई प्राथमिकताएं
- एक दिसंबर तक जमानत व तत्काल मामलों की सुनवाई को लेकर आ सकती है सुखद खबर

अलावा सीजेआइ का पद संभालने के बाद उनका लक्ष्य देशभर की अदालतों में लंबित मुकदमों की संख्या कम करने पर भी होगा। कहा कि सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठों में बहुत से मामले लंबित हैं। कुछ मामले पांच न्यायाधीशों की पीठ के हैं, कुछ सात और नौ न्यायाधीशों की पीठ में लंबित हैं। संविधान पीठों के मामले निपटने से देश की विभिन्न जिला अदालतों और हाई कोर्ट में लंबित बहुत से मुकदमे निपट जाएंगे जो सुप्रीम कोर्ट में लंबित कानूनी सवालों के कारण फंसे हुए हैं।

उन्होंने कहा कि इस संबंध में तमाम हाई कोर्ट से भी आंकड़े मंगाए जाएंगे कि उनके यहां ऐसे कितने मामले लंबित हैं जो सुप्रीम कोर्ट में लंबित कानूनी सवाल के निपटारे के इंतजार में हैं। इसके बाद संविधान पीठों का गठन कर संविधानपीठों के मामलों का निपटारा किया जाएगा। अन्य मामलों में भी सबसे पुराने मुकदमों की सुनवाई को प्राथमिकता दी जाएगी। उन्होंने कहा कि इसके लिए केस मैनेजमेंट की जरूरत है। उनका कहना था कि लोगों में सीधे सुप्रीम कोर्ट आने की प्रवृत्ति से भी यहां मामले बढ़ते हैं। लोगों को समझना होगा कि हाई कोर्ट भी संवैधानिक अदालत है। पहले हाई कोर्ट जाना चाहिए।

जस्टिस सूर्यकांत ने कहा कि मध्यस्थता गेम चेंजर हो सकती है। कहा कि ये देखने वाली बात है कि अदालतों में एआइ किस हद तक इस्तेमाल किया जा सकता है।

चंडीगढ़ पर होगा केंद्र का एकाधिकार, संविधान संशोधन बिल लाने की तैयारी

अब पंजाब और केंद्र सरकार के बीच एक बार फिर टकराव बढ़ने के आसार

राज्य ब्यूरो, जागरण ● चंडीगढ़: चंडीगढ़ को लेकर पंजाब और केंद्र सरकार के बीच एक बार फिर टकराव बढ़ने के आसार हैं। केंद्र सरकार जल्द ही 131वां संविधान संशोधन बिल ला रही है, जिसका मकसद चंडीगढ़ केंद्र शासित प्रदेश को अन्य केंद्र शासित प्रदेशों के समान करने के लिए संविधान के आर्टिकल 240 में संशोधन करना है। यह दावा आम आदमी पार्टी के राज्य सभा सदस्य विक्रमजीत सिंह साहनी ने किया है। उन्होंने कहा है कि राज्य सभा के बुलेटिन के जरिए उन्हें यह पता चला है कि यह बिल आ रहा है। यदि यह बिल पारित हो जाता है तो चंडीगढ़ में कमिश्नर रैंक का अधिकारी ही प्रशासक के तौर पर लगाया जाएगा जैसा कि अन्य केंद्र शासित प्रदेशों में लगाया गया है। इस समय चंडीगढ़ में पंजाब के राज्यपाल ही प्रशासक हैं। उन्होंने कहा कि नए कानून के साथ, इसमें लक्षद्वीप और दूसरे केंद्र शासित प्रदेशों की तरह एडमिनिस्ट्रेशन के नियम लागू होंगे।

साहनी ने पंजाब के सभी सांसदों और राज्य सभा सदस्यों से अपील की है कि सभी एक साथ जाकर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से इस मामले को लेकर मिलें और इस बिल को रुकवाने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि चंडीगढ़ पर पंजाब के दावों का ऐतिहासिक महत्व है। बंटवारे के बाद चंडीगढ़ को पंजाब की राजधानी बनाया गया था क्योंकि लाहौर पाकिस्तान में चला गया था। 1966 में पंजाब के रीआर्गेनाइजेशन के बाद इसे पंजाब और हरियाणा की राजधानी बनाया गया था। फिर कई समझौतों के तहत केंद्र ने चंडीगढ़ को पंजाब की राजधानी बनाने का वादा किया।

केंद्र की अधिसूचना का हुआ था विरोध: काबिले गौर है कि हाल ही में चंडीगढ़ स्थित पंजाब यूनिवर्सिटी के प्रबंधकीय सिस्टम में बदलाव करने के लिए भी केंद्र सरकार ने अधिसूचना जारी की थी, जिसका पंजाब भर में विरोध हुआ। इस पर इसे वापस लेने का फैसला लिया गया। साहनी ने हैरानी जताई कि अभी तो इस अधिसूचना को वापस लिए कुछ दिन हुए हैं और सरकार ने एक और संविधान संशोधन लाकर नया विवाद छेड़ दिया है।

यह है व्यवस्था: पंजाब पुनर्गठन एक्ट 1966 के बाद पंजाबी बोलने वाले इलाकों को लेकर पंजाब और हरियाणा में सहमति नहीं बनी, इसलिए चंडीगढ़ को झगड़े का निपटारा होने तक केंद्र शासित प्रदेश बनाया गया। यहां 60% पंजाब के और 40% हरियाणा के कर्मचारियों को नियुक्त किया जाता रहा है। हालांकि, धीरे-धीरे केंद्र सरकार ने अहम पदों पर अब यूटी काडर के अधिकारियों को लगाना शुरू कर दिया है। बिल पास होने बाद केवल यूटी काडर के कर्मचारियों की नियुक्ति होगी। पंजाब व हरियाणा का अधिकार खत्म हो जाएगा।

- राज्य सभा सदस्य विक्रमजीत सिंह साहनी ने राज्य सभा के बुलेटिन का हवाला देते हुए किया दावा
- पंजाब के सभी सांसदों व राज्य सभा सदस्यों से बिल रुकवाने का प्रयास करने का किया आह्वान

विक्रमजीत सिंह साहनी ● फाइल फोटो

गृह मंत्री स्थिति स्पष्ट करें: कांग्रेस

पंजाब कांग्रेस के अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग, विपक्ष के नेता प्रताप सिंह बाजवा ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से स्थिति साफ करने की अपील की है। उन्होंने चेतावनी दी, चंडीगढ़ पंजाब का है और इसे छीनने की किसी भी कोशिश के गंभीर नतीजे होंगे। साथ ही उम्मीद जताई कि केंद्र सरकार ऐसी कोई गलत हरकत नहीं करेगी। उन्होंने मुख्यमंत्री भगवंत मान से अपील की कि इससे पहले कि देर हो जाए, वे इस मामले को तुरंत केंद्र सरकार के सामने उठाएं।

फैसला फेडरल भावना के खिलाफ: शिअद

शिरोमणि अकाली दल के प्रधान सुखबीर बादल ने कहा कि बिल लाने का मकसद चंडीगढ़ पर पंजाब के राजधानी होने के दावे को खत्म करना है। प्रस्तावित बिल को पंजाब के अधिकारों पर हमला बताते हुए सुखबीर सिंह बादल ने कहा कि यह फेडरल भावना के खिलाफ है और उन पंजाबी लोगों के साथ भेदभाव है, जो आजादी की लड़ाई में सबसे आगे थे। उन्होंने अपनी जान दी, देश की सीमाओं की रक्षा की और देश में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हरित क्रांति लाए।

भाजपा ने घुसपैठियों को बताया मुस्लिम, टीएमसी ने कहा-पड़ोसी हिंदू शरणार्थी

राज्य ब्यूरो, जागरण ● कोलकाता: बंगाल में 2011 से ममता बनर्जी के शासनकाल में बांग्लादेश की सीमा से सटे नौ जिलों में पंजीकृत मतदाताओं की संख्या में बड़ा इजाफा देखा गया है। चुनाव आयोग के आंकड़ों के मुताबिक, 2002 में राज्य में 4.15 करोड़ पंजीकृत मतदाता थे, जो अब बढ़कर 7.63 करोड़ हो चुके हैं। इसको लेकर भाजपा और सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस आमने-सामने हैं। भाजपा का कहना है कि यह बांग्लादेश से आए मुस्लिम घुसपैठियों का यह प्रमाण है, जबकि तृणमूल कांग्रेस का दावा है कि पड़ोसी देश से हिंदू शरणार्थी बड़ी संख्या में आए हैं, जिससे वोटरों की संख्या में बढ़ोतरी दिख रही है।

टीएमसी प्रवक्ता अरूप चक्रवर्ती ने कहा कि बांग्लादेश में हिंदू आबादी 8 प्रतिशत तक गिर गई है, इसलिए यह स्वाभाविक है कि वे बंगाल आए हों। आरोप लगाया कि भाजपा मुस्लिम घुसपैठ का फर्जी नैरेटिव तैयार कर रही है। कोलकाता में वोटरों की कम बढ़ोतरी पर उन्होंने कहा कि इस डाटा का असल मतलब अभी साफ नहीं है।

वरिष्ठ भाजपा नेता और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष राहुल सिन्हा ने तृणमूल पर घुसपैठियों को संरक्षण देने का आरोप लगाते हुए कहा कि यह चिंताजनक ट्रेंड है। उन्होंने कहा कि कई जिले मुस्लिम बहुल हो जाएंगे और इसकी वजह सिर्फ घुसपैठ है।

- बांग्लादेश से सटे बंगाल के नौ जिलों में मतदाताओं की संख्या में बड़ा इजाफा
- बीएसएफ को अब सीमाई इलाकों में निगरानी को और मजबूत करना ही चाहिए

दूसरी ओर, माकपा के प्रदेश अध्यक्ष मोहम्मद सलीम ने कहा कि बांग्लादेश फैक्टर तो है, लेकिन बीएसएफ को अब सीमाई इलाकों में निगरानी को और मजबूत करना ही चाहिए।

बंगाल में बीएलओ ने की आत्महत्या, सीईओ ने डीएम से मांगी रिपोर्ट

राज्य ब्यूरो, जागरण ● कोलकाता: बंगाल के नदिया जिले में बूथ स्तरीय अधिकारी (बीएलओ) के रूप में कार्यरत एक महिला शनिवार सुबह घर पर मृत मिली। पुलिस के अनुसार, उसके परिवार के सदस्यों ने आरोप लगाया है कि वह एसआइआर संबंधी काम के कारण काफी तनाव में थी, इसी कारण उसने आत्महत्या की। रिंकू तरफदार नाम की बीएलओ का शव चापरा के कृष्णानगर स्थित बंगालझी इलाके में घर के कमरे में छत से लटका मिला। राज्य के मंत्री उज्जवल विश्वास ने मृतका के घर जाकर परिवार के सदस्यों से मुलाकात की। पुलिस के मुताबिक उसके कमरे से एक सुसाइड नोट मिला है। घटना पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने दुख जताते हुए कहा कि एसआइआर के कारण अब और कितनी जानें जाएंगी। बंगाल के मुख्य चुनाव अधिकारी (सीईओ) मनोज कुमार अग्रवाल ने इस घटना पर जिले के डीएम से एक रिपोर्ट मांगी है।

आयोग जिम्मेदार : टीएमसी ने आरोप लगाया है कि एसआइआर में हडबड़ी की वजह से बूथ स्तरीय अधिकारी आत्महत्या कर रहे हैं। इसके लिए चुनाव आयोग जिम्मेदार है। अब तक तीन बीएलओ की मौत हो चुकी है। सत्तारूढ़ दल ने राज्य के मुख्य चुनाव अधिकारी (सीईओ) को एक ज्ञापन सौंपा। उधर नईदुनिया प्रतिनिधि के अनुसार एमपी के दमोह में एसआइआर सर्वे करते समय एक बीएलओ सीताराम गोंड़ की हार्ट अटैक से मौत हो गई।

'पहले आपरेशन सिंदूर जैसी कार्रवाई होती तो फिर कोई हमला न करता'

मुंबई, प्रेट्र: महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने शनिवार को कहा कि यदि भारत ने नवंबर 2008 के मुंबई आतंकी हमले के बाद आपरेशन सिंदूर जैसी कार्रवाई की होती तो कोई भी हमारे देश को दोबारा निशाना बनाने की हिम्मत नहीं करता। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान जानता है कि वह सीधे युद्ध में भारत को पराजित नहीं कर सकता, इसलिए पहलगाम में आतंकी हमला और हाल में दिल्ली में विस्फोट हुआ।

26-11 हमले की 17वीं बरसी के अवसर पर गेटवे आफ इंडिया पर आयोजित एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि यह केवल ताज और ट्राइडेंट होटलों पर हमला नहीं था। मुंबई भारत की आर्थिक राजधानी है। इस शहर पर हमला देश की संप्रभुता पर हमला था। यदि हम यह बात समझते और उस समय आपरेशन सिंदूर करने का साहस दिखाते तो कोई भी हम पर दोबारा हमला करने की हिम्मत नहीं करता।

- 26-11 हमले की 17वीं बरसी के अवसर पर कार्यक्रम में बोले महाराष्ट्र के सीएम फडणवीस
- कहा, पाकिस्तान जानता है कि वह सीधे युद्ध में भारत को पराजित नहीं कर सकता

एएनआइ के अनुसार, रिलायंस फाउंडेशन की संस्थापक और अध्यक्ष नीता अंबानी ने मुंबई में आयोजित ग्लोबल पीस आनर्स 2025 कार्यक्रम में 26-11 और पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलिलि दी। इसका आयोजन दिव्यज फाउंडेशन द्वारा किया गया था और अमृता फडणवीस ने इसका नेतृत्व किया। बालीवुड सुपरस्टार शाह रुख खान ने भी इस कार्यक्रम में मौजूद रहकर आतंकी हमलों मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि दी।

बांकेबिहारी मंदिर में टूटी परंपरा, नहीं हुआ देहरी पूजन, सेवायतों ने किया कड़ा विरोध

जागरण संवाददाता, वृंदावन: जगमोहन (गर्भ गृह चबूतरा) में प्रवेश पर उच्चाधिकार प्रबंधन समिति की रोक के निर्णय के बाद शनिवार को पहली बार ठाकुर बांकेबिहारी मंदिर में देहरी पूजन नहीं हो सका। जगमोहन का गेट बंदकर उस पर चढ़ने पर रोक लगा दी गई। सेवायतों ने इसका कड़ा विरोध किया। प्रबंधन समिति के चार में से दो सेवायत भी विरोध में शामिल रहे। सेवायतों का कहना है कि समिति का काम व्यवस्था बनना है, न कि व्यवस्था रोकना। देहरी पूजन एक पुरानी परंपरा है। इस पर रोक लगाकर धार्मिक कार्यकलापों से छेड़छाड़ की जा रही है। मंदिर में विरोध करने के बाद सेवायतों ने जिलाधिकारी से मिलकर अपनी बात रखी।

मंदिर की व्यवस्थाओं की देखरेख के लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित उच्चाधिकार प्रबंधन समिति ने भीड़ नियंत्रण के लिए गुरुवार को जगमोहन क्षेत्र में प्रवेश बंद करने का निर्णय लिया। रात ही जगमोहन के आसपास बैरिकेडिंग लगा दी गई। जगमोहन के सामने वीआइपी कठघरा पांच गुणा बढ़ा दिया गया। जगमोहन में ही देहरी पूजन किया जाता है। शनिवार सुबह जब सेवायत यजमानों को लेकर पहुंचे तो उन्हें जगमोहन पर चढ़ने से रोक दिया गया। सेवायत शैलेंद्र गोस्वामी, श्रीवर्धन गोस्वामी, बब्बू गोस्वामी के प्रतिनिधि शशांक गोस्वामी सहित सभी ने एक स्वर में कहा कि यह मंदिर की मूल सेवा पद्धति से छेड़छाड़ है। विरोध जताने के बाद सेवायत डीएम में मिलने मथुरा पहुंचे। डीएम ने सेवायतों का अहित न होने देने का भरोसा दिया।

बांके बिहारी मंदिर में शनिवार को गर्भगृह से 25 फीट दूर वीआइपी कठघरे के बाद श्रद्धालुओं में दर्शन के लिए मचती खींचतान ● जागरण

अजीत पवार मतदाताओं से बोले आपके पास वोट हैं, मेरे पास पैसा

पुणे, प्रेट्र : महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री अजीत पवार ने पुणे के मालेगांव में मतदाताओं से कहा कि यदि वे उनकी पार्टी के उम्मीदवारों को चुनेंगे तो वह सुनिश्चित करेंगे कि शहर के लिए धन की कोई कमी न हो। इसके साथ ही पवार ने कहा कि लेकिन यदि मतदाता उनके उम्मीदवारों को अस्वीकार करते हैं तो वह भी धन मुहैया नहीं कराएंगे। कहा कि आपके पास वोट हैं, मेरे पास विकास कार्य के लिए पैसा है। राकांपा अध्यक्ष पवार ने शुक्रवार को बारामती तहसील में मालेगांव नगर पंचायत के चुनाव के लिए प्रचार करने के दौरान यह बात कही। पवार भाजपा-राकांपा-शिवसेना की गठबंधन सरकार में वित्त मंत्रालय संभाल रहे हैं।

उप मुख्यमंत्री ने मतदाताओं से कहा कि यदि आप राकांपा के सभी 18 उम्मीदवारों को चुनते हैं तो मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि धन की कोई कमी न हो। यदि आप सभी 18 उम्मीदवारों को चुनते हैं तो मैं वादा पूरा करने को प्रतिबद्ध हूं। लेकिन, यदि आप मना करोगे तो मैं भी मना कर दूंगा। शिवसेना (यूबीटी) के नेता अंबादास दानवे ने पवार पर मतदाताओं को धमकाने का आरोप लगाया है। कहा कि निर्वाचन आयोग क्या कर रहा है। नगर पंचायतों के चुनाव दो दिसंबर को होने हैं।

अजीत पवार ● फाइल फोटो

- कहा, यदि उम्मीदवारों को अस्वीकार करेंगे तो वह धन मुहैया नहीं कराएंगे
- शिवसेना उद्धव गुट ने उन पर मतदाताओं को धमकाने का लगाया आरोप

अब बंगाल पर भाजपा की नजर, मोदी-शाह दिसंबर से करेंगे दौरा

राज्य ब्यूरो, जागरण ● कोलकाता: बिहार चुनाव में मिली प्रचंड जीत के बाद उत्साहित भाजपा की नजर अब बंगाल पर है, जहां पांच माह बाद ही विधानसभा चुनाव होने हैं। भाजपा का शीर्ष नेतृत्व साल खत्म होने से पहले पूरी ताकत से बंगाल में चुनाव प्रचार में कूदने जा रहा है। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह सहित पार्टी के दूसरे शीर्ष नेता दिसंबर से लगातार बंगाल का दौरा करेंगे।

केंद्रीय मंत्री और प्रदेश भाजपा के पूर्व अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने कहा कि राज्य नेतृत्व ने प्रधानमंत्री से इस साल बंगाल के विभिन्न हिस्सों में 10 जगहों पर रैली का अनुरोध किया था। इसमें तीन अलग-अलग क्षेत्रों में पीएम की रैलियां हो चुकी है। पार्टी के केंद्रीय पर्यवेक्षक सुनील बंसल ने कहा कि तृणमूल कांग्रेस सरकार के कथित कुशासन के खिलाफ प्रदर्शन भी किया जाएगा।

श्रीराम मंदिर में चढ़ाए जाने वाले ध्वज का ग्रेनो में रहने वाले ललित से जुड़ा है नाता

जागरण संवाददाता, ग्रेटर नोएडा: अयोध्या स्थित श्रीराम मंदिर में श्रीराम जन्मभूमि की गर्भगृह के शिखर पर 25 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ध्वजारोहण करेंगे। अहमदाबाद में बने झंडे का ग्रेटर नोएडा से भी नाता जुड़ा है। झंडे को खोजने वाले इतिहासकार मध्य प्रदेश के हरदुआ गांव निवासी ललित मिश्रा ग्रेटर नोएडा वेस्ट की महागुन मायवुडस सोसायटी में रहते हैं। उन्होंने बताया कि मई 2023 में अयोध्या शोध संस्थान ने उन्हें यह काम दिया। ललित मिश्रा को यह झंडा तब मिला जब वे मेवाड़ की रामायण की एक पेंटिंग की स्टडी कर रहे थे, बाद में उन्होंने वाल्मीकि रामायण के अयोध्या कांड में इसके जिक्र को पक्का किया।

उन्होंने बताया कि कोविदर वृक्ष को पहचानने में मुश्किलों का सामना करना पड़ा। शुरू में वे इसे कचनार समझ बैठे क्योंकि उनके बायोलाजिकल नाम एक जैसे थे।

2023 मई में अयोध्या शोध संस्थान ने उन्हें यह काम सौंपा था

25 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इसी झंडे का करेंगे ध्वजारोहण।

ललित मिश्रा ● फाइल फोटो

बाद में उन्होंने संस्कृत व आयुर्वेदिक शोध के साथ बीएचयू के प्रोफेसर का भी सहयोग लिया। उन्होंने कहा कि झंडे की वापसी एक अहम पल है, जो आधुनिक भारत को उसकी समृद्ध विरासत से फिर से जोड़ता है। मिश्रा ने कहा कि महाभारत युद्ध के बाद अयोध्या के पुराने झंडे और उसके पवित्र वृक्ष की यादें खो गई थीं। फिर भी उन्हें खुशी है कि भूले हुए निशान को अब फिर से खोज लिया गया है और वापस ला दिया गया है। उन्होंने कहा कि हमारी पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान श्रीराम सूर्यवंश के थे। इसलिए हमने उसी झंडे पर सूरज का निशान भी लगाया। कमेटी दोनों निशानों को मानती है और आज आप जो झंडा देख रहे हैं, उस पर कोविदार पेड़ और सूरज के निशान की छाप है। साथ ही सूरज के निशान के चारों ओर उन्होंने एक क्रिएटिव डिजाइन बनाया और ओम लिखा। उन्हें बेहद खुशी है।

यज्ञ मंडप की वेदी पर प्रतिष्ठित दो धर्म ध्वज का विशेष मंत्रों से पूजन

ध्वजारोहण अनुष्ठान

प्रवीण तिवारी ● जागरण

- हजार तुलसी दल अर्पित,भगवान राम का सहस्त्र नामार्चन हुआ
- नौ हवन कुंड में यजमानों ने डाली एक लाख आहुतियां

अयोध्या: रामंदिर पर 25 नवंबर को होने वाले ध्वजारोहण के लिए चल रहे पांच दिवसीय अनुष्ठान के दूसरे दिन वेद की ऋचाओं की अनुगूंज के बीच राम मंदिर परिसर हवनकुंड में डाली गईं आहुतियों से सुवासित होता रहा। यज्ञ मंडप में नौ हवन कुंड बने हैं। शनिवार को इसमें यजमान दिनभर आहुतियां डालते रहे। पुरुषसूक्त से हवन हुआ। इससे पहले आचार्यों ने यज्ञ मंडप की वेदी पर राम मंदिर के मुख्य शिखर पर फहराई जाने वाली धर्मध्वजा का जोड़ा रखा। ध्वजा का षोडशोपचार पूजन विशेष मंत्रों से किया गया। इसमें राष्ट्र की उन्नति व विजय की कामना की गई। इसी पूजित ध्वजा को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी राम मंदिर के मुख्य शिखर पर फहराएंगे।

इससे पहले सुबह आठ बजे दूसरे दिन का अनुष्ठान प्रारंभ हुआ। इसमें एक हजार तुलसी पत्र से भगवान श्रीराम का सहस्त्र नामार्चन किया गया। यजमानों ने भगवान के चरणों में तुलसी दल अर्पित किए। प्रारंभ में आचार्यों ने पहले दिन की तरह ही भगवान गणपति का पूजन संपन्न कराया और पंचांग, षोडष मातृका पूजन के बाद अतिथि मंडप प्रवेश किया। इसके बाद योगिनी पूजन, क्षेत्रपाल पूजन, वास्तु पूजन, नवग्रह पूजन हुआ। उधर, भगवान शिव, गणेश, अन्नपूर्णा, मां दुर्गा, हनुमानजी के मंदिरों में भी ब्राह्मण जप में निमग्न रहे। सुबह ही इन देवी देवताओं की भी पूजा आरती हुई। रामभद्र वेदी पर यजमानों ने द्रव्य अर्पित कर अर्चना की।

राम मंदिर परिसर के यज्ञ मंडप में हवन करते यजमान ● सौ. : से तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट

साकेत महाविद्यालय से रामजन्मभूमि तक रोड शो करेंगे प्रधानमंत्री: दैनिक जागरण ने पहले ही संभावना व्यक्त की थी कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ध्वजारोहण करने के पहले रामनगरी में रोड शो भी कर सकते हैं। अब उसकी रूपरेखा स्पष्ट होने लगी है। पीएम के कार्यक्रम को लेकर एसपीजी पहुंच चुकी है। उनका विमान पहले एयरपोर्ट पर उतरेगा, वहां से वह हेलीकाप्टर से साकेत महाविद्यालय में बने हेलीपैड पर पहुंचेंगे। साकेत महाविद्यालय से रामजन्मभूमि तक वह सड़क मार्ग से जाएंगे। इसी अवधि में उनका रोड शो होगा।

ध्वजारोहण समारोह में वंचित वर्ग के लोगों से प्रधानमंत्री मोदी करेंगे संवाद

नरेन्द्र मिश्र ● जागरण

बाराबंकी : सर्वसमाज की अवधारणा को साकार करने के क्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अयोध्या में आयोजित होने वाले ध्वजारोहण समारोह में समाज के अंतिम व्यक्ति से सीधे संवाद करेंगे। आयोजन में विशेष आमंत्रित लोगों में किन्नर के साथ दलित, वंचित वर्ग व अघोरी समाज भी शामिल है। रामलला के दरबार से बुलावा मिलने के बाद गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले बाराबंकी सहित पूर्वी उत्तर प्रदेश के 7000 सर्व समाज के अगुआ व संत शामिल होने को तैयार हैं। अवध क्षेत्र के 13 जिलों के 1089 लोग वह हैं, जो अब अपने समाज का नेतृत्व करते हैं। मोदी के साथ विशेष अतिथि का सम्मान पाने वालों में गोड़िया, कहार, बकसोर, बारी, नाई, क्हार, कुम्हार, गड़रिया, लोधी, यादव, पथरकट, माली, धोबी समाज के मुखिया प्रमुख हैं।

ब्याज चोरी है, किराया डकैती है, और मुनाफा सिर्फ लूट का दूसरा नाम है।
- एज्रा हेवुड

हिटलर के करीबी जर्मन विचारक, अल्फ्रेड रोसेनबर्ग ने ईआरआर नामक विभाग बनाया है। इस मुहिम में हरमन गोरिंग भी शामिल है, जो हिटलर का दाहिना हाथ है। हिटलर अपने गृहनगर लिंज में एक भव्य म्यूजियम बनाना चाहता है। गोरिंग ने कहा-सब कुछ लूट लो! और ईआरआर ने सुन लिया। यहां से शुरू होती है कला की सबसे बड़ी डकैती।

कला लूट और किस्से

अंशुमान तिवारी
वरिष्ठ पत्रकार

पेरिस के संग्रहालय में हाल ही में हुई डकैती पर राष्ट्रपति मैक्रों बोले कि यह हमारे इतिहास पर हमला है। खजानों की चोरियां फिल्मों की प्रचलित थीम है, तो ऐसी असल घटनाओं की भी कोई कमी नहीं है।

लूव्र संग्रहालय में चोरी के बाद का दृश्य।

रविवार, 19 अक्तूबर, 2025। सुबह के 9.30 बजे हैं। लूव्र संग्रहालय की कांच की पिरामिड सूरज की रोशनी में चमक रही है। म्यूजियम के दक्षिणी हिस्से में सेन रिवर के किनारे वाली सड़क पर सफेद वैन आती है। इसमें चार लोग हैं। तीन आदमी नारंगी जैकेट में बाहर निकलते हैं। दो लोग इस सीढ़ी से लूव्र की दूसरी मंजिल की बालकनी पर पहुंचते हैं, जहां पहले से मरम्मत का काम चल रहा है। यह बालकनी गैलरी द'अपोलोन में खुलती है, जहां कोई कैमरा नहीं है। दोनों गैलरी में दाखिल होते हैं। एक मशीन की आवाज गूंजती है। बुलेटप्रूफ शीशा कुछ सेकंड में कट जाता है। बस चार मिनट लगा और एम्प्रेस मैरी-लुई, क्वीन मैरी-एमेली और क्वीन हॉर्टेंस और यूजिनी के पन्ना-हीरा जड़े टियारा, हार और ब्रोच आदि लेकर चोर पेरिस में गुम हो गए। फ्रांस हिल गया लूव्र की चोरी से। राष्ट्रपति मैक्रों ने कहा, यह 'हमारे इतिहास पर हमला' है।

म्यूजियम हेइस्ट या खजानों की चोरियां फिल्मों की ऐसी थीम है, जो कभी पुरानी नहीं पड़ती। म्यूजियम और महलों से माल-मत्ता चुराने की असली घटनाएं भी बहुतेरी हैं। अलबत्ता ऐसा एक ही बार हुआ, जब एक शासक ने संग्रहालयों को लूटने के लिए पूरा विभाग बना दिया। धरोहरों की इतनी बड़ी डकैती को करीब से देखने के लिए आइए टाइम मशीन में। टाइम मशीन के पाथ पर पहला पड़ाव दर्ज है-पेरिस, जुलाई, 1940। यह जुलाई, 1940 की गर्मियां हैं। नाजी बूट पेरिस की सड़कों को रौंद रहे हैं। हिटलर के करीबी जर्मन विचारक, अल्फ्रेड रोसेनबर्ग ने एक नया विभाग बनाया है। नाम है-ईआरआर यानी आइन्साट्जस्टैब रीच्सलेटर रोसेनबर्ग। नाम जटिल है, मगर मकसद है दुश्मन देशों से राजनीतिक कागजात छीनना, ताकि यहूदियों और फ्रीमेसंस के खिलाफ नात्जी प्रचार को ताकत मिल सके। रोसेनबर्ग की इस मुहिम में हरमन गोरिंग भी शामिल है, जो हिटलर का दाहिना हाथ है। गोरिंग को मालूम है कि हिटलर अपने गृहनगर लिंज में एक भव्य फ्यूहर म्यूजियम, ओपेरा हाउस और 2.5 लाख किताबों की लाइब्रेरी बनाना चाहता है। वह इसे वियना से भी अधिक भव्य बनाएगा। इसलिए ऑस्ट्रिया की सारी कला लूटकर हिटलर ने अपने पास रख ली है। गोरिंग ने कहा-अब सिर्फ कागज नहीं, सब कुछ लूट लो! और ईआरआर ने सुन लिया। अब यहां से शुरू होती है कला की सबसे बड़ी डकैती। अक्तूबर, 1940 का पेरिस। हम रोथ्सचाइल्ड परिवार के आलीशान घर के सामने हैं। जर्मन ट्रक रुकते हैं, और ईआरआर के सैनिक अब कला लूट रहे हैं। यह लूट 1944 तक चलेगी। 20,000 से ज्यादा धरोहरें लूटी जाएंगी। फ्रांस की एक-तिहाई निजी कला ज्यू द पॉम में जमा कर दी गई है। हिटलर ने एलान कर दिया है कि ये सारी कला मेरी है।

टाइम मशीन
अतीत से सुनें वर्तमान की धड़कन ■ हर पखवाड़े

टाइम मशीन अब पेरिस के ज्यू द पॉम म्यूजियम के सामने है। साल है 1942 का। ज्यू द पॉम, कभी शाही टेनिस कोर्ट था, अब नाजी लूट का गोदाम। हरमन गोरिंग यहां 1940 से 1942 तक बीस बार आ चुका है। ईआरआर का एजेंट ब्रूनो लोहसे उसके लिए खास प्रदर्शनियां लगाता है। गोरिंग 594 कृतियां अपने लिए चुनता है, मगर सबसे बेहतरीन हिटलर के लिंज म्यूजियम के लिए रखी जाती हैं।

यह 27 जुलाई, 1942 का दिन है। कोई ग्राहक नहीं है। पेंटिंग आंगन में जल रही हैं। आग की लपटें सदियों की कला निगल रही हैं। यहां एक कर्मचारी हैं रोज वेलैंड। यह सबसे छिपाकर कुछ लिखती जा रही हैं। क्या है उनके नोट्स में, यह हमें बाद में पता चलेगा। यह मई, 1945 है। हिटलर की मौत के बाद पहला सप्ताह। टाइम मशीन अब ऑस्ट्रिया की अल्टॉसी नमक खदान के सामने उतरी है। तापमान आठ डिग्री। चारों तरफ अंधेरा, सिर्फ टिमटिमाती लालटेन की रोशनी। 120 मीटर नीचे खदान में छिपा है लूटी गई यूरोपीय कला का भंडार। यहां करीब 8,000 पेंटिंग, स्केच, प्रिंट, मूर्तियां जमा हैं। घेंट ऑल्टरपीस, दुनिया की सबसे कीमती कृति, लकड़ी के बक्सों में बंद है। वर्मीर, रूबेंस, और रोथ्सचाइल्ड परिवार के गहनों का ढेर है इन बक्सों में। यही है हिटलर का खजाना, जो वह म्यूजियम के लिए जमा कर रहा था। आज रात यहां खतरा है। नाजी अधिकारी ऑगस्त ईग्रुबर ने खदान में 500 किलो के आठ बम लगा दिए हैं, जिन पर लिखा है-मार्बल मत गिराना। हिटलर का ऑर्डर था कि अगर हारे, तो सब कुछ जला देना, दुश्मनों को कुछ न मिले। स्थानीय खनिकों ने बगावत कर दी। यह चार मई, 1945 की सुबह है। मजदूरों ने जान जोखिम में डालकर बम बाहर निकाल दिए हैं और खदान के दरवाजे को उड़ा दिया है, ताकि ईग्रुबर को लगे कि सब खत्म। पांच दिन बाद अमेरिकी सेना और मॉन्यूमेंट्स मैन यहां आते हैं, और यह खजाना दुनिया के सामने आता है। लेकिन अभी ठहरिए, हम नॉयश्वानश्टाइन कैसल, बवेरिया पहुंच रहे हैं। बवेरिया के परियों की कहानी जैसा यह महल यूरोपीय लूट का दूसरा भंडार है। न्यूयॉर्क के मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम के क्यूरेटर कैप्टन जेम्स रोरिमर को यहां बेशकीमती कला और गहनों के एक बंद कमरे में ईआरआर की लैब और आर्काइव भी मिला है। अलमारियां भरी हैं तस्वीरों, कैटलॉग कार्ड्स और 21,000 चुराई गई चीजों के रिकॉर्ड से। हर चोरी हुई पेंटिंग, हर यहूदी परिवार का नाम, हर ट्रेन शिपमेंट-सब दर्ज। ईआरआर सिर्फ लूटता नहीं था, रिकॉर्ड भी रखता था। यही पुराने कागजात दुनिया भर में चोरी की कला वापस पाने का एकमात्र सुराग बनेंगे। मगर सवाल यह है कि रोरिमर को इस महल का पता किसने दिया? पेरिस की उस शाम को याद कीजिए-ज्यू द पॉम म्यूजियम की छाया में हमें रोज वेलैंड मिली थीं। रोज जर्मन बोलती थीं, पर दिल से फ्रांसीसी थीं। वह गुप्त नोटबुक में लिखतीं कि कौन-सी पेंटिंग किस ट्रेन से कहां भेजी गई। उनके नोट्स में 20,000 से ज्यादा कलाकृतियों का हिसाब था। वेलैंड के नोट्स पढ़कर क्यूरेटर रोरिमर यहां पहुंचे हैं। आप सोच रहे होंगे कि इतनी बड़ी नाजी लूट में लूव्र का म्यूजियम कैसे बच गया?

तो बैठिए टाइम मशीन में, यह किस्सा सुनते हुए हम 2025 में पहुंचते हैं। तो हुआ यूं कि लूव्र के डायरेक्टर जैक्स जूजार्ड ने 1939 में ही भांप लिया था कि नाजी आ रहे हैं। उन्होंने रोज वेलैंड को ज्यू द पॉम म्यूजियम पर तैनात कर दिया। वेलैंड को निर्देश था कि उन्हें जान पर खेल कर लूट ऑफ यूरोप की जासूसी करनी है। इधर जूजार्ड ने 1939 में लूव्र को मरम्मत के बहाने बंद कर दिया। मोनालिसा, वीनस डी मिलो, विंग्ड विक्ट्री को रातोंरात दूर चंबोर्ड के महलों में छिपा दिया गया। नाजी लूव्र आए, तो मिले खाली फ्रेम्स और प्लास्टर की बनी नकल। हिटलर की मौत के बाद रोज और जूजार्ड की मदद से लूट वापस जुटाई गई। लूव्र में अब भी 300 बेनामी पेंटिंग्स दीवार पर लटकी हैं, जिन पर लिखा है-नाजी लूट। टाइम मशीन अब लूव्र के पास लैंड कर रही है। ताजा खबर है कि चोर और संदिग्ध पकड़े गए हैं, मगर गहने नहीं मिले। क्या पता, गहने अब बचे भी हों! लूव्र बदकिस्मत है। यह हिटलर की लूट से बच गया था, मगर हर तरह की तकनीक और सुरक्षा के बीच अदना से चोर रॉयल गहने लूट ले गए।

फिर मिलेंगे अगले सफर पर...

जब बिस्तर से उठना भी काम लगे

अवमानेन महतां प्रहर्षक्रोधविस्मयैः।
तपांसि क्षयमायान्ति यशांसीव सुदुर्नयैः॥

हर्ष (उत्साह या मजाक), क्रोध या अहंकार से महापुरुषों की अवमानना करने पर साधकों का तप भी वैसे ही नष्ट हो जाता है, जैसे बुरे आचरण से व्यक्ति का यश नष्ट होता है।

क्षेमेंद्र विरचित भारतमञ्जरी (1.357)

प्रस्तुति : शास्त्री कोसलेंद्रदास

क्रिस्टीना कैरन
द न्यूयॉर्क टाइम्स

जब जिंदगी इस कदर थकावट भरी हो, तो मुमकिन है कि यह शरीर में किसी कमी की ओर इशारा कर रही हो।

पिछले बुधवार को जब मिशेला का 49वां जन्मदिन था, तो उसने खुद को उसे मनाने के लिए जबरन तैयार किया, लेकिन जब उसकी दो दोस्तों ने उसे बाहर ले जाने का ऑफर दिया, तो उसने मना कर दिया। उसने कह दिया कि 'इन सब में बहुत मेहनत लगती है, और मुझमें उतनी ऊर्जा नहीं है।'

वर्षों से उसे जिंदगी की वे चीजें अच्छी नहीं लग रही थीं, जो पहले उसे खुशी देती थीं। अब वह उन्हें करने की इच्छा भी बहुत कम महसूस करती थी। इस स्थिति को एन्हेडोनिया कहा जाता है। एनवाईयू ग्रॉसमैन स्कूल ऑफ मेडिसिन में असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. जूडिथ एफ जोसेफ ने कहा कि एन्हेडोनिया मानसिक बीमारी का एक आम व शांत लक्षण है। उन्होंने कहा कि ज्यादातर लोग इससे परिचित नहीं होते, लेकिन उन्हें होना चाहिए। यह मेजर डिप्रेशन डिसऑर्डर के मुख्य लक्षणों में से एक है, और यह दूसरी बीमारियों से भी जुड़ा है। हाल के वर्षों में, मेंटल हेल्थ के डॉक्टर इसे खुशी पाने के लिए प्रेरणा की कमी से भी जोड़ते हैं। जो खाना कभी बहुत अच्छा लगता था, अब बोरिंग लग सकता है।

एन्हेडोनिया वाले व्यक्ति के लिए बिस्तर से उठना भी एक काम जैसा लग सकता है। यह अवसाद की तरह लग सकता है, लेकिन अवसाद के बगैर भी एन्हेडोनिया होना संभव है।

एन्हेडोनिया पीड़ित कुछ लोगों को सामान्य से कम खुशी महसूस हो सकती है, तो दूसरों को बिल्कुल भी नहीं। और अगर इस पर ध्यान नहीं दिया गया, तो यह मिजाज, नींद और पोषण को नुकसान पहुंचा सकता है। वैज्ञानिक अब भी इसके असली कारणों का पता लगाने में जुटे हैं। शोध से पता चलता है कि यह कुछ हद तक दिमाग में मौजूद कुछ न्यूरोट्रांसमीटर, यानी रासायनिक संदेशवाहक की गतिविधि में बदलाव की वजह से हो सकता है।

कुछ सबूत बताते हैं कि ऐसी परेशानी आनुवंशिक कारणों से हो सकती है, जबकि इसके भी साक्ष्य हैं कि गरीबी में रहने या भेदभाव सहने जैसे लंबे समय तक चलने वाले बेकाबू तनाव से भी एन्हेडोनिया हो सकता है। इसके इलाज के लिए खास तौर पर कोई दवा मंजूर नहीं है, पर अगर आपको डिप्रेशन है, तो उसका इलाज करवाने से इसके लक्षणों में सुधार हो सकता है। पूरी नींद लेना और नियमित व्यायाम करना भी जरूरी है। बिहेवियरल एक्टिवेशन नामक थेरेपी भी पीड़ितों के लिए असरदार हो सकती है। डॉ. जोसेफ कहती हैं कि जिन्हें लगता है कि उन्हें एन्हेडोनिया हो सकता है, वे किसी मेंटल हेल्थ प्रोफेशनल से बात करें। खुशी कोई विलासिता की वस्तु नहीं, बल्कि जरूरत है।

©The New York Times 2025

अध्ययन कक्ष

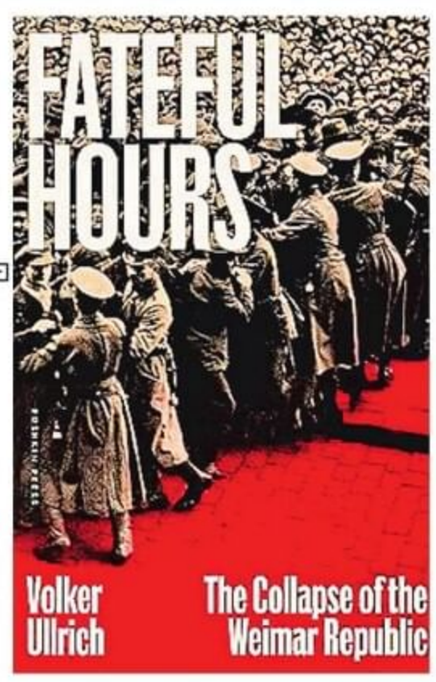

फेटफुल ऑवर्स: द कोलैप्स ऑफ द वाइमर रिपब्लिक

लेखक : वोल्कर उलरिच

प्रकाशक : नॉर्टन एंड कंपनी
मूल्य : 3,199 रुपये (हार्डकवर)

क्या हिटलर को रोका जा सकता था

पिछले महीने प्रकाशित यह बेस्टसेलर किताब जर्मनी में नाजी शासन के उदय की कहानी है। यह तब का बारीक अध्ययन है, जब हिटलर का उदय नहीं हुआ था, लेकिन वैसी परिस्थितियां पैदा हो गई थीं, जिनमें उसका उदय रोका जा सकता था।

लोकतंत्र नाजुक होते हैं। इसे जितनी स्पष्टता से वाइमर गणतंत्र की विफलता दर्शाती है, उतनी स्पष्टता से बहुत कम ऐतिहासिक घटनाएं ही दर्शा पाती हैं। प्रतिष्ठित इतिहासकार वोल्कर उलरिच की चर्चित पुस्तक *फेटफुल ऑवर्स* विश्व इतिहास की सबसे महान घटनाओं में से एक की कहानी कहती है-जर्मनी के पहले लोकतंत्र की विफलता, जिसकी परिणति नाजी शासन के भयावह उदय के रूप में हुई।

इस दिलचस्प पुस्तक में उन्होंने जर्मन लोकतंत्र के पतन में योगदान देने वाले विफल विकल्पों व छूटे हुए अवसरों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। वह लिखते हैं कि वाइमर गणराज्य में राजनीतिक हत्या आम थी। फिर भी, उलरिच का तर्क है कि न केवल वाइमर गणराज्य अपनी प्रारंभिक चुनौतियों से बच गया, बल्कि इसका पतन कभी भी अपरिहार्य नहीं था, यहां तक कि जनवरी 1933 तक भी नहीं, जब एडोल्फ हिटलर चांसलर बना था। उलरिच पीटर गे, एरिक वाइट्ज और हेराल्ड जाहनर जैसे कई विद्वानों के पदचिह्नों पर चलते हैं, जिन्होंने वाइमर पर अपनी नजरें गड़ा रखी हैं। उलरिच 1919 में जर्मनी की पहली लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना से लेकर हिटलर के चांसलर बनने तक की राजनीतिक चालबाजियों को उजागर करते हैं। वह *फेटफुल ऑवर्स* में लिखते हैं कि यह तय करना हमारे हाथ में है कि लोकतंत्र विफल होगा या बचेगा। जर्मन लोकतंत्र के पहले राष्ट्रपति, फ्रेडरिक एबर्ट, वामपंथी थे। उनके सोशल डेमोक्रेट्स को अप्रत्याशित गठजोड़ के लिए मजबूर होना पड़ा। 1925 तक एबर्ट की मृत्यु हो चुकी थी, और पॉल वॉन हिंडनबर्ग, चुनावों में विजयी हो चुके थे। यह हिंडनबर्ग ही थे, जिन्होंने बेमन से हिटलर को चांसलर नियुक्त किया था। उलरिच ने इस भयावह परिणाम के चश्मदीद गवाहों के समूह का उल्लेख किया है, जिनमें प्रसिद्ध डायरी लेखक विक्टर क्लेम्परर और सेबेस्टियन हाफनर भी शामिल हैं, जिनका संस्मरण *डिफाइंग हिटलर* उस दौर की उत्कृष्ट कृतियों में से एक है। जर्मनी की राजनीति पर बारीकी से ध्यान केंद्रित करके लेखक पाठक को नाजीवाद के चरण-दर-चरण निर्माण का विवरण प्रस्तुत करते हैं, और उन सभी क्षणों को बताते हैं, जब इसे रोका जा सकता था, लेकिन नहीं रोका गया। उलरिच जोर देकर कहते हैं कि इतिहास कुछ लोगों द्वारा तय किया जाता है, हालांकि ऐसे लोगों के बारे में वह बहुत कम जानकारी देते हैं।

उलरिच के बारीक राजनीतिक विवरण से स्पष्ट होता है कि कितना कुछ संयोग व भाग्य से तय होता था। उदाहरण के लिए, 1932 में ब्रुनिंग कैबिनेट को भंग करने का हिंडनबर्ग का फैसला ऐसे वक्त में आया, जब जर्मन अर्थव्यवस्था खस्ताहाल थी, और कट्टरपंथी नेशनल सोशलिस्ट पार्टी जनता के बीच उतनी प्रभावशाली नहीं थी। पुस्तक में लेखक ने सत्तावादी विनाश का रोडमैप बेहद भयावह विवरण के साथ पेश किया है और यह रणनीति बेहद जानी-पहचानी है।

जानना जरूरी है
संस्कृति के पन्नों से

आशुतोष गर्ग
लेखक एवं अनुवादक

ब्रह्मा जी कोई साधारण देव नहीं, अपितु स्वयं परमात्मा हैं, जो निराकार, सर्वव्यापक व सृष्टि के आदि कारण भी हैं। यद्यपि उनका कोई रूप या वर्ण नहीं है, पर जब वह सृष्टि की रचना करते हैं, तो उन्हें 'ब्रह्मा' कहा जाता है।

ब्रह्मा जी ने कैसे की सृष्टि की रचना

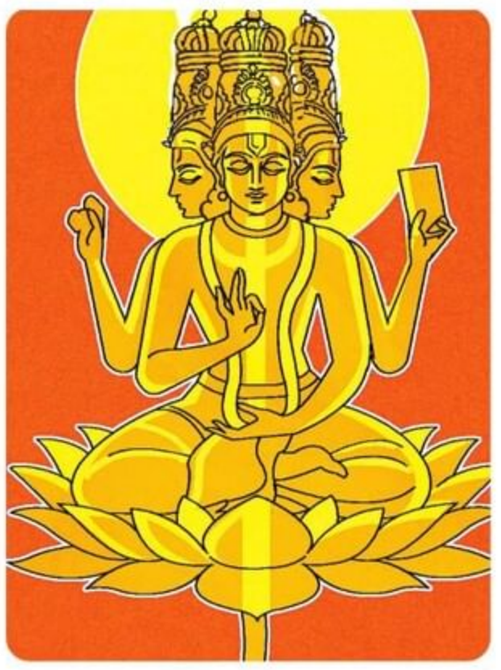

एक बार भीष्म ने पुलस्त्य ऋषि से पूछा, 'भगवन! कृपा करके बताइए कि जब सृष्टि का प्रारंभ हुआ, तब भगवान ब्रह्मा ने किस स्थान पर रहकर देवताओं व अन्य प्राणियों की रचना की थी?' भीष्म का प्रश्न सुनकर पुलस्त्य ऋषि मुस्कराए और बोले, 'भीष्म! भगवान ब्रह्मा कोई साधारण देव नहीं, अपितु स्वयं परमात्मा हैं, जो निराकार, सर्वव्यापक और सृष्टि के आदि कारण भी हैं। यद्यपि उनका कोई रूप या वर्ण नहीं है, फिर भी जब वह सृष्टि की रचना करते हैं, तो उन्हें 'ब्रह्मा' कहा जाता है।'

धूप आने दो

पुलस्त्य ऋषि ने आगे कहा कि सृष्टि के आरंभ में, जब ब्रह्मा जी विष्णु जी की नाभि से उत्पन्न हुए कमल से प्रकट हुए, तब उन्होंने सबसे पहले महत्तत्व की रचना की। इसी से तीन प्रकार का अहंकार सात्विक, राजस और तामस उत्पन्न हुआ, जिससे फिर क्रमशः ज्ञानेंद्रियों, कर्मेंद्रियों और पंचमहाभूतों की उत्पत्ति हुई।

पांच भूत हैं-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। पहले तामस अहंकार से विकृत होकर शब्द तन्मात्रा उत्पन्न हुई, जिससे आकाश बना। आकाश ने स्पर्श तन्मात्रा को जन्म दिया, जिससे वायु बनी। वायु ने रूप तन्मात्रा को उत्पन्न किया, जिससे तेज (अग्नि) प्रकट हुआ। अग्नि से रस तन्मात्रा बनी, जिससे जल की उत्पत्ति हुई, और जल से गंध तन्मात्रा उत्पन्न होकर पृथ्वी बनी। इस प्रकार आकाश का गुण शब्द, वायु का स्पर्श, अग्नि का रूप, जल का रस व पृथ्वी का गंध है।

● फिर राजस अहंकार से दस इंद्रियां बनीं-पांच ज्ञानेंद्रियां व पांच कर्मेंद्रियां। कान, त्वचा, नेत्र, जिह्वा और नासिका ज्ञानेंद्रियां कहलाती हैं। ये हमें शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गंध का अनुभव कराती हैं।

पांच कर्मेंद्रियां वाक, हाथ, पैर, गुदा व उपस्थ हैं, जिनसे क्रमशः बोलना, कर्म करना, चलना, मलत्याग और मैथुन के कार्य संपन्न होते हैं।

इनके अधिष्ठाता देवता सात्विक अहंकार से उत्पन्न हुए। इन पंचमहाभूतों में प्रत्येक भूत में पूर्ववर्ती तत्व का गुण विद्यमान रहता है-जैसे वायु में शब्द और स्पर्श, अग्नि में शब्द, स्पर्श व रूप, जल में शब्द, स्पर्श, रूप तथा रस, एवं पृथ्वी में सबके साथ गंध भी होती है। यही इन पंचमहाभूतों की विशेषता है। शुरुआत में ये सभी भूत अलग-अलग थे और प्रजाओं की उत्पत्ति करने में असमर्थ थे। तब परम पुरुष ने उनमें प्रवेश किया। जैसे दीपक में तेल और बाती एक होकर ज्योति उत्पन्न करते हैं, वैसे ही परमात्मा ने इन तत्वों में एकता स्थापित की। इन तत्वों के संयोग से ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई, जो एक विशाल अंड था। यह अंड दस गुने अधिक तामस अहंकार से आवृत्त था। भूतादि महत्तत्व से घिरा था तथा महत्तत्व भी अव्यक्त (प्रधान या मूल प्रकृति) के द्वारा आवृत था। यही संपूर्ण जगत का आधार बनी। फिर उस अंड से ब्रह्मा जी प्रकट हुए, जिन्होंने सृष्टि का कार्य प्रारंभ किया। वही सत्त्वगुण धारण करके विष्णु कहलाते हैं और सृष्टि की रक्षा करते हैं। जब रजोगुण में प्रवृत्त होते हैं, तो ब्रह्मा बनकर सृष्टि की रचना करते हैं। और तमोगुण प्रधान होकर रौद्र रूप धारण करके संहारक शिव कहलाते हैं। कल्प के अंत में जब सभी प्राणियों का विनाश होता है, तब वही विष्णु रौद्र रूप धारण करके ब्रह्मांड को जलमग्न कर देते हैं। फिर शेषनाग की शय्या पर योगनिद्रा में शयन करते हैं। समय आने पर वह पुनः जागते हैं, ब्रह्मा के रूप में कमल से प्रकट होते हैं और नई सृष्टि का आरंभ करते हैं।

इस प्रकार एक ही परमेश्वर तीन रूपों में प्रकट होकर सृष्टि की रचना, उसका पालन और संहार करते हैं। वही पृथ्वी हैं, वही जल, वही अग्नि, वायु और आकाश। वही सब भूतों में, देवताओं में, मनुष्यों में और समस्त प्राणियों में विराजमान हैं। अतः सृष्टि का मूल, पालनकर्ता और उसे समेटने वाला एक ही है, वही विष्णु, वही ब्रह्मा, वही महेश्वर हैं, जो अनादि, अनंत और विश्वरूप हैं।

निजी स्कूलों में नर्सरी दाखिलों का इंतजार खत्म, चार से शुरू होगी दौड़

शिक्षा निदेशालय ने प्रक्रिया को लेकर दिशानिर्देश किए जारी, सामान्य श्रेणी के लिए 27 दिसंबर तक आवेदन

नई दिल्ली। दिल्ली के 1700 निजी स्कूलों में नर्सरी, केजी व पहली कक्षा में दाखिले की प्रक्रिया जल्द शुरू होगी। शैक्षणिक सत्र 2026-27 में सामान्य श्रेणी (75 फीसदी ओपन सीट) के लिए दाखिले की दौड़ चार दिसंबर से शुरू होने जा रही है। जबकि आवेदन फॉर्म 27 दिसंबर तक जमा कर सकेंगे।

शिक्षा निदेशालय ने दाखिला-आवेदन प्रक्रिया को लेकर दिशानिर्देश जारी कर दिए हैं। फिलहाल आवेदन प्रक्रिया ओपन सीटों के लिए शुरू हो रही है। आर्थिक पिछड़े वर्ग व वंचित वर्ग की 25 फीसदी सीटों के लिए अलग से बाद में गाइडलाइंस जारी की जाएंगी।

निजी स्कूलों में सामान्य श्रेणी की सीटों पर आवेदन करने के लिए अभिभावकों को 24 दिन का समय मिलेगा। शिक्षा निदेशक वेदिथा रेड्डी की ओर से जारी की गई गाइडलाइंस के अनुसार अभिभावक स्कूलों में 27 दिसंबर तक फॉर्म जमा करा सकेंगे। उन्हें अपने दाखिला मानक व मानकों के लिए निर्धारित अंक निदेशालय की वेबसाइट पर 28 नवंबर तक अपलोड करने होंगे।

निजी स्कूल दाखिले के लिए मानक स्वयं तैयार कर सकेंगे। स्कूलों को गाइडलाइंस में दिए गए शेड्यूल को ही स्वीकार करना होगा, वह इसमें किसी प्रकार का बदलाव नहीं कर सकते हैं। स्कूलों को यह सुनिश्चित करना होगा कि आवेदकों को अंतिम तिथि 27 दिसंबर तक फॉर्म उपलब्ध हो। निर्देशों में स्पष्ट किया गया है कि स्कूल अभिभावकों से प्रवेश पंजीकरण शुल्क के रूप में केवल 25 रुपये ही लेंगे।

खुद दाखिला मानक बना सकेंगे स्कूल

स्कूल दाखिले के लिए खुद से मानक तय करेंगे। सौ अंकों के प्वाइंट सिस्टम में सिबलिंग नेबरहुड, एलुमिनी, एकल अभिभावक जैसे मानक स्कूल शामिल कर सकते हैं। हर साल की तरह स्कूल एक बार फिर से घर से स्कूल की दूरी (पड़ोस) को मानकों में प्राथमिकता दे सकते हैं। स्कूलों को निर्देशित किया गया है कि वह जो भी मानक तय करें वह भेदभाव रहित व पारदर्शी होने चाहिए।

■ **मॉनिटरिंग सेल से रखी जाएगी नजर :** हर जिले में जिला उपशिक्षा निदेशक की अध्यक्षता में एक मॉनिटरिंग सेल का गठन किया जाएगा। यह सेल इस बात को सुनिश्चित करेंगे कि हर निजी स्कूल शिक्षा निदेशालय के ऑनलाइन मॉड्यूल पर दाखिला मानक और उनको दिए गए अंकों को अपलोड करेंगे। सेल में अभिभावकों की ग्रीवांस का निपटारा भी किया जाएगा।

नर्सरी दाखिले का शेड्यूल

आवेदन शुरू होने की तिथि	4 दिसंबर
आवेदन की अंतिम तिथि (सामान्य श्रेणी)	27 दिसंबर
आवेदन करने वालों की सूची	9 जनवरी
बच्चों की अंकों के साथ सूची	16 जनवरी
पहली सूची (प्रतीक्षा सूची के साथ)	23 जनवरी
अभिभावकों की समस्या का समाधान	24 जनवरी से 3 फरवरी
दूसरी सूची (प्रतीक्षा सूची के साथ)	9 फरवरी
अभिभावकों की समस्या का समाधान	10-16 फरवरी
यदि अन्य कोई सूची जारी करनी हो	5 मार्च
दाखिला प्रक्रिया समाप्त करने की तिथि	19 मार्च

गाइडलाइंस के प्रमुख बिंदु

- स्कूल फॉर्म के लिए केवल 25 रुपये वसूलेंगे। प्रोस्पेक्टस खरीदना अनिवार्य नहीं है।
- स्कूल अभिभावकों से कैपिटेशन फीस या डोनेशन नहीं वसूल सकते।
- नर्सरी (बालवाटिका-प्री स्कूल) के लिए आयु न्यूनतम तीन साल व अधिकतम चार वर्ष, केजी के लिए चार वर्ष से पांच वर्ष तक व पहली कक्षा के लिए पांच वर्ष से 6: वर्ष तक होना जरूरी है।
- **आवास पते के रूप में यह दस्तावेज होंगे मान्य :** अभिभावक का राशन कॉर्ड, बच्चे व अभिभावक का डोमिसाइल प्रमाणपत्र, अभिभावक का वोटर आई-कार्ड, बिजली-पानी का बिल, बच्चे का पासपोर्ट, माता या पिता का आधार कार्ड

कैंपस डायरी

वीआईटी वेल्लोर को सातवां स्थान

नई दिल्ली (वि)। वेल्लोर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (वीआईटी), वेल्लोर ने क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग : सस्टेनेबिलिटी 2026 में भारत में 7वां और वैश्विक स्तर पर 352वां स्थान प्राप्त कर उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। एनवायरनमेंटल इंपैक्ट कैटेगरी (ईआईसी) में वीआईटी ने वैश्विक स्तर पर 194वां स्थान प्राप्त किया है। वीआईटी के चांसलर डॉ. जी विश्वनाथन ने बताया कि सस्टेनेबिलिटी श्रेणी में संस्थानों का मूल्यांकन आठ प्रदर्शन मानदंडों के आधार पर किया जाता है। इनमें समानता, ज्ञान का आदान-प्रदान, शिक्षा का प्रभाव, रोजगार और अवसर, स्वास्थ्य और कल्याण, पर्यावरणीय स्थिरता, पर्यावरणीय शिक्षा, पर्यावरणीय अनुसंधान और सामाजिक प्रभाव शामिल हैं। वीआईटी ने कुल मिलाकर 74.9 अंक प्राप्त किए हैं। विवि ने विशेष रूप से सामाजिक प्रभाव, पर्यावरणीय प्रभाव और शासन की तीन श्रेणियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। विवि ने सस्टेनेबिलिटी रैंकिंग 2025 में वैश्विक स्तर पर 396वें स्थान से 2026 में 352वें स्थान पर, यानी 44 स्थानों की ऊपर की छलांग लगाई है।

स्कूलों के नाम सीएमश्री करना अपमानजनक

नई दिल्ली। दिल्ली में स्कूलों के नाम बदलने को लेकर आप और भाजपा सरकार के बीच राजनीतिक टकराव तेज हो गया है। आप ने संविधान दिवस 26 नवंबर को उन सभी स्कूलों पर दोबारा डॉ. बाबा साहब आंबेडकर स्कूल ऑफ एक्सीलेंस का बोर्ड लगाने की घोषणा की है जिनका नाम बदलकर सीएम श्री स्कूल किया गया है। शनिवार को आप कौंसिल से विधायक कुलदीप कुमार ने भाजपा सरकार पर दलित समाज व आंबेडकर का अपमान करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि केजरीवाल सरकार ने दिल्ली के 69 स्कूल ऑफ एक्सीलेंस को बाबा साहब के नाम पर समर्पित किया था लेकिन भाजपा सरकार ने इन स्कूलों से उनका नाम हटाकर सीएम श्री कर दिया जो अपमानजनक है। ब्यूरो

जॉब मेले की तैयारी में जुटा डीयू

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए नए साल में नौकरी पाने के दरवाजे एक बार फिर से खुलेंगे। डीयू प्लेसमेंट सेल आगामी जनवरी में बड़े स्तर पर जॉब मेला आयोजित करने की तैयारी कर रहा है। इस मेले के लिए 23 कंपनियां अपनी सहमति दे चुकी हैं। चूंकि अभी मेला आयोजित होने में एक माह से ज्यादा का समय है, ऐसे में कंपनियों की संख्या बढ़ने की उम्मीदें हैं। ब्यूरो

सभी आईआईटी में 1 दिसंबर से शुरू होगा कैंपस प्लेसमेंट

आईआईटी दिल्ली, मद्रास, बीएचयू, कानपुर, गुवाहाटी, रुड़की समेत दिग्गज संस्थानों की तैयारियां पूरी, छात्रों का तनाव काउंसलिंग से किया जा रहा दूर

सीमा शर्मा

नई दिल्ली। आईआईटी दिल्ली, बॉम्बे, कानपुर, मद्रास, खड़गपुर, बीएचयू, रुड़की, गुवाहाटी समेत अन्य दिग्गज भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आईआईटी) में एक दिसंबर से कैंपस प्लेसमेंट सत्र शुरू होने जा रहा है। इसमें दिन-रात कंपनियां छात्रों के इंटरव्यू लेंगी। देश के दिग्गज प्रौद्योगिकी संस्थानों में कैंपस प्लेसमेंट एक दिसंबर से शुरू होकर मई तक चलेगा। दो चरणों में चलने वाले कैंपस प्लेसमेंट सत्र में देशी-विदेशी आईटी, मैनेजमेंट, इंजीनियरिंग, एनालॉटिक्स, फाइनेंस क्षेत्रों की कंपनियां टैलेंट के आधार पर भारतीय छात्रों का चयन करेंगी।

आईआईटी दिल्ली, बीएचयू, गुवाहाटी, मद्रास समेत अन्य आईआईटी के कैंपस प्लेसमेंट अधिकारियों का कहना है कि एक दिसंबर को कैंपस प्लेसमेंट का पहला सत्र शुरू होगा। आईआईटी प्रबंधन को उम्मीद है कि कैंपस प्लेसमेंट के पहले ही दिन पहले ही राउंड में लाखों-करोड़ों रुपये के पैकेज के साथ छात्रों को ऑफर मिलने शुरू हो जाएंगे। इस कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव में छात्रों को प्लेसमेंट ऑफर के अलावा प्री-प्लेसमेंट ऑफर भी शामिल होंगे। कई छात्रों को कई कंपनियों (मल्टीपल ऑफर) की ओर से एक साथ कई ऑफर भी मिल सकते हैं।

इंटरव्यू का तनाव कम करने पर फोकस

आईआईटी प्रबंधन का कैंपस प्लेसमेंट से पहले छात्रों के तनाव को दूर करने पर फोकस है। इसके लिए काउंसलिंग, थेरेपी सत्र चल रहे हैं। इसके अलावा मेंटल हेल्थ और उनके हेल्दी खाने पर फोकस किया गया है। प्लेसमेंट राउंड के लिए कई दिनों से तैयारियां चल रही है। छात्रों की कमियों को दूर करने के लिए विशेष काउंसलिंग भी कराई जा चुकी है, ताकि इंटरव्यू में किसी प्रकार की कोई कमी न रह जाए। हिंदी और गैर-हिंदी राज्यों के छात्रों के लिए विशेष प्रशिक्षण सत्र भी चलाए गए हैं, ताकि इंग्लिश भाषा किसी प्रकार से कैंपस प्लेसमेंट में बाधा न बन सके।

आईटी सेक्टर में लगातार बढ़ रही मांग

■ आईआईटी कैंपस प्लेसमेंट में लगातार आईटी सेक्टर टॉप पर चल रहा है। आईटी सेक्टर में सबसे अधिक रोजगार के मौके उपलब्ध होने के कारण सबसे अधिक छात्रों को आईटी कंपनियों की ओर से ऑफर लेटर मिलते हैं। एक अनुमान के मुताबिक, 35 से 32 फीसदी तक आईटी, इंजीनियरिंग के कोर एरिया में 29 से 31 फीसदी, मैनेजमेंट में 10 से 11 फीसदी, कंसल्टेंसी में 14 से 15 फीसदी, एनालॉटिक्स में 9 से 10 फीसदी तो फाइनेंस में चार से पांच फीसदी को रोजगार मिलने की उम्मीद है।

यह कंपनियां रहेंगी खास : *ब्लूमबर्ग लंदन, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, सैमसंग, एडोब, वॉलमार्ट, बोस्टन, मैकेंजी, गोल्डमैन सॉक्स स्प्रिंकलर, पेटीएम, अमेजन, फेसबुक, इसरो, फ्लिपकार्ट, क्वालकॉम, रिलायंस जियो, कैपजेमिनी, विस्कांडिया, सेरामिक एडवर्ब, एलएंडटी आदि कंपनियां प्लेसमेंट के लिए आने वाली हैं। छात्रों को विदेशी कंपनियों के साथ भारत समेत हांगकांग, जापान, मिडिल-ईस्ट, नॉर्थलैंड, साउथ कोरिया, ताइवान, यूएस आदि देशों में काम करने का मौका मिल सकता है।*

जेएनयू लाइब्रेरी मामले में दंडात्मक कार्रवाई की मांग

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) जेएनयू ने डॉ. बीआर अंबेडकर सेंट्रल लाइब्रेरी में छात्र संघ के नेतृत्व में फेस रिकॉग्निशन सिस्टम उखाड़ने की घटना की निंदा की है। साथ ही प्रशासन से कठोर दंडात्मक कार्रवाई की मांग की है। एबीवीपी के अनुसार वामपंथी नेतृत्व वाले छात्र संघ का एकमात्र उद्देश्य विश्वविद्यालय के माहौल को अशांत और छात्रों के शैक्षणिक अधिकारों को बलपूर्वक बाधित करना है। लाइब्रेरी की प्रवेश व्यवस्था को तोड़ना शर्मनाक और अराजकता है।

एबीवीपी जेएनयू अध्यक्ष मयंक पंचाल ने कहा कि प्रशासन को इस घटना पर न केवल तत्काल संज्ञान बल्कि लाइब्रेरी परिसर की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करते हुए जिम्मेदार तत्वों की पहचान कर कठोरतम कार्रवाई करनी चाहिए। वामपंथियों की यह हरकत सीधे-सीधे छात्रों के अधिकारों का हनन है। ऐसे उपद्रवियों को विश्वविद्यालय के भीतर शैक्षणिक संसाधनों और राजनीतिक पदों तक किसी भी प्रकार की पहुंच नहीं मिलनी चाहिए। एबीवीपी हमेशा इस बात पर जोर देती है कि किसी भी नीति या व्यवस्था को लागू करते समय छात्रों की राय को प्राथमिकता दी जाए। लेकिन संवाद की कमी का समाधान हिंसा नहीं है। यह बात वामपंथी संगठनों को समझनी चाहिए।

एबीवीपी जेएनयू मंत्री प्रवीण पीयूष ने कहा कि छात्रों के अधिकारों, उनकी सुरक्षा और अध्ययन-अनुकूल वातावरण के लिए हमेशा संघर्षरत रहेगी। वामपंथी तत्वों द्वारा की गई यह हिंसा सिर्फ एक गेट या मशीन की तोड़फोड़ नहीं है बल्कि यह विश्वविद्यालय की पहचान, उसकी शैक्षणिक परंपरा और छात्रों के भविष्य पर हमला है। इस घटना में शामिल सभी लोगों की पहचान कर उनके विरुद्ध कठोर दंडात्मक कार्रवाई की जाए। साथ ही भविष्य में प्रशासन ऐसी किसी भी व्यवस्था को लागू करने से पहले औपचारिक रूप से पूरे छात्र समुदाय से संवाद स्थापित करे। विश्वविद्यालय को राजनीतिक अराजकता का नहीं बल्कि ज्ञान, शोध और शैक्षणिक स्वतंत्रता का केंद्र बने रहना चाहिए और इसके लिए हिंसा करने वाले समूहों पर निर्णायक कार्यवाही समय की मांग है।

लाइब्रेरी में तोड़फोड़ के मामले की रिपोर्ट कुलगुरु को सौंपी

जेएनयू की डॉ. बीआर अंबेडकर सेंट्रल लाइब्रेरी में फेस रिकॉग्निशन सिस्टम उखाड़ फेंकने के मामले में सोमवार को उच्चस्तरीय बैठक बुलाई गई है। एक अधिकारी से मिली जानकारी के अनुसार पूरे मामले की रिपोर्ट जेएनयू कुलगुरु और प्रॉक्टर को सौंप दी गई है। इस तोड़फोड़ से करीब 15-20 लाख रुपये का नुकसान पहुंचा है। छात्रों की इस अराजकता को स्वीकार नहीं किया जाएगा। दरअसल, शुक्रवार को जेएनयू छात्र संघ के नेतृत्व में छात्रों ने लाइब्रेरी के प्रवेश द्वार पर लगे फेस रिकॉग्निशन सिस्टम को उखाड़कर फेंक दिया था। इस दौरान छात्र संघ के पदाधिकारी भी मौजूद थे। बता दें कि जेएनयू सेंट्रल लाइब्रेरी में बाहरी प्रवेश को रोकने के लिए फेस रिकॉग्निशन सिस्टम लगाया गया था। अगस्त में लाइब्रेरी के रीडिंग रूम में टेबल पर जातिसूचक व आपत्तिजनक शब्द लिखने का मामला सामने आया था। इसके बाद लाइब्रेरी में फेस रिकॉग्निशन सिस्टम लगाने की कवायद शुरू हो गई थी। उस समय भी लाइब्रेरी में खूब तोड़फोड़ व हंगामा हुआ था।

देश

न्यूज डायरी

सांबा में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर पाकिस्तानी ड्रोन की घुसपैठ

सांबा। सांबा में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर अग्रिम क्षेत्र में एक पाकिस्तानी ड्रोन देखा गया। शुक्रवार देर रात पाकिस्तान के चक भूरा पोस्ट से आते हुए देखा गया यह ड्रोन घगवाल इलाके के रीगाल गांव के ऊपर कुछ मिनट तक मंडराता रहा और फिर सीमा पार लौट गया। सेना ने चौकसी बढ़ा दी है। संवाद

दुर्घटनावश गोली चलने से अग्निवीर की गई जान

पुंछ। मेंढर में दुर्घटनावश गोली चलने से सेना के एक अग्निवीर जवान की मौत हो गई। इसकी पहचान सेना की 18 कुमांउ रेजिमेंट का अग्निवीर दीपक पुत्र शिवराज जिला चंपावत उत्तराखंड के रूप में हुई है। इस घटना के बाद सेना व पुलिस की तरफ से जांच शुरू कर दी है। संवाद

सेना ने शिविर में किए आंखों के 400 ऑपरेशन

नई दिल्ली/ उधमपुर। सेना ने जम्मू-कश्मीर के उधमपुर स्थित अपने कमांड हॉस्पिटल में आंखों का विशेष शिविर लगाया और तीन दिन में 400 ऑपरेशन किए। इस दौरान आंखों की समस्याओं से जूझ रहे दो हजार से अधिक मरीजों की जांच भी की गई। इस मुहिम को ऑपरेशन दृष्टि नाम दिया गया। संवाद

यूपी से घुसपैठिये भेजे जाएंगे वापस...बनेंगे डिटेंशन सेंटर

सीएम योगी का सभी डीएम को घुसपैठियों पर कड़ी कार्रवाई का निर्देश

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सभी जिलाधिकारियों को अवैध घुसपैठियों पर त्वरित और सख्त कार्रवाई का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की कानून व्यवस्था, राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक समरसता सर्वोच्च प्राथमिकता है और किसी भी प्रकार की अवैध गतिविधि को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। प्रत्येक जिला प्रशासन अपने क्षेत्र में रहने वाले अवैध घुसपैठियों की पहचान सुनिश्चित कर नियमानुसार कार्रवाई करे।

सीएम ने यह निर्देश भी दिया है कि घुसपैठियों को रखने के लिए प्रत्येक जिले में अस्थाई डिटेंशन सेंटर बनाए जाएं। इन केंद्रों में विदेशी नागरिकता वाले अवैध रूप से भारत आए लोगों को रखा जाएगा और आवश्यक सत्यापन की प्रक्रिया पूरी होने तक वहीं ठहराया जाएगा। डिटेंशन सेंटर में रखे गए अवैध घुसपैठियों को तय प्रक्रिया के तहत उनके मूल देश भेजा जाएगा।

इन राज्यों में की जा रही कार्रवाई

बता दें कि महाराष्ट्र, असम और उत्तराखंड समेत कई राज्यों में अवैध घुसपैठियों को वापस उनके देश भेजने की कार्रवाई की जा रही है। महाराष्ट्र से अब तक एक हजार से अधिक घुसपैठियों को वापस भेजा जा चुका है। इसी तरह उत्तराखंड में भी 18 बांग्लादेशी घुसपैठियों को गिरफ्तार करने के बाद डिपोर्ट किया जा चुका है। वहीं दिल्ली में भी घुसपैठियों पर कार्रवाई जारी है।

200 बांग्लादेशी और रोहिंग्या हुए गिरफ्तार बीते आठ साल में

बता दें कि यूपी में बीते आठ साल के दौरान करीब 200 बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठियों को यूपी एटीएस द्वारा गिरफ्तार किया गया है। इसके अलावा जिलों की पुलिस भी कार्रवाई करती रहती है। बाद में इनको वापस भेजने की कवायद भी होती है, हालांकि न्यायिक प्रक्रिया पूरी करने में ज्यादा समय लग जाता है। अधिकतर खुद को पश्चिम बंगाल और असम का निवासी बताते हैं।

अधिकतर खुद को पश्चिम बंगाल और असम का निवासी बताते हैं

भारतीय नागरिकता भी आसानी से कर लेते हैं हासिल

■ घुसपैठ करने के बाद वह भारतीय नागरिकता के दस्तावेज भी आसानी से हासिल कर लेते हैं। जिसकी वजह से पुलिस को उनके मूल पते से सत्यापन कराना पड़ता है। अब सीएम के निर्देश के बाद यह प्रक्रिया तेजी से पूरी करके उनको पश्चिम बंगाल और आसाम की सीमा से वापस भेजा जाएगा।

2019 के सर्वे में थे 10 लाख बांग्लादेशी और तीन हजार रोहिंग्या

■ वर्ष 2019 में सीएम के निर्देश के बाद हुए सर्वे में प्रदेश में करीब 10 लाख बांग्लादेशी और तीन हजार रोहिंग्या घुसपैठिए होने का अनुमान लगाया था। केवल लखनऊ में ही करीब एक लाख बांग्लादेशी नागरिकों के होने के प्रमाण मिले थे।

तेलंगाना, राजस्थान मेवात के 21 जमाती मिले, पूछताछ की गई

मुजफ्फरनगर। बुढ़ाना के मदरसे में पढ़े दो युवकों के गुजरात में पकड़े जाने के बाद से जिला पुलिस अलर्ट हो गई है। गांव आदमपुर व बसीकलां में बाहरी लोगों की सूचना पर एसपी देहात आदित्य बंसल गांव में पहुंचे और तेलंगाना, मेवात, राजस्थान के लोगों से पूछताछ कर आईडी प्रूफ चेक किए। थाने बुला कर भी पूछताछ की गई। शाहपुर पुलिस को शुक्रवार रात थाना क्षेत्र के गांव बसीकलां व आदमपुर में बाहरी लोगों के आने की सूचना मिली। वहां पुलिस को गांव में तेलंगाना राज्य के 12 से अधिक महिला व पुरुष तथा गांव आदमपुर में नौ लोग मिले। इनमें छह व्यक्ति मेवात, दो राजस्थान व एक आजमगढ़ जनपद का था। यह सभी लोग जमाती हैं, जो मस्जिदों में ठहरते है। संवाद

पंजाबी गायक हरमन सिद्धू की सड़क हादसे में मौत

मानसा। पंजाबी गायक हरमन सिद्धू की एक सड़क दुर्घटना में मौत हो गई है। शुक्रवार की रात उसकी गाड़ी मानसा कैंचियां में एक कैंटर के साथ टकरा गई। उन्होंने मौके पर ही दम तोड़ दिया। पुलिस ने कैंटर चालक को गिरफ्तार कर लिया है। इस घटना को लेकर इलाके में शोक की लहर है। संगीत जगत से जुड़े लोगों ने दुख प्रकट किया है। कुछ महीने पहले उनके पिता का देहांत हो गया था। हरमन सिद्धू की एक बच्ची है। संवाद

एनसीसी बना सबसे बड़ा वर्दीधारी युवा संगठन

नई दिल्ली। राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) रविवार को 78वां स्थापना दिवस मनाएगा। सरकार ने बताया कि 1948 में 20,000 कैडेट्स से शुरू हुआ एनसीसी अब दुनिया का सबसे बड़ा वर्दीधारी युवा संगठन बन गया है, जिसमें 20 लाख कैडेट हैं।

इनमें से छह लाख कैडेट की वृद्धि अकेले 2014 से 2025 के बीच हुई है। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, एनसीसी की पहुंच अब देश के 780 में से 713 जिलों तक फैल चुकी है। शहीदों को श्रद्धांजलि स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर एक श्रद्धांजलि समारोह किया गया। रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह और एनसीसी के महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल वीरेंद्र वत्स ने वीर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। तीन महिला कैडेट ने भी इस दौरान शहीदों को नमन किया। ररक्षा सचिव ने आपदा मित्र प्रशिक्षण, माउंट एवरेस्ट अभियान, और पाठ्यक्रम में ड्रोन व साइबर प्रशिक्षण को शामिल करने जैसी एनसीसी की पहल की सराहना की। देश भर में कैडेट ने रक्तदान, पौधरोपण और नशा मुक्ति अभियान जैसे सामाजिक सेवा कार्यक्रमों का भी आयोजन किया। एजेंसी

रक्षा मंत्रालय बोला- राष्ट्रीय कैडेट कोर में 20 लाख सदस्य

जन सुराज पार्टी ने की सभी इकाइयां भंग

पटना। बिहार विधानसभा चुनावों में शर्मनाक प्रदर्शन के बाद चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर की पार्टी जन सुराज ने बड़ा संगठनात्मक बदलाव किया है। पार्टी ने शनिवार को पंचायत स्तर से राज्य स्तर तक की सभी संगठनात्मक इकाइयों को भंग कर दिया है। पार्टी प्रवक्ता सैयद मसीह उद्दीन ने बताया कि नए संगठनात्मक ढांचे का गठन अगले डेढ़ महीने में किया जाएगा। यह फैसला पटना में पार्टी की राष्ट्रीय परिषद की बैठक में लिया गया, जहां प्रशांत किशोर भी मौजूद थे। जन सुराज चुनाव में एक भी सीट नहीं जीत पाई और उसके ज्यादातर उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई थी। अब पार्टी ने वरिष्ठ नेताओं को राज्य के 12 मंडलों की जिम्मेदारी सौंपी है। ये नेता हार के कारणों की पहचान करेंगे और जल्द नई सक्रिय संगठनात्मक संरचना का निर्माण करेंगे। ब्यूरो

बिहार : सम्राट ने अपराध पर जीरो टॉलरेंस का किया एलान

पटना। बिहार की नई एनडीए सरकार में उपमुख्यमंत्री व गृह मंत्री सम्राट चौधरी ने अपराध को लेकर जीरो टोलरेंस की नीति अपनाने का एलान किया। यह पहली बार है जब राज्य में गृह विभाग भाजपा के पास आया है। राजनीतिक हलकों में इसे सत्ता का असली बदलाव कहा जा रहा है।

शनिवार सुबह पटना स्थित भाजपा कार्यालय में सम्राट चौधरी का जोरदार स्वागत हुआ। नारेबाजी और तालियों के बीच नए गृह मंत्री ने मीडिया से बातचीत में कहा बिहार में अपराधियों की जगह नहीं है।

बेगूसराय में मुठभेड़ कुख्यात शिवदत्त राय घायल

सम्राट के बयान के बाद ही साहेबपुरकमाल के मल्हीपुर–शालिग्राम दियारा क्षेत्र में एसटीएफ और जिला पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में कुख्यात अपराधी शिवदत्त राय मुठभेड़ में घायल हो गया। एसटीएफ को इनपुट मिला था कि दियारा क्षेत्र में अपराधियों का गिरोह हथियारों की खरीद-बिक्री के लिए जुट रहा है। पुलिस ने घेरा तो फायरिंग शुरू हो गई। जवाबी भायरिंग में शिवदत्त घायल हो गया। ब्यूरो

नक्सलवाद पर मजबूत नेतृत्व का निर्णायक प्रहार, विकास ने तोड़ी वैचारिक पकड़

भारत ने पिछले पांच दशकों में कई आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों का मुकाबला किया है। अलगाववाद, आतंकवाद और संगठित चरमपंथ ने समय-समय पर देश की स्थिरता और लोकतंत्र को चुनौती दी। इन सभी में सबसे लम्बा, रक्तरंजित और जटिल संघर्ष वामपंथी उग्रवाद यानी नक्सलवाद रहा, जिसने एक समय 126 जिलों को हिंसा, भय और अस्थिरता की चपेट में ले लिया था। यह आंदोलन सिर्फ सुरक्षा के मोर्चे पर ही नहीं बल्कि देश की विकास गति, प्रशासनिक ढांचे और ग्रामीण जीवन पर लगातार चोट करता रहा। अब कई दशकों के बाद जब नक्सलवाद अतीत की कहानी बनने जा रहा है तो निश्चय ही ये बात कल्पना से परे लगती है लेकिन यह सच है। ऐसे में इतने व्यापक और निर्णायक परिवर्तन के कारण और रणनीति का अध्यन करना तथा जानना बहुत आवश्यक है। वजह तलाशने पर मुझे एक ही कारण सबसे स्पष्ट दिखाई देता है और वह है सशक्त, लक्ष्य-केंद्रित और लौह-इच्छाशक्ति से भरा हुआ नेतृत्व। इस पूरे अभियान को जिस दिशा, दृष्टि और गति की आवश्यकता थी वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दी और उसी दृष्टि को जमीन पर सटीक, कठोर और परिणामकारी रूप में अक्षरशः उतारने का कार्य गृह मंत्री अमित शाह ने किया।

नवनीत सहगल
अध्यक्ष, प्रसार भारती

बिहार चुनाव ने भी नेतृत्व की सफलता पर लगाई मुहर

इसी नेतृत्व-मॉडल ने आजादी के बाद पहली बार देश को न केवल नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई में निर्णायक मोड़ पर खड़ा किया बल्कि यह भी साबित कर दिया कि एक दूरदर्शी और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने वाला नेतृत्व क्या-क्या परिवर्तन ला सकता है। राष्ट्र सर्वोपरि की भावना व दृढ़ता प्रधानमंत्री मोदी को आजादी के बाद के सबसे प्रभावशाली, लोकप्रिय और विश्वसनीय नेता के रूप में स्थापित करती है। हालिया बिहार चुनावों ने भी इस सत्य को और पुख्ता कर दिया है। वहां की जनता, विशेषकर गरीब वर्ग उन्हें केवल नेता के रूप में नहीं बल्कि एक मार्गदर्शक व एक संरक्षक और लगभग पूजनीय गुरू के रूप में देखती है। यह विश्वास किसी प्रचार का परिणाम नहीं बल्कि पिछले दशक में बदलाव की वास्तविक अनुभूति का प्रमाण है। यही भरोसा अब सुरक्षा मोर्चे पर भी ठोस नतीजों के रूप में सबके सामने है।

■ जन समर्थन, शासन की पहुंच और नेतृत्व की दृढ़ इच्छाशक्ति ने मिलकर नक्सलवाद की कमर तोड़ने का काम किया है। नक्सली संघर्ष का निर्णायक मोड़ पर पहुंचना इस देश के लिए दशकों पुराने एक अभिशाप से मुक्ति पाने जैसा है। मोदी सरकार ने नक्सलवाद से निपटने के लिए बीते कई वर्षों तक चले ढुलमुल दृष्टिकोण को समाप्त करते हुए सुरक्षा, विकास और जनभागीदारी पर आधारित जो एकीकृत मॉडल अपनाया उसके नतीजे वाकई अकल्पनीय हैं। 2014 के बाद जो रणनीति लागू की गई, उसने नक्सलवाद के ताबूत में अंतिम कील ठोंकने का काम किया है।

अंत की तरफ पहुंचा खूनी अध्याय

हडिमा जैसे कुख्यात नक्सली कमांडर का अंत होना और नेतृत्व संरचना का लगभग ध्वस्त हो जाना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि यह खूनी अध्याय अपने निर्णायक अंत की ओर बढ़ चुका है। आंकड़े गवाही देते हैं कि बीते दशक में नक्सली हिंसा 53% घटी, सुरक्षाकर्मियों की शहादत 73% कम हुई और नागरिकों की मौतें 70% तक घट गईं। साथ ही नक्सली प्रभाव वाले जिले 126 से घटकर 2025 तक केवल 18 रह गए हैं। यह परिवर्तन किसी संयोग का नतीजा नहीं बल्कि दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति, निरंतरता और सुरक्षा बलों के संकल्प का परिणाम है। नक्सली क्रूरता और सामरिक क्षमता का सबसे भयावह चेहरा हिड़मा रहा। दंडकारण्य क्षेत्र में उसकी मौजूदगी नक्सली तंत्र की सबसे बड़ी ताकत और सुरक्षा एजेंसियों के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी। पीएलजीए की बटालियन नंबर 1 का मुखिया होने के साथ वह छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और तेलंगाना में अनेक प्रमुख हमलों का मुख्य साजिशकर्ता था। उसकी दहशत से नक्सली कैडरों के मनोबल को मनोवैज्ञानिक धार मिलती थी। लेकिन हिड़मा का खात्मा नक्सली कमांड एंड कंट्रोल की रीढ़ टूट जाने जैसा है। उसके बाद दंडकारण्य में नक्सलियों की गतिविधियां बिखराव और अव्यवस्था की ओर बढ़ी हैं। सुरक्षा विशेषज्ञ मानते हैं कि हिड़मा के बिना न केवल पीएलजीए की कार्यकुशलता घटेगी बल्कि युवा कैडरों की वैचारिक और सामरिक प्रेरणा भी कमजोर होगी।

2014 के बाद ऐसे बदली तस्वीर

2014 और 2024 के बीच नक्सली हिंसा में 53% की गिरावट, सुरक्षाकर्मियों की शहादत में 73% कमी और नागरिकों की मौतों में 70% कमी अपने आप में ऐतिहासिक है। 126 नक्सल प्रभावित जिलों का 2025 में घटकर 18 रह जाना इस बात का प्रमाण है कि नक्सलवाद का भूगोल सिमट चुका है और अब सीमित, पहचाने जाने योग्य इलाकों में कैद है। सबसे गंभीर श्रेणी में आने वाले जिलों की संख्या 35 से घटकर मात्र 3 रह जाना इस संघर्ष के लगभग निर्णायक अंत का सबसे ठोस संकेत है।

नक्सली नेतृत्व का सफाया : इस वर्ष नक्सल मोर्चे पर निर्णायक बढ़त मिली, जहां 270 नक्सली मुठभेड़ों में मारे गए, 680 गिरफ्तार किए गए और लगभग 1225 नक्सली आत्मसमर्पण के लिए बाध्य हुए। ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट सहित कई सटीक अभियानों तथा छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और बीजापुर में सामूहिक आत्मसमर्पण ने नक्सली संगठन की रीढ़ तोड़ दी।

ढुलमुल नीति से एकीकृत रणनीति तक

पहले नक्सलवाद से निपटने के प्रयास अक्सर रोकथाम, बातचीत या सीमित सैन्य कार्रवाई के बीच उलझे रहे। 2014 के बाद पहली बार यह स्वीकार किया गया कि नक्सलवाद केवल सुरक्षा नहीं बल्कि विकास और विश्वास का मुद्दा भी है। इसी सोच के तहत एकीकृत रणनीति बनाई गई जिसमें सुरक्षा कार्रवाई और विकास कार्य समानांतर चलते रहे। सुरक्षा बलों ने जंगलों से नक्सली ठिकाने साफ किए और सरकार ने उन्हीं इलाकों में सड़क, बिजली, बैंकिंग, अस्पताल, इंटरनेट, स्कूल और आजीविका योजनाएं पहुंचाईं। जब ग्रामीण इलाकों के लोग पहली बार सरकार की मौजूदगी महसूस करने लगे, नक्सलवाद का जनाधार स्वतः टूटने लगा।

विकास ने तोड़ी वैचारिक पकड़ : नक्सलवाद केवल हथियारों का संघर्ष नहीं था; वह वैचारिक भ्रम, उपेक्षा और असंतोष से पोषित होता रहा। जन-कल्याणकारी योजनाओं के विस्तार ने इस वैचारिक जमीन को खत्म किया। 2014 से 2025 के बीच नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में 17,589 किलोमीटर सड़कों के निर्माण हेतु 20,815 करोड़ रुपये स्वीकृत हुए।

ट्रैफिक के चक्कर में हर कोई घनचक्कर

उसने शानदार तजबीज निकाली- एक रेड लाइट जंप का चालान बना देता हूं, दो सौ का। दो सौ मुझे दो और साहब के लिए भी इतने ही, फिर आज दिन भर आप शहर में दनदनाते हुए जाओ। एक दिन में हम लोग दो चालान नहीं बनाते।

जहां खाकसार का गरीबखाना है, वहां पर सड़क पर पैदल चलना लोहे के चने चबाने जैसा है। इस सड़क पर अक्सर या तो जाम लगा रहता है या ट्रैफिक को वीआइपी मूवमेंट के नाम पर बंद कर दिया जाता है। हालात इतने खराब हैं कि रस्से से चोराहों पर आम वाहन चालक को रोक दिया जाता है और सिविल पुलिस तथा ट्रैफिक पुलिस के जलवे देखते ही बनते हैं। सिविल पुलिस कानून व्यवस्था देखती है और ट्रैफिक वाले ट्रैफिक को संभालते हैं।

यशवंत कोठारी

हर समय वीआईपी मूवमेंट चलता है। एक गाड़ी उठाने वाली क्रेन भी सड़क पर मोर्चे पर हर समय खड़ी रहती है। कौन सा रास्ता कब बंद हो जाएगा, कोई नहीं जानता। अक्सर आते-जाते लोग ट्रैफिक वालों से बहस करते दिख जाते हैं। चालान बनते-बिगड़ते रहते हैं। आजकल तो तुरंत एसएमएस पर चालान आ जाता है। बहस करने पर गाड़ी जब्त होने का खतरा रहता है। क्रेन गाड़ी उठा ले जाए तो डबल मुसीबत हो जाती है। कैसे बचें, कुछ समझ में नहीं आता, करें तो क्या करें? सड़क पर खतरे ही खतरे।

कल फिर ट्रैफिक वाले से मुठभेड़ हो गई। मैं अपनी खड़खड़िया पुरानी एक्टिवा से जा रहा था। उसने रोका, मैं रुका नहीं, आगे के पुलिस वाले ने फिर रोक दिया।

हेलमेट कहां है? पीछे की सवारी ने भी हेलमेट नहीं पहना है।

मैंने चुप रहना ही बेहतर समझा। उसने ज्ञान बांटना शुरू किया- हेलमेट चालान के लिए नहीं, हुजूर की सुरक्षा के लिए है। कभी भी सड़क पर 'राम नाम सत्य' हो जाएगा, घर वाले ढूंढते ही रह जाएंगे। चलो, प्रदूषण प्रमाण पत्र के कागज दिखाओ। वह भी नहीं है, आरसी है? नहीं, वह भी एक्सपायर हो गई?

जी खत्म हो चुकी है?

तो फिर अब जो चालान बनेगा, उसकी कुल कीमत आपकी इस खटारा की कीमत से ज्यादा होगी। बोलो, क्या करना है?

मैंने दो-चार जगह फोन लगाए, मगर किसी ने भी मदद नहीं की। पुलिस के बड़े अफसरों के नाम लिए, मगर ट्रैफिक हवलदार ने बताया- सुबह ही साहब ने पूरी चालान बुक पर चिड़िया मार दी थी। वो तो भरनी ही है, साथ में उनको गिफ्ट भी देना है। मेरे बच्चे की फीस भी भरनी है। वे मिठाई की भी मांग कर रहे हैं। बाकी आप खुद सोच लो, कोर्ट में चक्कर लगाते-लगाते जूते घिस जाएंगे, फिर भी बरी नहीं हो पाओगे। बोलो, क्या करना है?

मैं क्या बोलता, मैं तो पहले ही समर्पण कर चुका था। समर्पण में सुख है, यही दर्शन है।

उसने शानदार तजबीज निकाली- एक रेड लाइट जंप का चालान बना देता हूं, दो सौ का। दो सौ मुझे दो और साहब के लिए भी इतने ही, फिर आज दिन भर आप शहर में दनदनाते हुए जाओ। एक दिन में हम लोग दो चालान नहीं बनाते। आराम से दिवाली मनाओ।

बात-बेबात

यह तजबीज मुझे भी ठीक लगी। मैंने हां भर दी। हम दोनों पास की गुमटी में आए, सब काम निपटा, लेकिन इस बीच हजारों वाहन चालक कानून तोड़ते हुए निकल गए।

कोई परवाह नहीं, जिसका दिन खराब होता है, वह फंस जाता है। एक सेकंड में मैं सौ सवारियां देखता हूं। इस शहर का ट्रैफिक केवल मेरे भरोसे है, चालान तो बहाना है। हमने तो पैदल चलने वालों तक के चालान बना दिए। कार वाले का हेलमेट का चालान और दुपहिया वाले का सीट बेल्ट का चालान तो रोज का किस्सा है। और ये तेने अपने वाहन पर प्रेस लिखवा रखा है। यह धौंस नहीं चलेगी, शांति भंग और ब्लैक मैलिंग में तुमको अंदर भी डाल सकता हूं, लेकिन बस एक चालान, जाओ मस्त रहो।

ट्रैफिक वाले साहब ने मुझे थाने पर व्यंग्य नहीं लिखने की भी सलाह दी। सड़क पर चालान एक ऐसा जादू है, जो काले जादू को भी पीछे छोड़ देता है। जब बड़े-बडे लोगों पर जूते फेंके जा रहे हैं, माननीय पिट रहे हैं, ऐसे माहौल में मात्र बिना रेड लाइट जंप किए रेड लाइट जंप का फर्जी चालान बना के लौट आना प्रजातंत्र की सफलता ही कही जाएगी। क्यों साहब, क्या ख्याल है आपका?

उस्तरा

डॉ. फहीम अहमद

फ्यूज हो गए

जो इतने कंफ्यूज हो गए,
तभी इस तरह यूज हो गए।

हाई पावर झूठतंत्र से,
बल्ब अक्ल के फ्यूज हो गए।

जो थे सर की पगड़ी जैसे,
अब पैरों के शूज हो गए।

धन संपदा शक्ति पाई तो,
कैरेक्टर से लूज हो गए।

सोशल इतने हुए कि देखो
लाइक, शेयर, व्यूज हो गए।

काम किया है इतना शॉकिंग,
अब वे ब्रेकिंग न्यूज हो गए।

रिश्वत के दलदल में डूबे,
राई से तरबूज हो गए।

चूरण

पत्नी आईसीयू में थी,
पति अपने आंसू नहीं रोक पा रहा था...
चिकित्सक : हम पूरी कोशिश कर रहे हैं,
लेकिन कोई गारंटी नहीं दे सकते!
उसका शरीर प्रतिक्रिया नहीं कर रहा है!
ऐसा लगता है कि वह कोमा में है!
पति : प्लीज डॉक्टर, उसे बचा लीजिए!
उसकी उम्र ही क्या है,
अभी सिर्फ 31 साल की है!
तभी अचानक ईसीजी में हरकत-सी हुई,
पत्नी के हाथ हिलने लगे,
होंठ कांपने लगे,
हल्के से आंखें खोलीं और धीरे से बुदबुदाई,
"मैं 29 की हूं!"

स्कूल के बच्चों ने जल संकट की
शिकायत की तो उनके माता-पिता बोले,
"साहब, पानी नहीं आता!"
नेता ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया,
"पानी की कमी नहीं है,
यह सिर्फ बच्चों को बचपन में
संघर्ष का पाठ पढ़ाने के लिए है!"
बच्चे : सर, पाठ तो समझ आ गया,
लेकिन प्यास नहीं जा रही!

साहबजादे अभी कुछ कमाते नहीं थे

न वे किसी मुवक्किल को कष्ट देते थे और न कोई मुवक्किल उनके दर्शनों की चेष्टा करता था।

बरसानेलाल चतुर्वेदी

जब कई स्थानों से एक ही दिन की शादियों के निमंत्रण पत्र आ जाते हैं तो बड़ी मुश्किल हो जाती है। किसको छोड़ें, किसके यहां जाएं? उन पंडितों पर गुस्सा आ जाता है, जो एक ही दिन ढेर सारी शादियों के मुहूर्त निकाल देते हैं? रामलाल की टेबिल पर चार निमंत्रण पत्र पड़े हुए हैं? एक निमंत्रण पत्र तो ऐसा चमक रहा है, जैसे किसी वीआईपी की महंगी कार। उस कार्ड पर कलाबत्तू का कार्य हो रहा है? स्पेशल बने हुए लिफाफे में वह रखा हुआ है। यह कार्ड रामलाल के सहपाठी मित्र मिस्टर कौशल का है। उसकी लड़की का विवाह है। दूसरा उसके दूर के चाचा जी के लड़के के विवाह का है। तीसरा एक नेता जी की भतीजी की लड़की का है और चौथा स्कूल के मैनेजर साहब के लड़के का।

रामलाल ने अपने लड़के से कहा, "मिस्टर कौशल के यहां मैं शरीक हो जाऊंगा। सहपाठी है, न जाऊंगा तो बुरा मानेगा। लड़की की शादी है, लड़के की शादी में न भी जाओ, तब भी कोई बात नहीं है। लौटते में मैनेजर साहब के लड़के की शादी भी निपटाता आऊंगा। तुम नेता जी के तथा चाचा जी के यहां शामिल हो जाना।" साहबजादे पहले तो जरा अनखनाए, क्योंकि उन्हें रिश्तेदारों की शादियों में शरीक होने से चिढ़ है। वे पसंद करते हैं 'लव मैरिजों' में शरीक होना, जहां जरा रोमांटिक वातावरण हो, 'ड्रिक्स' और 'कैबरे' का आनंद मिले और रंगीन महफिल हो। अभी कुछ कमाते नहीं थे। 'लॉ' की डिग्री लिए पांच वर्ष हो चुके थे, लेकिन कचहरी में शतरंज की दो-चार बाजियां खेलकर वापस उसी प्रकार आ जाते थे, जैसे 'उड़ि जहाज को पंछी, पुनि जहाज पै आवै।' न वे किसी मुवक्किल को कष्ट देते थे और न कोई मुवक्किल उनके दर्शनों की चेष्टा करता था। 'डैडी' की दौलत पर मौज से जिंदगी कट रही थी। उन्होंने पिता जी की आज्ञा श्रवण कुमार की भांति शिरोधार्य की।

इधर-उधर से

उन पंडितों पर बहुत गुस्सा आता है, जो एक ही दिन ढेर सारी शादियों के मुहूर्त निकाल देते हैं?

इस महान सहयोग के एवज में उन्होंने पिता जी से लॉन्ड्री का बिल, एक जोड़ी नए जूते एवं टैक्सी का किराया वसूल किया तथा सामाजिक कर्तव्य को पूरा करने हेतु गमन किया।

('मिस्टर चोखेलाल' के व्यंग्य 'ये चमत्कार शादियां' से)

आड़े-तिरछे

रेखांकन : दुर्गादत्त पांडेय

Job Alert

Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

दक्षिण पूर्वी रेलवे ने निकाली भर्ती

अप्रेंटिसशिप के लिए योग्य उम्मीदवार करें आवेदन

1785 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 17 दिसंबर, 2025
आयु-सीमा : न्यूनतम 15 वर्ष व अधिकतम 24 वर्ष निर्धारित
यहां आवेदन करें : rrcser.co.in

उत्तराखंड चिकित्सा सेवा चयन बोर्ड ■ 180 पद

स्वास्थ्य कार्यकर्ता के पदों पर रोजगार की संभावनाएं
आवेदन की अंतिम तिथि 10 दिसंबर, 2025
वेतनमान रुपये 21,700 से लेकर रुपये 69,100 तक निर्धारित
यहां आवेदन करें
ukmssb.org

एमपीएमकेवीवीसीएल में मौके ■ 180 पद

ट्रेड अप्रेंटिसशिप के लिए करें आवेदन
आवेदन की अंतिम तिथि 07 दिसंबर, 2025
आयु-सीमा न्यूनतम 18 वर्ष व अधिकतम 25 वर्ष निर्धारित
यहां आवेदन करें
mpcz.in

यूकेएमएसएसबी में रिक्तियां ■ 587 पद

नर्सिंग अधिकारी के पदों पर रोजगार के अवसर
आवेदन की अंतिम तिथि : 17 दिसंबर, 2025
वेतनमान : रुपये 44,900 से लेकर रुपये 1,42,400 तक निर्धारित
यहां आवेदन करें : ukmssb.org

सेबी में योग्य उम्मीदवार करें आवेदन ■ 110 पद

असिस्टेंट मैनेजर के पदों पर रोजगार की संभावनाएं
आवेदन की अंतिम तिथि 28 नवंबर, 2025
वेतनमान रुपये 62,500 से लेकर रुपये 1,26,100 प्रतिमाह
यहां आवेदन करें
sebi.gov.in

एलिम्को में रोजगार की संभावनाएं ■ 10 पद

अप्रेंटिसशिप के लिए करें अप्लाई
आवेदन की अंतिम तिथि 12 दिसंबर, 2025
पात्रताएं दसवीं, बारहवीं, आईटीआई व अन्य निर्धारित योग्यताएं
यहां आवेदन करें
alimco.in

योग्य उम्मीदवार करें आवेदन ...

- होमी भाभा कैंसर अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र, बिहार : मेडिकल फिजिसिस्ट का पद खाली।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 17 दिसंबर, 2025
- tmc.gov.in
- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, दिल्ली : प्रिंसिपल प्रोजेक्ट साइंटिस्ट का पद रिक्त।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 03 दिसंबर, 2025
- ird.iitd.ac.in

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें udaan@amarujala.com पर ई-मेल करें।

SCHOLARSHIP ALERT

मेधावी छात्राओं को वित्तीय सहायता

कोटक महिंद्रा समूह की कंपनियों और कोटक एजुकेशन फाउंडेशन द्वारा कोटक कन्या छात्रवृत्ति की शुरुआत की गई है। इस छात्रवृत्ति का उद्देश्य कम आय वाले परिवारों की मेधावी छात्राओं को वित्तीय सहायता प्रदान करना है, ताकि वे कक्षा 12 के बाद व्यावसायिक शिक्षा में उच्च अध्ययन कर सकें। इसके लिए आवश्यक है कि छात्राएं कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षा में कम से कम 75 प्रतिशत अंक या उसके समकक्ष सीजीपीए प्राप्त कर चुकी हों और वर्ष 2025-26 में किसी व्यावसायिक स्नातक कार्यक्रम के प्रथम वर्ष में नामांकित हों। इसके अतिरिक्त, छात्राओं की वार्षिक पारिवारिक आय 6,00,000 रुपये से कम होनी चाहिए। प्रत्येक चयनित छात्रा को उसके व्यावसायिक स्नातक पाठ्यक्रम/डिग्री की अवधि तक प्रति वर्ष 1.5 लाख रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी। आवेदन के लिए छात्राओं के पास 12वीं की मार्कशीट, आय प्रमाण-पत्र, कॉलेज प्रवेश परीक्षा स्कोरकार्ड और अन्य आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध होने चाहिए।

- आवेदन की अंतिम तिथि : 30 नवंबर, 2025
- आवेदन लिंक : tinyurl.com/4a7sc8m5

75,000 रुपये तक की स्कॉलरशिप पाने का मौका

कोलगेट-पामोलिव (इंडिया) लिमिटेड द्वारा कोलगेट कीप इंडिया स्माइलिंग स्कॉलरशिप 2025-26 की शुरुआत की जा रही है। इस छात्रवृत्ति का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर, योग्य और मेधावी छात्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है। इस स्कॉलरशिप के लिए आवेदन करने वाले छात्रों का किसी मान्यता प्राप्त संस्थान में बैचलर ऑफ डेंटल सर्जरी या मास्टर ऑफ डेंटल सर्जरी पाठ्यक्रम में नामांकित होना आवश्यक है। साथ ही छात्रों ने कक्षा 12वीं में कम से कम 65 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों। इसके अलावा, आवेदकों की वार्षिक पारिवारिक आय 8,00,000 रुपये से कम या बराबर होनी चाहिए। चयनित छात्रों को 75,000 रुपये तक की छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी। आवेदन के लिए छात्रों के पास पिछले शैक्षणिक वर्ष की मार्कशीट, पहचान प्रमाण, आय प्रमाण-पत्र और अन्य आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध होने चाहिए।

- आवेदन की अंतिम तिथि : 05 दिसंबर, 2025
- आवेदन लिंक : tinyurl.com/yz8j2885

एआईसीटीई पीजी छात्रवृत्ति 2025-26

एआईसीटीई पीजी (गेट/सीईईडी) छात्रवृत्ति 2025-26, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) और शिक्षा मंत्रालय की एक पहल है। आवेदन करने के लिए आवश्यक है कि उम्मीदवारों के पास गेट/जीपीएटी/सीईईडी परीक्षा में प्राप्त वैध स्कोर कार्ड हो और वे शैक्षणिक वर्ष 2025-26 में एआईसीटीई द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थान में एमटेक/एमई/एमफार्मा/एमआर्क/एमडिजाइन पाठ्यक्रमों के प्रथम वर्ष में नियमित प्रवेश ले चुके हों। उम्मीदवार को अंशकालिक (पार्ट-टाइम) पाठ्यक्रम में नामांकित नहीं होना चाहिए। साथ ही, प्रवेश तिथि से पूर्व गेट/जीपीएटी/सीईईडी की पात्रता प्राप्त कर लिए हों। चयनित छात्रों को दो वर्ष की अवधि या पाठ्यक्रम की पूरी अवधि के लिए रुपये 12,400 प्रति माह मिलेंगे। छात्र एक शैक्षणिक वर्ष में 15 आकस्मिक अवकाश और 30 चिकित्सा अवकाश भी ले सकते हैं। आवेदन ऑनलाइन माध्यम से स्वीकार किए जाएंगे।

- आवेदन की अंतिम तिथि : 15 दिसंबर, 2025
- आवेदन लिंक : pgscholarship.aicte.gov.in

23 नवंबर,1936

आज का दिन

'लाइफ' नामक पत्रिका का पहला अंक प्रकाशित हुआ था। इसमें फोर्ट पेक नाम के बांध की एक तस्वीर को कवर पेज पर छापा गया था। यह पत्रिका फोटो पत्रकारिता में अग्रणी साबित हुई।

- 1855: मेक्सिको में ले जुआरेज कानून ने पादरी और सैन्य विशेष अदालतों को खत्म कर दिया था।
- 1887: हॉलीवुड अभिनेता बोरिस कार्लोफ का जन्म हुआ था।
- 1963: ब्रिटिश विज्ञान-कथा टेलीविजन शृंखला 'डॉक्टर हू' का पहला एपिसोड प्रसारित हुआ था।
- 1990: ब्रिटिश लेखक रोआल्ड डाहल का निधन हुआ था।

व्रत त्योहार

आज : मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष तृतीया।
कल : वैनायकी चतुर्थी व्रत, हेमंत ऋतु, सूर्य दक्षिणायने, दक्षिण गोले। राहुकाल : प्रातः 07.30 से 09.00 तक

कल का पंचांग

सूर्योदय : 06.56
सूर्यास्त : 17.20
(भारतीय मानक समयानुसार)

विक्रमी संवत 2082, 03 मार्गशीर्ष मास शक 1947, मार्गशीर्ष मास 09 प्रविष्टे, 02 जमादिउस्सानी हिजरी 1447, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष चतुर्थी 21.22 तक उपरांत पंचमी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र 21.53 तक उपरांत उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, शूल योग 12.36 तक उपरांत गंड योग, वणिज करण 08.23 तक उपरांत विष्टि (भद्रा) करण, चंद्रमा मकर राशि में 28.24 बजे।

amarujala.com/astrology

राशिफल

पं. विनोद त्यागी

मेष : कार्य विशेष की चिंता रहेगी। कार्यक्षेत्र में स्थिति अनुकूल रहेगी। व्यवसाय में उत्तम लाभ होगा।	**सिंह** : कार्यक्षेत्र में व्यस्त रहेंगे। सहोदरों का सहयोग मिलेगा। विरोधी से सावधानी बरतें। व्यवसाय में लाभ होगा।	**धनु** : भावनात्मक रूप से संवेदनशील रहेंगे। अनुकूल समाचार से हर्ष होगा। मित्रों का समागम रहेगा।
वृष : वाद-विवाद से हानि होगी। आर्थिक स्थिति यथावत रहेगी। आयात-निर्यात के व्यवसाय में धन लाभ होगा।	**कन्या** : दिनचर्या अस्त-व्यस्त रहेगी। कार्यक्षेत्र में नई परेशानी में उलझ सकते हैं। अर्थ प्राप्ति संभव है।	**मकर** : सहोदरों से वाद-विवाद हो सकता है। आर्थिक क्षेत्र में सावधानी बरतें। व्यावसायिक धन लाभ से संतुष्ट रहेंगे।
मिथुन : स्वजन सहयोग मिलेगा। चली आ रही समस्या से मुक्ति मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	**तुला** : मानसिक उत्तेजना पर नियंत्रण रखें। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा। नए कार्य का प्रस्ताव आ सकता है।	**कुंभ** : मनोकामना पूर्ति का अवसर मिल सकता है। अटके धन की प्राप्ति होगी। व्यवसाय में धन लाभ होगा।
कर्क : राजनीतिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी। कार्य विशेष में अनुकूल सफलता मिलेगी।	**वृश्चिक** : मन में आशा का संचार होगा। नौकरी प्राप्ति का अवसर मिल सकता है। आर्थिक स्थिति सुखद रहेगी।	**मीन** : राजनीतिक पहचान का लाभ मिलेगा। कार्यक्षेत्र में वर्चस्व बना रहेगा। व्यवसाय में लाभ कम होगा।

जन्मदिन

करण पाटिल, अभिनेता

इस वर्ष ग्रह गोचर आपके अनुकूल रहेंगे। पूरा वर्ष आनंदमय व्यतीत होगा। आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी। भोग विलास, मनोरंजन आदि साधनों पर व्यय होगा। स्त्री एवं संतान पक्ष से सुख मिलेगा। विदेश यात्रा हो सकती है। रोजगारपरक परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। लोकप्रियता में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा।

सुडोकू

5	1				2	7		
			5					2
	4			8				
	5	4		6				
3		8				5		6
				9		4	7	
				4			3	
2					1			
		3	6				5	9

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

उत्तर

5	1	6	4	3	2	7	9	8
8	3	7	5	1	9	6	4	2
9	4	2	7	8	6	3	1	5
7	5	4	2	6	3	9	8	1
3	9	8	1	7	4	5	2	6
6	2	1	8	9	5	4	7	3
1	6	5	9	4	8	2	3	7
2	7	9	3	5	1	8	6	4
4	8	3	6	2	7	1	5	9

डेली हेल्थ कैप्सूल

आंखों को सेहतमंद रखती है चौलाई

चौलाई में विटामिन ए और कैरोटीनॉइड्स भरपूर मात्रा में होते हैं, जो आंखों को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं।

चौलाई के साग के सेवन से शरीर को कई लाभ मिलते हैं। इसमें भरपूर मात्रा में फाइबर होता है, जो कब्ज, पेट की सूजन और गैस कम करने में मदद करता है। इसमें पाया जाने वाला विटामिन सी और एंटीऑक्सिडेंट त्वचा को स्वस्थ रखते हैं। चौलाई के पत्तों में विटामिन ए, सी और मिनरल्स भरपूर होते हैं, जो इम्युनिटी को

मजबूत बनाते हैं। चौलाई के पत्तों में भरपूर मात्रा में आयरन होता है, जो शरीर में खून की कमी को दूर करने में सहायता करते हैं। इसमें विटामिन ए और कैरोटीनॉइड्स होता है, जो आंखों की रोशनी बढ़ाने, ड्राइनेस कम करने और आंखों को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं। विटामिन सी, पोटैशियम और बीटा-कैरोटीन से भरपूर चौलाई का साग न सिर्फ ब्लड प्रेशर को नियंत्रण में करके दिल से जुड़ी बीमारियों से बचाता है, बल्कि दिल के सेल्स में इंफ्लामेशन को भी कम करने में मदद करता है। इससे दिल सेहतमंद रहता है। इन पत्तों में मौजूद कैल्शियम, मैग्नीशियम और पोटैशियम हड्डियों और दांतों को मजबूत बनाने में मदद करते हैं। इसका सेवन बच्चों और बुजुर्गों दोनों के लिए फायदेमंद होता है।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

चौलाई के अधिक सेवन से गैस और सूजन हो सकती है। किडनी की पथरी, थायराइड या खून पतला करने वाली दवाएं खा रहे हैं, तो सीमित मात्रा में सेवन करें। गर्भवती महिलाएं इसे खाने से पहले चिकित्सक से सलाह लें।

-प्रीता जैन, आहार विशेषज्ञ

ग्रेनो में ई-साइकिल के संचालन को भी मंजूरी मिली

ट्रांसपोर्ट हब को मेट्रो से जोड़ने का रास्ता साफ

बोर्ड बैठक

20 प्रस्तावों को मंजूरी मिली, लॉजिस्टिक हब का काम भी आगे बढ़ेगा

03 बड़ी परियोजनाओं को विकसित करने पर अभी चल रहा है काम

ग्रेटर नोएडा, कार्यालय संवाददाता। ग्रेटर नोएडा क्षेत्र में विकसित किए जा रहे मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब को मेट्रो लाइन और मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक हब को रेलवे लाइन से जोड़े जाने का रास्ता साफ हो गया है। इसका रूट तय करते हुए मास्टर प्लान 2041 में सम्मिलित करने के महत्वपूर्ण प्रस्ताव को प्राधिकरण बोर्ड की मुहर लग गई।

प्रदेश के औद्योगिक विकास आयुक्त और नोएडा-ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के चेयरमैन दीपक कुमार की अध्यक्षता में शनिवार को ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की 141वीं बोर्ड बैठक में निर्मित फ्लैटों की योजना, ई-साइकिल के संचालन, रजिस्ट्री न करने वाले बिल्डरों पर कार्रवाई सहित आमजन व शहर में सुविधाएं बढ़ाने से संबंधित 20 से अधिक प्रस्तावों को मंजूरी मिली। इस दौरान अपर मुख्य आलोक कुमार भी मौजूद रहे। प्राधिकरण के सीईओ रवि कुमार एनजी ने बताया कि नेशनल इंडस्ट्रियल कार्पोरेशन के साथ मिलकर तीन बड़ी परियोजनाएं इंटीग्रेटेड इंडस्ट्रियल टाउनशिप, मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब और मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक हब विकसित की जा रही हैं। इंडस्ट्रियल टाउनशिप में कई बड़ी कंपनियों का भूखंड आवंटित कर दिए गए हैं, जिन पर फिलहाल उद्योग चल रहे हैं।

सलाहकार की नियुक्ति : मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब और मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक हब परियोजना को धरातल पर उतारने के लिए सलाहकार की नियुक्ति कर दी गई है। डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर से मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक हब को जोड़ने के लिए नई रेलवे लाइन बनाई जानी है, ताकि यहां से मुंबई और कोलकाता के बीच औद्योगिक उत्पादों की ढुलाई आसान हो सके। इसका रूट (अलाइनमेंट) तय हो चुका है। इस लाइन को मास्टर प्लान 2041 में सम्मिलित करने के लिए बोर्ड ने मंजूरी दे दी है।

800 एकड़ में बन रहा

सीईओ ने बताया कि ग्रेटर नोएडा डिपो से मल्टी मॉडल ट्रांसपोर्ट हब तक मेट्रो लाइन का भी रूट तय करते हुए मास्टर प्लान 2041 में सम्मिलित कर लिया गया है। यह रूट लगभग 1.8 किलोमीटर लंबा होगा। ग्रेटर नोएडा के डिपो मेट्रो स्टेशन से ट्रांसपोर्ट हब तक एलिवेटेड लाइन बनेगी। ट्रांसपोर्ट हब 398 और लॉजिस्टिक हब 800 एकड़ में विकसित किया जा रहा है।

बाइक पलटने से दो छात्रों की मौत

रफ्तार का कहर

दनकौर, संवाददाता। नोएडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के समीप शनिवार सुबह बेकाबू बाइक डिवाइडर से टकराकर पलट गई। इस हादसे में दो छात्रों की मौत हो गई। तीसरे को इलाज के लिए दिल्ली के अस्पताल में भर्ती कराया है। जान गंवाने वाले दोनों छात्र गलगोटिया विश्वविद्यालय के छात्र बताए जा रहे हैं।

जिकरुल्लाह गलगोटिया यूनिवर्सिटी में बीबीए और आर्यन बीसीए कर रहा था। मोहम्मद दानिश एनआईयू में बीबीए का छात्र है। तीनों बिहार से हैं और दनकौर के आर्य पीजी में रहकर पढ़ाई कर रहे थे। शनिवार सुबह पांच बजे तीनों बाइक से ग्रेटर नोएडा की तरफ जा रहे थे। नोएडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के समीप तेज रफ्तार बाइक अचानक असंतुलित होकर डिवाइडर से टकरा गई। हादसे में तीनों गंभीर रूप से घायल हो गए।

पुलिस ने तीनों छात्रों को ग्रेटर नोएडा के जिम्स अस्पताल में भर्ती कराया। यहां उपचार के दौरान जिकरुल्लाह बिलाल और आर्यन यादव की मौत गई। मोहम्मद दानिश को दिल्ली के हायर सेंटर में भर्ती कराया गया है।

कार के बोनट में फंसने से जान गई

गुरुग्राम। मारुति कुंज के कृष्ण कुंज इलाके में शुक्रवार शाम कार सवार एक 15 वर्षीय किशोर ने गली में पिता के साथ सामान लेने जा रहे आठ वर्षीय बच्चे को कुचल दिया। इस दौरान कार के बोनट में फंसा बच्चा 20 मीटर तक घसीटता चला गया, जिससे उसकी मौत हो गई।

स्थानीय लोगों ने किशोर को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस ने मृतक यूहान के पिता अश्वनी कुमार की शिकायत पर भोंडसी थाने में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

बच्चे पर कैब चढ़ाने वाला चालक दबोचा

ग्रेटर नोएडा। ग्रेनो वेस्ट की एक सोसाइटी में बच्चे पर कैब चढ़ाने के मामले में आरोपी चालक आकाश राजपूत को पुलिस ने शनिवार सुबह गिरफ्तार कर लिया। सोशल मीडिया पर वायरल हुए वीडियो का संज्ञान लेकर कार्रवाई की गई।

अजनारा होम्स सोसाइटी के सुदीप का आठ साल का बेटा और एक बेटी स्कूल के लिए निकले। गेट के पास बस पकड़ने के लिए दोनों दौड़ने लगे। इस बीच मासूम भागते समय नीचे गिर गया। पीछे से आ रही एक कैब बच्चे के ऊपर चढ़ गई। हादसे में बच्चे के हाथ-पैर में कई जगह चोटें आईं थीं।

रिश्वत मामले में इंस्पेक्टर समेत दो आरोपियों को जेल

- कफ सिरप तस्करों को लाभ पहुंचाने का आरोप
- मामले की जांच एसीपी कोतवाली को सौंपी गई

गाजियाबाद, वरिष्ठ संवाददाता। प्रतिबंधित कफ सिरप के तस्करों को लाभ पहुंचाने के लिए रिश्वत लेने के मामले में गिरफ्तार एसआईटी प्रभारी इंस्पेक्टर रमेश सिंह सिद्धू और बरेली निवासी राहुल शर्मा को भ्रष्टाचार निवारण कोर्ट मेरठ ने शनिवार को जेल भेज दिया।

मामले की जांच एसीपी कोतवाली को सौंपी गई है। वहीं, इंस्पेक्टर रविंद्र चंद पंत को एसआईटी का नया प्रभारी नियुक्त किया गया है।

डीसीपी सिटी धवल जायसवाल के मुताबिक 21 नवंबर को एसीपी नंदग्राम उपासना पांडेय ने सिहानी गेट थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। मुखबिर से सूचना मिली थी कि इंस्पेक्टर ने राहुल से रकम ली है और इसे अपनी निजी कार में छिपाकर रखा है। कार क्राइम ब्रांच परिसर में खड़ी मिली और उससे रकम भी बरामद की गई थी।

एनसीआर 30s

नोएडा के सेक्टर-18 मेट्रो स्टेशन के पास चलती कार के बोनट में शनिवार शाम आग लगने से अफरातफरी मच गई। • हिन्दुस्तान

मेट्रो स्टेशन के पास कार में आग लगी

नोएडा। सेक्टर-18 मेट्रो स्टेशन के पास चलती कार के बोनट में शनिवार शाम आग लग गई। अग्निशमन टीम ने एक गाड़ी की मदद से आग को बुझा दिया। आग लगने का कारण शार्ट सर्किट होना सामने आया है। घटना के दौरान सड़क पर कुछ समय के लिए यातायात प्रभावित हुआ। यातायात धीमी गति से गुजरने से लोगों को दिक्कत हुई। सीएफओ प्रदीप कुमार चौबे ने बताया कि एक कार में आग लगने की सूचना मिली थी। दमकल की गाड़ी भेजकर आग को बुझा दिया गया।

गुरुग्राम के क्लब में बाउंसरों ने मारपीट की

गुरुग्राम। गोल्फ कोर्स रोड स्थित हाचा कैफे में बिना अनुमति चल रही पार्टी की खबर पाकर मौके पर गए मीडियाकर्मियों पर क्लब के बाउंसरों ने जानलेवा हमला कर दिया। यह घटना पुलिस टीम के सामने हुई। पुलिस ने मामला दर्ज कर कार्रवाई की बात कही है। गुरुग्राम के एक मीडियाकर्मी ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उन्हें सूचना मिली थी कि एक ग्रुप देर रात से नियम विरुद्ध पार्टी कर रहा है। वीडियो रिकॉर्डिंग शुरू की तो अहाते के लोग भड़क गए।

ट्रक का ब्रेक फेल होने से छह वाहन आपस में भिड़े

सोहना। सोहना-तावडू मार्ग की घाटी में शनिवार दोपहर को एक बड़ा सड़क हादसा होने से रह गया। ब्रेक फेल होने के कारण बेकाबू ट्रक ने एक के बाद एक कुल छह वाहनों को टक्कर मार दी, जिससे पूरे मार्ग पर हड़कंप मच गया। राहत की बात यह रही कि किसी भी वाहन चालक या यात्री को गंभीर चोट नहीं आई, लेकिन वाहनों के शीशे, बम्पर और अन्य हिस्सों के टूटने से भारी नुकसान हुआ। ट्रक की टक्कर से ट्राला, कैंटर और कई कारें आपस में टकराती चली गईं।

युवक से परेशान युवती ने जान दी

गाजियाबाद। नंदग्राम थानाक्षेत्र में 17 नवंबर को युवती द्वारा आत्महत्या करने के मामले में दूसरे समुदाय के युवक सद्दाम के खिलाफ केस दर्ज कराया गया। पिता का कहना है कि आरोपी की प्रताड़ना से तंग आकर बेटी ने जान दे दी। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच कर आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। नंदग्राम थानाक्षेत्र के दीनदयालपुरी इलाके में रहने वाले व्यक्ति का कहना है कि उनकी बेटी अंजलि ने बीते 17 नवंबर को घर में फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली थी।

तीन मंजिला निर्माणाधीन मकान गिरा

बल्लभगढ़। सेक्टर-58 थाना क्षेत्र के सीकरी-हरफला रोड पर शनिवार सुबह एक तीन मंजिला मकान अचानक भर-भराकर गिर गया। गनीमत यह रही कि मकान के अंदर कोई नहीं था। मकान पूरी तरह खाली था। इस कारण कोई हताहत नहीं हुआ। मकान के गिरते ही अफराफरी का माहौल हो गया। सीकरी चौकी इंचार्ज सबइंस्पेक्टर प्रदीप ने बताया कि यह मकान भवानी नर्सिंग होम वालों का था, जिसमें अभी कोई नहीं रह रहा था।

बल्लभगढ़ के सीकरी में शनिवार को गिरा मकान। • वीडियो क्लिप

गाजियाबाद की दो कॉलोनी निगम के अधीन आएंगी

गाजियाबाद, वरिष्ठ संवाददाता। नगर निगम ने स्वर्ण जयंतीपुरम और भाऊराव देवरस कॉलोनी के हस्तांतरण की तैयारी पूरी कर ली है। निगम ने 34 करोड़ रुपये से अधिक के प्रस्ताव तैयार किए हैं।

यह रकम गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) से ली जाएगी और सीवर लाइन, सड़क और पार्कों की मरम्मत आदि विकास कार्यों पर खर्च होगी। निगम में दोनों कॉलोनी आने से विकास कार्य तेजी से होंगे। गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) ने कई साल पहले गोविंदपुरम से सटी स्वर्ण जयंतीपुरम और प्रताप विहार सेक्टर-12 स्थित भाऊराव देवरस कॉलोनी विकसित की थी।

जीडीए अब तक दोनों कॉलोनियों में विकास कार्य और साफ-सफाई करा रहा है। यहां रहने वाले लोग निगम पार्षद चुनते हैं, लेकिन पार्षद विकास कार्य नहीं करा पाते। यही वजह है कि जल निकासी के लिए नाले नहीं हैं। सीवर व्यवस्था ठीक नहीं है, कूड़ा निस्तारण नहीं हो रहा। कई पार्क भी बदहाल हैं। ऐसे में लोगों को परेशानी उठानी पड़ रही है।

जयपुर हाईवे के 18 स्थानों पर खतरा

गुरुग्राम, प्रमुख संवाददाता। दिल्ली-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच-48) पर सफर करने वाले लोगों के लिए एक बड़ी चेतावनी सामने आई है। गुरुग्राम को राजस्थान से जोड़ने वाला इस प्रमुख कॉरिडोर पर 18 ब्लैक-स्पॉट्स (दुर्घटना संभावित क्षेत्र) चिह्नित किए गए हैं, जहां रात के समय यात्रा करना सबसे खतरनाक साबित हो रहा है।

दिल्ली से सटे गुरुग्राम में साल 2025 में जनवरी से 31 अक्तूबर तक 900 सड़क हादसे हो चुके हैं। इन हादसों में 377 लोगों की मौत हो चुकी है और 500 से ज्यादा लोग घायल हो चुके हैं। इन आंकड़ों से साफ है कि हर महीने 30 से ज्यादा लोगों की मौत सड़क हादसों में हो रही है। इन हादसों की जांच ट्रैफिक पुलिस की स्पेशल टीम ने जांच की। जांच के दौरान सामने आया कि ज्यादा हादसे रात में हुए हैं। इन स्पॉट्स पर सही से रिफ्लेक्टर नहीं लगे हुए हैं और रात में अंधेरा होने के कारण हादसा होने का मुख्य कारण है।

जांच रिपोर्ट आने के बाद दिल्ली-जयपुर हाईवे पर 18 ब्लैक-स्पॉट्स और शहर की अर्बन 13 सड़कों के स्पॉट्स को ट्रैफिक पुलिस ने हाई-रिस्क में शामिल कर राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एचएचएआई) और गुरुग्राम महानगर प्राधिकरण (जीएमडीए) को एक आधिकारिक पत्र लिखा है, जिसमें इन सभी जानलेवा स्पॉट्स पर तुरंत सोलर स्ट्रीट लाइट और हाई मास्क लाइट लगाने का सुझाव दिया गया है।

ये दुर्घटना संभावित क्षेत्र चिह्नित किए गए

दिल्ली-जयपुर हाईवे के 18 ब्लैक स्पॉट्स में पंचगांव चौक, इफ्को चौक, राजीव चौक, बिलासपुर चौक, बिनौला फ्लाईओवर, मानेसर बस स्टैंड, खेड़की दौला टोल प्लाजा, शंकर चौक, वाटिका चौक, नरसिंहपुर कट, एंबियंस मॉल, सुभाष चौक, सरहौल टोल, घामडोज टोल प्लाजा, कापडीवास, एटलस चौक, एनएसजी कैंपस मानेसर और आईएमटी मानेसर चौक शामिल हैं।

पूर्व कर्नल से 32 लाख रुपये ठगे

नोएडा। शेयर में निवेश कर मुनाफा कमाने का झांसा देकर साइबर अपराधियों ने सेना से सेवानिवृत्त कर्नल से 32 लाख रुपये ठग लिए। पीड़ित की शिकायत पर साइबर क्राइम थाने की पुलिस ने ठगों के खिलाफ केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

भारतीय सेना से सेवानिवृत्त कर्नल 57 वर्षीय दमन दत्ता ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वर्तमान में वह परिवार के साथ अरुण विहार में रहते हैं। सात सितंबर को उनके मोबाइल पर नीतिका भल्ला नाम की महिला ने मैसेज किया। इसके बाद झांसा देकर उनसे 32 लाख निवेश कराया और ठगी कर ली।

शिवमोगा आतंकी मॉड्यूल में सजा

बेंगलुरु, एजेंसी। एक स्पेशल एनआईए कोर्ट ने एक उभरते हुए टेरर नेटवर्क के शिवमोग्गा मॉड्यूल से जुड़े दो लोगों को आतंकवाद से जुड़े अपराधों के लिए छह साल की सश्रम कैद की सजा सुनाई है।

जबीउल्ला और नदीम फैजल को 2022 में गिरफ्तार किया गया था और उन पर गैरकानूनी गतिविधियाँ (रोकथाम) अधिनियम और आईपीसी के अलग-अलग धाराओं के तहत साज़िश, आतंकी कार्यों और एक प्रतिबंधित संगठन से जुड़े होने के आरोप लगाए गए थे। अदालत ने आदेश दिया कि सजाएं एकसाथ चलेंगी।

हमारे बुजुर्गों ने विभाजन का विरोध किया : महमूद मदनी

- जमीयत उलमा-ए-हिन्द के अध्यक्ष बोले, बुजुर्गों का निर्णय दूरदर्शी था

नई दिल्ली, प्रमुख संवाददाता। जमीयत उलमा-ए-हिन्द के अध्यक्ष मौलाना महमूद मदनी ने कहा कि जमीयत के बुजुर्गों ने भारत के विभाजन का जो विरोध किया था, वह पूरी तरह दूरदर्शी और सही निर्णय था।

वे शनिवार को कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया में आयोजित मुफ्ती मुहम्मद किफायतुल्लाह देहलवी के जीवन और योगदान पर दो-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारे बुजुर्गों का रुख ठोस तर्कों और दस्तावेजों पर आधारित था। आज कुछ नौजवान मौजूदा हालात देखकर यह समझ बैठते हैं कि उन्होंने गलत रास्ता चुना, लेकिन मैं इससे सहमत नहीं। उनका फैसला बिल्कुल सही था। दुर्भाग्य से उसे लागू नहीं किया गया। अगर उनकी प्रस्तावित राह पर पूरा देश एकजुट होता, तो आज परिस्थितियां कहीं बेहतर होतीं।

'..तो कोई भारत पर हमला करने की हिम्मत न करता'

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि अगर 26 नवंबर 2008 के मुंबई आतंकी हमले के बाद भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' जैसी कार्रवाई की होती, तो आज कोई भारत पर हमले की हिम्मत नहीं करता।

गेटवे ऑफ इंडिया पर 26/11 की 17वीं बरसी से पहले आयोजित कार्यक्रम में फडणवीस ने कहा कि यह हमला भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई और देश की संप्रभुता पर था। फडणवीस ने सुरक्षा एजेंसियों की तारीफ करते हुए कहा कि उन्होंने मुंबई समेत कई शहरों में आतंकी हमले के लिए लाए जा रहे 3,000 किलो आरडीएक्स को जब्त कर लिया।

'ऑपरेशन सिंदूर विश्वसनीय ऑर्केस्ट्रा था'

संबोधन

नई दिल्ली, एजेंसी। सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने शनिवार को कहा कि ऑपरेशन सिंदूर एक विश्वसनीय ऑर्केस्ट्रा था, जिसमें प्रत्येक संगीतकार (सशस्त्र बलों के पक्ष) ने सटीकता और समन्वय के साथ भूमिका निभाई। इसी कारण केवल 22 मिनट में भारतीय सशस्त्र बल नौ आतंकवादी ठिकानों को नष्ट कर सके।

सेना प्रमुख ने दिल्ली स्थित एक प्रबंधन संस्थान के दीक्षांत समारोह को संबोधित किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि यह सैन्य अभियान बदलती स्थिति का पूर्वानुमान लगाने की दूरदर्शिता को दर्शाता है। यह प्रतिक्रिया उस क्षण में नहीं, बल्कि वर्षों की कल्पना के माध्यम से बनी थी कि किस प्रकार खुफिया जानकारी, सटीकता और प्रौद्योगिकी को कार्रवाई में परिवर्तित किया जा सकता है। सेना प्रमुख ने कहा कि इस तरह हम 22 मिनट में नौ आतंकवादी ठिकानों को तबाह कर सके और 80 घंटों में यह सुनिश्चित कर सके कि लड़ाई खत्म हो। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि अगर हमने पूरी टीम पर भरोसा न किया होता, तो निर्णय लेने का समय ही नहीं मिलता। बता दें भारत ने सात मई की सुबह सैन्य अभियान शुरू किया था और पाकिस्तान तथा पीओके में कई आतंकवादी ढांचों को नष्ट किया था।

'6सी' को जानना जरूरी : सेना प्रमुख

सेना प्रमुख ने कहा कि जैसे-जैसे युद्धक्षेत्र धुंधले होते गए, वैसे-वैसे बाजार भी धुंधले होते गए। उन्होंने कहा कि आज व्याकरण की किताब के छह अध्याय पारंपरिक रेन और मार्टिन की अंग्रेजी व्याकरण की किताब से अलग हैं। इसमें सहयोग (कोऑपरेशन), सहकारिता (कॉलेबोरेशन), सह-अस्तित्व (को-एक्सिस्टेंस), प्रतिस्पर्धा (कम्पीटिशन), प्रतिद्वंद्विता (कॉन्टेस्टेशन) और संघर्ष (कॉन्फ्लिक्ट) शामिल हैं। उन्होंने कहा कि तो, ये '6सी' हैं, जिन्हें हमें एक साथ जानना होगा। क्योंकि, हमारे रणनीतिक आदान-प्रदान में भी, हम '6सी' से निपटते हैं और भविष्य में आप भी इनसे निपटेंगे।

सीखने का साहस जारी रखें

जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने स्नातक छात्रों से कहा कि वे बुद्धिमत्ता, विनम्रता और शक्ति के साथ नेतृत्व करने के लिए तैयार हों। उन्होंने कहा कि तो आज जब आप आगे बढ़ रहे हैं, याद रखें कि दुनिया कभी स्थिर नहीं रहती, बाजार बदलते रहेंगे, तकनीक विकसित होती रहेगी और आपकी खुद की महत्वाकांक्षाएं भी बदलेंगी। फिर भी, इन सब के बीच आपकी सबसे बड़ी ताकत छिपी है-सीखने का साहस, बदलने की क्षमता और उद्देश्य के साथ नेतृत्व करने का नजरिया। बदलाव वह नहीं है, जो हमारे साथ होता है, बल्कि वह है जिसे हम इसके जरिए बनने का चुनाव करते हैं।

श्रद्धांजलि

Always in our hearts....

Smt. SEEMA SOBTI (Babli Sobti)
wife of Shri Kuldip Sobti (Babbu Sobti)
who left for her heavenly abode on **23rd November, 2017**

Deeply missed and remembered by family and staff

Sons & Daughters-in-law : **Pradeep & Shilpi Sobti**, **Akshay & Nitika Sobti**
Daughter & Son-in-law : **Niti & Sandeep Tandon**
Smt. Saroj Sobti *(Chachi Ji)*
Brothers-in-law & Sisters-in-law : **Rajinder & Nidhi Sobti**, **Smt. Shivani Sobti**

Sisters-in-law & Brothers-in-law : **Indu & Vijay Sethi**, **Dimple & Pradeep Soni**, **Dolly & Deepak Malhotra**, **Anu & Anshul Dewan**
Grand Children : **Muskaan, Geet, Madhav, Arjun, Ahana, Akshat, Meran**

Brothers & Sisters-in-law : **Smt. Krishna Vohra**, **Smt. Rita Vohra**, **J.K. & Rita Vohra**
Sisters & Brothers-in-Law : **Krishna & Satpal Duggal**, **Vijay & J.F. Williams**, **Geeta & Vijay Mehta**
Nephews & Nieces

SOBTI & SOBTI London
HOTEL SOBTI Karol Bagh, New Delhi
HOTEL AKSHAY PALACE Pusa Road, New Delhi

7290004902, 9811026215, 9811023016

वायुसेना ने विंग कमांडर नमांश को श्रद्धांजलि दी

नई दिल्ली। विंग कमांडर नमांश स्याल के निधन पर भारतीय वायुसेना ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

वायुसेना ने एक्स पर श्रद्धांजलि संदेश में लिखा कि भारतीय वायुसेना विंग कमांडर नमांश स्याल के दुबई एयर शो में तेजस विमान दुर्घटना में हुए दुखद निधन पर गहरा शोक व्यक्त करती है। संदेश के साथ उनकी वर्दी में तस्वीर, पायलट सूट में फाइटर जेट के पास खड़े होने की तस्वीर और दुर्घटना के बाद तिरंगे में लिपटे पार्थिव शरीर के सम्मान में दी गई अंतिम सलामी का वीडियो भी साझा किया।

कांगड़ा स्थित गांव में मातम: स्याल के निधन से हिमाचल के कांगड़ा में उनके गांव पतियालकर में मातम है। चाचा जोगिंदरनाथ स्याल ने बताया कि पार्थिव शरीर रविवार को कांगड़ा लाया जाएगा।

राफेल पर चीन ने किया था दुष्प्रचार

रिपोर्ट

- ऑपरेशन सिंदूर के दौरान सोशल मीडिया पर जारी कीं फर्जी तस्वीरें

नई दिल्ली, एजेंसी। एक अमेरिकी आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, चीन ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान नकली सोशल मीडिया अकाउंट्स से फ्रांसीसी राफेल विमान के मलबे की तस्वीरें प्रकाशित कीं। ताकि वह अपने जे-35 जेट को बढ़ावा दे सके।

यूएस-चाइना इकोनॉमिक एंड सिक्योरिटी रिव्यू कमीशन की कांग्रेस को दी गई ताजा रिपोर्ट में आरोप लगाया कि चीन ने उन विमानों के कथित मलबे की एआई तस्वीरों का इस्तेमाल किया, जिन्हें चीन के हथियारों ने नष्ट किया था। 700 पन्नों की रिपोर्ट के अनुसार, चीनी दूतावासों ने भारत-पाकिस्तान संघर्ष में अपने सिस्टम की सफलता का गुणगान किया, जिसका उद्देश्य हथियारों की बिक्री को बढ़ावा देना था। चीनी अधिकारियों ने इंडोनेशिया को राफेल की खरीद रोकने के लिए मना लिया था। रिपोर्ट में चीन के इन कथित कृत्यों को ग्रे जोन कहा गया है।

रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान को चीन अपनी सैन्य क्षमताओं के लिए एक परीक्षण मैदान के रूप में इस्तेमाल करता है। हालांकि, पाकिस्तान ने आरोपों से इनकार किया और चीन ने अपनी संलिप्तता की न पुष्टि की और न ही खंडन किया।

देश को मिला पहला अग्नि परीक्षण उपकरण

गाजियाबाद, संवाददाता। संजय नगर स्थित उत्तरी भारत वस्त्र अनुसंधान संघ (निट्रा) ने देश को पहला अग्नि परीक्षण उपकरण दिया है। केंद्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने इस मैनिकिन अग्नि परीक्षण उपकरण का शनिवार को लोकार्पण किया। इस दौरान उन्होंने संस्थान में लगी ऑक की फसल का भी निरीक्षण किया।

केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि यह उपकरण केवल वस्त्र उद्योग के लिए नहीं, बल्कि अलग-अलग उद्योगों में काम करने वाले कर्मचारियों की सुरक्षा करेगा। यह अत्याधुनिक प्रणाली अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप काम करती है। उपकरण से समय और पैसे की बचत होगी। साथ ही जान-माल की भी सुरक्षा हो सकेगी। यह उपलब्धि न केवल निट्रा, बल्कि पूरे गाजियाबाद और देश के वस्त्र उद्योग के लिए गर्व का क्षण है। उन्होंने यह भी कहा कि निट्रा ने ऑक पर शोध कर वस्त्र जगत में एक क्रांति लाने का कार्य किया है। वहीं, संस्थान के महानिदेशक डॉ. एमएस परमार ने कहा कि उपकरण से यह पता चलता है कि हमारे श्रमिकों और कर्मचारियों को किस तरह के सुरक्षात्मक कपड़ों की जरूरत है।

ऑक के फायदे देखने के बाद फसल उगाई जा रही: निट्रा संस्थान में ऑक की फसल पर भी शोध किया जा रहा है। ऑक के फायदे देखने के बाद संस्थान में ऑक की फसल उगाई जा रही। शोध में ऑक फाइबर में ताप रोधी, हल्का और महीन होने जैसे गुण पाए गए। संस्थान के महानिदेशक डॉ. एमएस परमार ने बताया कि ऑक के पौधे को पानी की बहुत कम जरूरत पड़ती है और इसे कहीं पर भी उगाया जा सकता है। इसे किसी तरह के खाद और कीटनाशक की जरूरत नहीं होती। एक बार फसल लगाने के बाद इससे 10 साल तक फाइबर प्राप्त कर सकते हैं। ऑक के पौधे की विशेषताओं को देखते हुए केंद्रीय कपड़ा मंत्री और डॉ. एमएस परमार ने एक कोर ग्रुप बनाया, जिसमें विभिन्न संस्थाओं के वैज्ञानिक भी शामिल हैं।

कर्मचारियों की सुरक्षा में मदद मिलेगी

पुतलेनुमा इस मैनिकिन उपकरण में 100 से अधिक सेंसर लगे हैं। यह रिकॉर्ड कर बताते हैं कि कपड़ा कितनी सुरक्षा दे पाएगा। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह अचानक तेज आग लगने की स्थिति में मानव शरीर, कपड़ों और पर्यावरण के बीच गर्मी के आदान-प्रदान को जल्दी, सटीक और बार-बार संतुलन प्रदान कर सकता है। यह उपकरण औद्योगिक सुरक्षा मानकों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

स्मृतिशेष

डॉ. (श्रीमती) सरयू देवी शारदा
23 नवम्बर 2002
1917-2002

आपका आशीर्वाद हम सब आज भी महसूस करते है आपके जीवन के सिद्धांत सत्य, सरलता व करुणा आज भी हमारा मार्गदर्शन करती है आपकी करुणा हमेशा हम पर बनी रहे यही प्रार्थना है आपकी पुण्य तिथि पर आपको कोटि-कोटि प्रणाम। **शारदा परिवार, 23 नवम्बर 2025, 9/21 साउथ पटेल नगर, नई दिल्ली-08**

In Loving Memory Of
S. Rajinder Singh Kohli
05.05.1940 - 23.11.2006

Your ethics, goodness, Devotion to duty & faith in God continue to be our inspiration.everything we do in life, we feel your presence inspiring us through phases of happiness &sorrow. You are still with us & showering your blessings. **Family & Staff of Snowfall Dresses & Hemkund Homes**

आतंकवाद से लड़ाई अंतहीन है। इससे निपटने के लिए सरकार भरसक प्रयास कर रही है, लेकिन समाज को भी आंखें खुली रखनी होंगी। दिल्ली धमाकों ने साबित कर दिया है कि रक्त पिपासु हमारी आस्तीनों में ही छिपे हुए हैं। हमें न केवल उन्हें पहचानना होगा, बल्कि सामाजिक विमर्श को भी सकारात्मक दिशा देनी होगी।

आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

26/11 जो याद दिलाता है

शशि शेखर

कुछ यादें स्थायी सिहरन के साथ दिलो-दिमाग में जज्ब हो जाती हैं। मुंबई, पहलगाम और पिछले दिनों हुए दिल्ली हमले को आप इस खौफनाक श्रेणी में रख सकते हैं। सिर्फ तीन दिन बाद जब हम मुंबई नरसंहार की 17वीं बरसी मनाने जा रहे हैं, तब यह सवाल उठना लाजिमी है कि हमने इस दौरान क्या सीखा और क्या सीखना अभी बाकी है?

पहले 26 नवंबर, 2008 की उस हत्यारी शाम की चर्चा। पहलगाम और दिल्ली हमारी स्मृतियों में अभी ताजा हैं, लेकिन मुंबई का हमला इनके मुकाबले बहुत ज्यादा विनाशकारी था। इस पर स्यापा तो बहुत हुआ, लेकिन कारगर चर्चा कभी नहीं हो सकी। क्या हुआ था उस रात? सबसे पहले प्राइम टाइम न्यूज में अचानक फ्लैश उभरा था, कोलाबा में गोलीबारी! लगा मुंबई में गैंगवार के दिन लौट आए हैं। ऐसा नहीं था। अगले कुछ मिनटों में अन्य जगहों पर खूरेंजी की खबरें देश का दिल दहलाने लगीं।

आजकल

तब सोचा न था कि अगले 60 घंटे उत्तेजना, अफसोस और संवेदना से सराबोर होंगे। उस दौरान पाकिस्तान से आए दस प्रशिक्षित हत्यारों ने कुल जमा 165 देशी-विदेशी इंसानों के साथ खून की होली खेली थी। पंचतारा होटलों के साथ मुख्यतम रेलवे स्टेशन, यहूदियों के आवास, अस्पताल और प्रमुख सड़कों को निशाना बनाया गया था। इसी के साथ देश का सुरक्षा परिदृश्य सदा-सर्वदा के लिए बदल गया था।

इस हमले के शुरुआती घंटों में ही महाराष्ट्र पुलिस के आतंक निरोधी दस्ते के प्रमुख हेमंत करकरे के साथ चार अधिकारी आतंकवादियों की गोली के शिकार बन गए थे। उनका जज्बा हमारे आदर का पात्र है, पर उनसे 'सिक्योरिटी प्रोटोकॉल' के अनुपालन में भयंकर चूक हुई थी। वे सभी एक ही गाड़ी में सवार होकर दहशतगर्दों से मोर्चा लेने निकल पड़े थे, इसीलिए जब उन पर गोलियां बरसने लगीं, तो उन्हें अपने हथियार उठाने तक का मौका नहीं मिला। यह मुंबई पुलिस पर जबरदस्त आघात था, क्योंकि उसकी आतंकरोधी क्षमता का नेतृत्व एक झटके में खत्म हो गया था। यही नहीं, समुचित प्रशिक्षण, सुरक्षा बलों की सामरिक तैनाती, त्वरित जवाबी कार्रवाई की क्षमता और आवश्यक हथियारों का अभाव हमें मुंह चिढ़ा रहा था।

देश की आर्थिक राजधानी के साथ इन मुट्ठी भर आतंकियों ने जैसे समूची भारतीय अस्मिता को बंधक बना लिया था।

इसके बावजूद मुंबई पुलिस ने हिम्मत नहीं हारी। अजमल कसाब की गिरफ्तारी इसका उदाहरण है। कसाब एक अन्य आतंकी अबू इस्माइल के साथ छत्रपति शिवाजी टर्मिनस से छीनी हुई कार में गोरेगांव चौपाटी से आगे निकलने की कोशिश कर रहा था कि पुलिस से मुठभेड़ हो गई। सहायक उप-निरीक्षक तुकाराम ओंबले को कई गोलियां लगीं, लेकिन दम तोड़ने से पहले उन्होंने अद्भुत शौर्य का प्रदर्शन किया। ओंबले ने अपने डंडे से कसाब के हाथ पर प्रहार किया, जिससे उसकी एके-47 गिर गई और उसे गिरफ्त में लिया जा सका। असॉल्ट राइफल के मुकाबले डंडा! अगर तुकाराम की बहादुरी गर्व की बात है, तो एक मामूली डंडे के जरिये दुर्दांत हत्यारों से जूझना शर्म का विषय।

दुर्भाग्य से उन मारक लम्हों में शर्म के अन्य कई कारण मौजूद थे।

उन दिनों ऐसी आतंकवादी कार्रवाई से जूझने में देश की इकलौती सक्षम एजेंसी थी- राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड, यानी एनएसजी। सुदूर हरियाणा के मानेसर में उसका इकलौता केंद्र था। एनएसजी को भी समय पर सूचना नहीं दी गई थी। उस कार्रवाई में शामिल कर्नल संदीप सेन ने पिछले दिनों एक पॉडकास्ट में बताया कि 26/11 की शाम मेरे वरिष्ठ अधिकारी का फोन आया कि टीवी खोलो, लगता है कि मुंबई में गैंगवार चल रही है।

सेन ने जब टेलीविजन खोला, तो उन्हें स्क्रीन पर एके-47 के खोखे दिखाई पड़े। इससे अंदाज लगा कि यह दो गिरोहों की लड़ाई नहीं, बल्कि प्रशिक्षित दहशतगर्दों का हमला है। उस समय एनएसजी के दो सबसे आला अधिकारी शहर से बाहर थे। इसके बावजूद उपलब्ध अधिकारियों को यह समझते देर नहीं लगी कि देर-सवेर हमें बुलाया जाएगा। उन्होंने कूच की तैयारी शुरू कर दी। इन जोशीले लड़ाकों को उचित आदेश प्राप्त होने तक आधी रात बीत चुकी थी। हुक्म मिलते ही वे हवाई अड्डे पहुंचे और जहाज में सवार हो गए।

इसके तत्काल बाद हवाई जहाज को रनवे पर होना चाहिए था, लेकिन अभी लंबा इंतजार शेष था। एनएसजी के मुखिया नीचे टर्मिनल पर किसी खास मेहमान की प्रतीक्षा कर रहे थे। वह विशिष्ट अतिथि थे, तत्कालीन गृह मंत्री शिवराज पाटिल। पाटिल के आने तक जहाज वहीं खड़ा रहा और जब वे मुंबई पहुंचे, तब तक सवेरा हो चला था। इसका राजनीतिक गुणा-भाग कुछ भी हो, पर आतंकवादियों को हर गुजरते मिनट के साथ आसानी हो रही थी। विशाल मृतक संख्या इसका उदाहरण है।

यह तो खैर है कि इस हमले के बाद केंद्र और राज्य सरकारों ने सबक लिया। अब राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड के केंद्र देश के चारों कोनों में हैं। यही नहीं, प्रादेशिक पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों को भी ऐसी स्थितियों से जूझने के लिए संसाधन मुहैया कराए गए हैं। अब हर सूबे के पास अपने आतंकरोधी दस्ते हैं, लेकिन पहलगाम और दिल्ली के हमलों ने एक बार फिर आतंकवाद के मुद्दे को विमर्श के केंद्र में ला दिया। तय है, 'ऑपरेशन सिंदूर' के जरिये जबरदस्त पिटाई के बावजूद, पाकिस्तान और हमें अस्थिर करने के इच्छुक उसके दोस्त बाज आने वाले नहीं हैं।

इन हमलों के बाद सुरक्षा एजेंसियों की स्थिति और सुरक्षा इंतजामात पर पुनः सवाल उठाए जा रहे हैं। हालांकि, जम्मू-कश्मीर पुलिस ने हरियाणा के अपने सहयोगियों के साथ सिर्फ एक दिन पहले 360 किलोग्राम अमोनियम नाइट्रेट और हथियार बरामद किए थे। याद करें, पुलवामा में करीब 35 किलोग्राम विध्वंसक का इस्तेमाल किया गया था। हरियाणा में जब्त गोला-बारूद इसका दस गुना था। वह कितना विनाशक हो सकता था? खुफिया रिपोर्ट के अनुसार इसके जरिये 6 दिसंबर, यानी बाबरी ध्वंस के दिन देश के कई हिस्सों में एक साथ दहशत फैलाने की साजिश थी। सजग जम्मू-कश्मीर पुलिस ने इसे नाकाम कर दिया।

इसी बौखलाहट में डॉक्टर उमर ने लाल किले के सामने अपनी कार में विस्फोट कर दिया, जिसमें 16 भारतीय मारे गए। ऐसा नहीं होना चाहिए था। लेकिन यह भी सच है कि एक बड़ी आशंका तब तक टल चुकी थी।

हमारी सुरक्षा एजेंसियां यकीनन इससे भी सबक लेंगी, लेकिन दो चेतावनियां स्पष्ट हैं। पहली यह कि अलगाव और आतंक की महामारी सफेदपोशों में फैल रही है, जो ज्यादा खतरनाक है। यह पहला मौका है, जब इतनी बड़ी संख्या में चिकित्सा के पवित्र व्यवसाय से जुड़े लोग हत्यारों की जमात में शामिल पाए गए। इसी के साथ गौरतलब है कि अब तक के सभी बड़े आतंकी हमलों में आक्रामक या तो परदेसी थे या सरहद पार से प्रशिक्षण लेकर आए थे। इस दुर्दांत वारदात में शामिल सभी लोग भारतीय थे।

दूसरा, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण सबक यह है कि आतंकवाद से लड़ाई अंतहीन है। इससे निपटने के लिए सरकार भरसक प्रयास कर रही है, लेकिन समाज को भी आंखें खुली रखनी होंगी।

दिल्ली धमाकों ने साबित कर दिया है कि रक्त पिपासु हमारी आस्तीनों में ही छिपे हुए हैं। हमें न केवल उन्हें पहचानना होगा, बल्कि सामाजिक विमर्श को भी सकारात्मक दिशा देनी होगी।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीने की राह

श्रीकांत बोला
उद्यमी

दृष्टि की बाधाएं पार कर वह बहुत आगे निकल गया

कुछ पड़ोसियों ने तंज कसा कि तुम दोनों ने पिछले जन्म में जरूर कुछ पाप किए होंगे, तभी ऐसी औलाद पैदा हुई है, तो एकाधिक रिश्तेदारों ने यह तक सलाह दे डाली कि ऐसे बच्चे को पूरी जिंदगी घुट-घुटकर जीना पड़ेगा। जिंदगी अभिशाप बन जाएगी, इसलिए अभी ही इसे मुक्ति दे दो!

उनकी उम्र महज 34 साल है। वह करीब 500 करोड़ रुपये की कंपनी के मालिक हैं। यह कंपनी उन्हें विरासत में नहीं मिली, बल्कि उन्होंने अपनी प्रतिभा और परिश्रम से खड़ी की है। आज वह हिन्दुस्तान के सफल ही नहीं, सबसे प्रेरणादायी युवा उद्यमियों में गिने जाते हैं। उनकी कहानी सुनकर वे तमाम लोग बौने लगते हैं, जो हर मुमकिन मंच से अपनी कामयाबी की शेखियां बघारते दिखते हैं या अपने संघर्ष को बेमिसाल बताते नहीं थकते। मगर श्रीकांत बोला का साढ़े तीन दशक का सफर हमें बताता है कि जीना इसी का नाम है।

आंध्र में मछलीपट्टनम शहर के करीब एक गांव है सीतारामपुरम। श्रीकांत यहीं के एक गरीब किसान परिवार में पैदा हुए। माता-पिता (वीरा वेंकटेश्वरम्मा और दामोदर राव) बहुत खुश थे। अब उन्हें क्या पता था कि यह बच्चा उनके सब्र की कड़ी परीक्षा लेने जा रहा है? श्रीकांत दृष्टिहीन पैदा हुए थे। किसान पति-पत्नी हाड़तोड़ मेहनत के बाद किसी तरह दो शाम का भोजन जुटा पाते थे। वे कहां से बेटे के अंधेपन का इलाज करा पाते? उसकी आंखें ही नहीं खुल रही थीं। कुछ पड़ोसियों ने तंज कसा कि तुम दोनों ने पिछले जन्म में जरूर कुछ पाप किए होंगे, तभी ऐसी औलाद पैदा हुई है, तो एकाधिक रिश्तेदारों ने यह तक सलाह दे डाली कि ऐसे बच्चे को पूरी जिंदगी घुट-घुटकर जीना पड़ेगा। इसलिए अभी ही इसे मुक्ति दे दो!

कितना आसान था उनके लिए यह सब कह जाना। माता-पिता के कलेजे में उनकी बातें नश्तर की तरह उतर गई थीं। भविष्य की आशंका में वे अपने जिगर के टुकड़े का कत्ल कर दें, जिसके लिए बीते नौ महीने से उन्होंने न जाने कितने सपने देखे थे? वात्सल्य ने क्रूरता पर विजय हासिल की। श्रीकांत कुछ अतिरिक्त स्नेह से पाले-पोसे जाने लगे। कहते हैं, प्रकृति दिव्यांगों को कोई न कोई अतिरिक्त मेधा देकर इस दुनिया में भेजती है, श्रीकांत को भी उसने बेहद जहीन दिमाग बख्शा था। उनकी पढ़ाई-लिखाई सरल नहीं थी, मगर माता-पिता ने बेटे के लिए हर मुश्किल उठाने का प्रण ले लिया था।

वीरा वेंकटेश्वरम्मा और दामोदर राव, दोनों अशिक्षित थे, मगर वे अच्छी तरह जानते थे कि बेटे की अंधेरी दुनिया में सिर्फ शिक्षा ही रोशनी फैला सकती है। श्रीकांत छह साल के हुए, तो पिता ने उनका नाम दूसरे बेटे के साथ सरकारी स्कूल में लिखा दिया। गांव से करीब पांच किलोमीटर दूर था स्कूल। अगले दो साल तक भाई का हाथ थामे वह दूरी श्रीकांत पैदल ही तय करते रहे। दृष्टि-बाधित होने के कारण उन्हें कक्षा में आखिरी बेंच पर बैठाया जाता। कोई सहपाठी उनसे बात नहीं करता था और न ही उन्हें किसी खेल-कूद में भाग लेने की इजाजत थी। मगर दो साल बाद चीजें तेजी से बदल गईं। साल 1998 में हैदराबाद के 'देवनार स्कूल फॉर द ब्लाइंड' में उन्हें दाखिला मिल गया।

नया स्कूल गांव से करीब 400 किलोमीटर दूर था। माता-

पिता चिंतित थे कि पता नहीं, अकेले रह भी पाएगा या नहीं उनका बेटा। मगर स्कूल पहुंचकर जो कुछ उन्होंने देखा, उससे उनकी सारी चिंताएं तिरोहित हो गईं, बल्कि वे संतोष के साथ वहां से लौटे। देश के मशहूर नेत्र विशेषज्ञ ए साईंबाबा गौड़ द्वारा स्थापित इस आवासीय स्कूल ने श्रीकांत को न सिर्फ अपनी मेधा को निखारने का पूरा मौका दिया, बल्कि जीने की असली आजादी का एहसास भी कराया। वहां वह दोस्त बना सकते थे, शतरंज व क्रिकेट खेल सकते थे और तैराकी कर सकते थे।

श्रीकांत ने यहीं इंजीनियर बनने का सपना देखा। गणित और विज्ञान में उनकी रुचि बढ़ती चली गई। दसवीं की बोर्ड परीक्षा में 90 प्रतिशत अंकों के साथ उन्होंने शानदार प्रदर्शन किया। मगर उन्हें उस वक्त गहरा धक्का लगा, जब आंध्र प्रदेश शिक्षा बोर्ड के इस नियम के बारे में पता चला कि दसवीं के आगे वह विज्ञान की पढ़ाई नहीं कर सकते, क्योंकि विज्ञान की पढ़ाई में चित्रों व ग्राफिक्स की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका होती है, इसलिए दृष्टि-बाधित बच्चों को इसे पढ़ने की अनुमति नहीं है।

स्कूल की एक शिक्षिका भी राज्य सरकार के इस नियम से नाखुश थीं, उन्होंने श्रीकांत को प्रोत्साहित किया कि वह कानूनी लड़ाई लड़ें, वह उनका साथ देंगी। श्रीकांत ने आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय में याचिका दायर की कि दृष्टि-बाधित बच्चों को भी विज्ञान पढ़ने का हक मिलना चाहिए। करीब छह महीने के बाद फैसला उनके हक में आया। इसके बाद वह रॉयल जूनियर कॉलेज पहुंचे, जहां से उन्होंने गणित, भौतिकी और रसायन की पढ़ाई की। श्रीकांत को इंजीनियर बनना था और इसके लिए उन्होंने काफी मेहनत की। 98 प्रतिशत अंक हासिल करके वह 12वीं की बोर्ड परीक्षा में अपनी पूरी कक्षा में अव्वल रहे।

अब उनका लक्ष्य आईआईटी पहुंचना था। श्रीकांत ने आवेदन किया, मगर उन्हें परीक्षा प्रवेशपत्र ही जारी नहीं किया गया। निराशा तो हुई, मगर वह हताश नहीं हुए। उन्होंने अमेरिकी शिक्षण संस्थानों में आवेदन किया और एमआईटी, बर्कले, स्टैनफोर्ड और कार्नेगी मेलॉन से उन्हें दाखिले का प्रस्ताव मिला। श्रीकांत ने एमआईटी को चुना। वह पहले दृष्टि-बाधित विदेशी छात्र थे, जिन्हें एमआईटी ने दाखिला दिया था। साल 2012 में वहां से एमबीए की डिग्री लेने के बाद श्रीकांत के पास अमेरिका में नौकरी के अनेक शानदार प्रस्ताव थे, मगर उन्हें तो हैदराबाद लौटना था। हैदराबाद लौटकर उन्होंने बोलंट इंडस्ट्रीज नाम से एक कंपनी की शुरुआत की। यह कंपनी इको-फ्रेंडली प्लेट-कप-ट्रे आदि बनाती है।

आईआईटी की प्रवेश-परीक्षा के लिए उन्हें प्रवेशपत्र जारी नहीं किया गया। निराशा तो हुई, मगर वह हताश नहीं हुए। श्रीकांत ने अमेरिकी शिक्षण संस्थानों में आवेदन किया और एमआईटी, बर्कले, स्टैनफोर्ड और कार्नेगी मेलॉन से उन्हें दाखिले का प्रस्ताव मिला। श्रीकांत ने एमआईटी को चुना।

कंपनी शुरू करने के पीछे उनका एक मकसद दिव्यांगों की बेरोजगारी दूर करना और उनमें यह आत्म-विश्वास भरना था कि वे भी आम लोगों की तरह सामान्य जिंदगी जी सकते हैं। उनकी कंपनी में आज सैकड़ों शिक्षित-अशिक्षित दिव्यांग काम करते हैं। मशहूर उद्योगपति रतन टाटा ने श्रीकांत की कंपनी में निवेश किया। साल-दर-साल यह कंपनी तरक्की करती गई और आज यह करीब 500 करोड़ रुपये की बन चुकी है। इस कामयाबी से भला किसे रश्क न होगा?

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

डेल कार्नेगी
उद्यमी व जीवन प्रशिक्षक

खेती-बाड़ी से शुरू हुई जो जिंदगी

वह युवक सोचने लगा कि क्या वह किसी काम के लायक है? क्या उसे कामयाबी मिलेगी? क्या समाज में पहचान बनेगी? क्या उसे जिंदगी में कभी तारीफ मिली है? कब मिली है? क्या कोई ऐसा काम है, जो खुद उस तक पहुंचा है? क्या कोई ऐसा काम है, जो लोग उससे लेना चाहते हैं?

जब आधी रात के बाद ज्यादातर बच्चे बिस्तर और रजाई में गहरी नींद का आनंद ले रहे होते थे, तब किसान का वह गरीब बच्चा खुद ही जाग जाता था। तीन बजे अंधेरे में ही वह खेती-बाड़ी में लग जाता। सूअरों को चारा देता और उसके बाद एक-एक कर अनेक गायों को दूहता था। उसके बाद ही नहा-धोकर, कुछ रूखा-सूखा-सा खाकर स्कूल के लिए निकल जाता था।

तब अमेरिका के गांवों में भी गरीब बच्चों के स्कूल बस एक कमरे में चला करते थे। उस लड़के में पढ़ाई की खूब लगन थी। बाद में वह बहुत दूर कॉलेज पढ़ने जाने लगा। कॉलेज के पास कमरा लेकर रहने के लिए पैसे नहीं थे। घोड़े से ही आना-जाना पड़ता था। खैर, स्नातक होने के बाद सेल्स की नौकरी मिली, वह पशुपालकों को पत्राचार पाठ्यक्रम बेचने लगा। काफी दिन साबुन बेचते भी बीते। कुछ पैसे जमा हुए, तो वह अभिनेता बनने निकल पड़ा। जिस थियेटर कंपनी में काम मिला, उस पर जल्दी ताला लग गया। युवक बहुत हताश-निराश हुआ। बेरोजगारी में मुसीबत के पहाड़ बनने लगे। रोजी-रोटी का संकट खड़ा हो गया। वह गांव लौटना नहीं चाहता था, लौटने पर गांव बहुत सवाल करता। उसने तय किया कि वह शहर में ही रहकर संघर्ष करेगा, पर शहर में करेगा क्या? बहुत तरह के काम कर चुका था, कोई काम पसंद नहीं आया था। ऐसे में, वह सोचने लगा कि क्या वह किसी काम के लायक है? क्या उसे कामयाबी मिलेगी? क्या समाज में पहचान बनेगी? क्या उसे जिंदगी में कभी तारीफ मिली है? कब मिली है? क्या कोई ऐसा काम है, जो खुद उस तक पहुंचा है? क्या कोई ऐसा काम है, जो लोग उससे लेना चाहते हैं?

इतने सारे सवालों से गुजरने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि जब वह कॉलेज में पढ़ता था, तब कुछ छात्र हठ करते थे कि वह उन्हें भाषण देना सिखा दे। दस लोगों के बीच बोलना सिखा दे और इसके लिए शुल्क भी वसूल ले। कॉलेज के दिनों में ऐसे कई छात्र थे, जो शुल्क देकर भाषण-कला सीखते थे। मतलब, वह भाषण देना सिखा सकता है। उसने अपनी प्राकृतिक योग्यता को जैसे ही पहचाना, उसके मन में आशा के दीप जल उठे।

फिर क्या था, वह पास ही स्थित प्रशिक्षण केंद्र पहुंच गया। उसने केंद्र के प्रबंधक से आग्रह किया कि वह छात्रों को बोलना या 'पब्लिक स्पीकिंग' सिखा सकता है। बहुत प्रयास के बाद प्रबंधक इस शर्त के साथ तैयार हुआ कि युवक की कक्षा से जो भी कमाई होगी, उसका अस्सी प्रतिशत हिस्सा संस्थान रख लेगा। महज बीस प्रतिशत कमाई के लिए भी वह युवक सहर्ष तैयार हो गया। कक्षा शुरू हुई, पर पहली ही कक्षा में मुसीबत खड़ी हो गई, वह जितना बोलने-दिखाने-सिखाने की तैयारी से आया था, वह सब आधे समय में ही समाप्त हो गया। पसीने छूटने लगे कि वह कक्षा के बाकी समय को कैसे पूरा करेगा? तभी उसके ध्यान में बचपन के वे खास मेले आए, जिनमें नाना प्रकार के वक्ता आते थे। जो न सिर्फ भाषण देते थे, संवाद भी करते थे और मनोरंजन भी। यही तरीका आजमाते हुए उसने वहां मौजूद छात्रों से एक सवाल पूछ लिया कि आप सब यह बताओ कि आपको किस बात पर गुस्सा आता है? फिर तो छात्र स्वयं ही बढ़-चढ़कर बताने लगे कि उन्हें किस बात पर गुस्सा आता है। यह सब करते हुए छात्रों को बहुत अच्छा लगा, तब उन्होंने मुग्ध भाव से अपने नए शिक्षक का नाम पूछा, सर, आपका नाम क्या है?

सर ने मुस्कराते हुए बताया, मेरा नाम डेल कार्नेगी है। अब मैं ही आप लोगों को 'पब्लिक स्पीकिंग' सिखाऊंगा। ज्यादा से ज्यादा संख्या में आप सब मेरी कक्षा में आइए और जिंदगी संवारने वाली इस जरूरी विधा में जल्दी से जल्दी पारंगत हो जाइए।

कुछ ही वर्ष बाद डेल कार्नेगी ने अपना अलग प्रशिक्षण संस्थान खड़ा कर लिया। वह उद्यमियों, प्रबंधकों, नेताओं, युवाओं को प्रशिक्षित करने लगे। साल 1936 में कार्नेगी ने *हाउ टु विन फ्रेंड्स ऐंड इन्फ्लुएंस पीपल* पुस्तक की रचना की। जल्दी ही यह पुस्तक बेस्ट-सेलर बन गई। कुछ ही वर्षों में इसकी लाखों प्रतियां बिक गईं। उन्होंने विकसित जीवन दर्शन पर एक और अद्भुत पुस्तक की रचना की, *हाउ टु स्टॉप वरीइंग ऐंड स्टार्ट लिविंग*। डेल कार्नेगी (1888-1955) आज भी दुनिया में सबसे ज्यादा बिकने वाले लेखकों में शुमार हैं। दुनिया में जब भी कोई प्रबंधक या उद्यमी निराश होता है, तो डेल कार्नेगी की पुस्तकें ही नई राहें खोलती हैं। वह अपने जीवनकाल में करीब पांच लाख लोगों को प्रशिक्षित कर कामयाबी की राह पर लाए थे। वह अपने अनुभव के सहारे अक्सर कहते थे कि अगर आपको अपने काम में मजा न आए, तो आपको सफलता नहीं मिलेगी। वह यह भी कहते थे कि कभी हार न मानिए, निराशा और असफलता वास्तव में सफलता की दो सबसे पक्की सीढ़ियां हैं।

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

हिंदी में हुक्का-पानी बंद करने की परंपरा

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

एक नामी साहित्यिक संस्था के साहित्यिक आयोजन का कुछ लेखक संगठनों ने विरोध और बॉयकॉट किया। इधर बॉयकॉटिए बॉयकॉट करते रहे और खबर बनाते रहे, उधर आयोजकों के प्रोगाम ज्यों के त्यों चलते रहे। कोई पूछे कि बॉयकॉट क्यों किया, तो जवाब आता है, इसलिए कि एक आयोजक आरोपित था। साहित्य में एक बार का आरोपित सौ बार का आरोपित!

बताइए, कहां साहित्य का नैतिक जगत... पुण्यात्माओं, देवताओं का पवित्र मंदिर और कहां ऐसे पापी? बॉयकॉट करके हमने अपनी और साहित्य की इज्जत बचा ली। पिछले बरस की ही बात रही। एक बड़े मीडिया हाउस द्वारा आयोजित साहित्यिक आयोजन को कुछ बड़े ब्रांडों ने प्रायोजित किया, तो कुछ साहित्यिक संगठनों के पेट में दर्द उठा। समस्या वही। कहां त्याग-तपस्या से निर्मित पवित्र साहित्य की दुनिया और कहां सड़े हुए बाजार के उपभोक्ता ब्रांडों का इस कदर हस्तक्षेप। संघर्ष व क्रांतिकारी कविता व विचार भी बिकने की चीज हो गए?

नतीजा यह हुआ कि आयोजन में आमंत्रित साथी को पहले धिक्कारा गया, ताकि वे न जाएं। दबाव इतना रहा कि जब वे गए, तो हिसाब देते रहे कि देखिए, मैंने तो वहां भी वही पढ़ा और उसी तेवर से पढ़ा, जिसके लिए जाना जाता हूं, यानी मैंने समझौता नहीं किया।

इन दिनों कहीं बाजार के सवाल बॉयकॉट करा देते हैं, तो कहीं किसी पर लगे नैतिक आरोप उसे बॉयकॉट के लायक बना देते हैं। ऐसे में, कुछ साहित्यकार, कुछ संगठन अचानक स्वयं को कानून, वकील, जज और फैसला बना लेते हैं। अरसे से यही 'रिपीट' हो रहा है। सवाल आया और चला गया। न विचार हुआ, न कोई निष्कर्ष निकला, न कार्य-नीति बनी, जो काम आए!

प्रगतिशील होने का दावा करने के बावजूद हिंदी साहित्यकार व संगठन अंततः अपना एक परम नैतिक जगत बनाते हैं, जो नितांत अकलुष है, जहां किसी ने कभी कोई पाप नहीं किया। इसीलिए, वे सीधी कारवाई में यकीन करते हैं, फिर भी अपने को जनतांत्रिक कहते हैं!

हिंदी में यही होता आया है। आए दिन उसे बहुत से मुद्दे, बहुत सारे सवाल झकझोरते हैं, लेकिन गहराई से विचार करने की जगह उनको बहिष्कार या बॉयकॉट की झाड़ू से सकेर दिया जाता है। अब विचार करने का सिरदर्द कौन मोल ले? बॉयकॉट की ठोकर मारो और सारा सिरदर्द गायब- *मूंदहु आंख कतहुं कुछ नाहीं।*

हिंदी हर मुद्दे को स्थगित कर अपना 'कंफर्ट जोन' बना ही लेती है। जहां सुई का काम हो, वहां तलवार चला दो, हिंदी की यही वैचारिक कल्चर बन गई है। कोई चुनौती आई नहीं कि फौरन बॉयकॉट। कभी हस्ताक्षर अभियान, तो कभी बहिष्कार, लेकिन विचार-विमर्श हरगिज नहीं। फिर भी, वह सामाजिक और क्रांतिकारी होने का दावा करती रहती है।

हिंदी आरामपरस्त भाषा हो चली है। कठिन सवाल आता है, तो हिंदीवाला सोचता है कि कोई और हल कर दे। सवाल से डर के वह इम्तिहान का ही बॉयकॉट कर देता है और सवाल पड़ा रह जाता है। अब तक हजार सवाल आए और गए, पर हमने एक का भी सही उत्तर नहीं निकाला, फिर भी गाते रहे कि 'घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए?' अरे! जवाब चाहते किससे हो? अपना जवाब खुद खोजो और पाओ।

कबीर तो कब के कह गए कि *जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ/हों बौरी ढूंढन गई रही किनारे बैठ!!* लेकिन अपना हिंदी साहित्य अभी तक गहरे पानी नहीं पैठा है और जब से सोशल मीडिया आया है, तब से तो हरेक लेखक अपने आप को प्लेटो, अरस्तू, मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, माओ, चे-ग्वेरा, लुकाच, ग्राम्शी, बेंजामिन का बाप समझकर किनारे ही बैठा है।

सच! नया सवाल, नई चुनौती आई नहीं कि हमने कहा नहीं- बॉयकॉट। तुम्हारा बहिष्कार। तेरा हुक्का पानी बंद। तू बिरादरी से बाहर। बचने के कितने बढ़िया शॉर्टकट बना लिए हैं हमने!

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

मुझे विवाद पैदा करने में आनंद आता है

हिंदी-संसार में विभूति नारायण राय की पहचान वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के साथ ही, एक जनवादी लेखक-उपन्यासकार के रूप में भी बखूबी रही है। यह महत्वपूर्ण पड़ाव है कि वह आगामी 28 नवंबर को अपने जीवन के 75 वर्ष पूरे करने जा रहे हैं। इस अवसर पर प्रस्तुत हैं उनसे कथाकार-पत्रकार जयंती रंगनाथन के साक्षात्कार के प्रमुख अंश...

इलस्ट्रेशन: यशवंत नामदेव

साक्षात्कार

विभूति नारायण राय

जन्म: 28 नवंबर, 1950

आपने जिस समय लिखना शुरू किया, क्या आपको ऐसा नहीं लगा कि इसे ही करियर बनाया जाए? आपने पुलिस जैसी नौकरी क्यों चुनी?

मैंने लिखना बड़ी कच्ची उमर से शुरू कर दिया था। उस समय करियर जैसा कोई बड़ा मुद्दा था ही नहीं। मेरी पहली कविता 1965 में बनारस के दैनिक *आज* में छपी थी। एक मध्यवर्ग का प्राणी था मैं, जिसको सुरक्षित जिंदगी हासिल करने का एक ही तरीका समझ आता था कि वह कोई ठीक-ठाक-सी नौकरी तलाश ले। मैं बचपन में बेचैन आत्मा था और धुर दक्षिणपंथ से धुर वामपंथ की यात्रा करता रहा। परीक्षाओं में मुझे कभी सेकेंड डिवीजन से ऊपर दर्जा नहीं मिला। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में लेक्चरर बनने के लिए फर्स्ट डिवीजन जरूरी थी। लिहाजा ठीक-ठाक नौकरी हासिल करने के लिए लोक सेवा आयोग अकेला विकल्प था, तब इलाहाबाद के लड़कों की इसी में महारत थी, सो मैंने भी वही रास्ता चुना और आईपीएस में आ गया।

आपका बचपन कैसा बीता था?

मैं कुछ अर्थों में आत्मकेंद्रित बच्चा था। आज पीछे मुड़ कर देखता हूं, तो कह सकता हूं कि शायद कुछ आत्मविश्वास की कमी भी थी। इसका एक असर यह हुआ कि मैंने साहित्य की शरण ली। मेरे पिता एक ऐसी नौकरी में थे, जहां हर दो-तीन साल बाद उनका तबादला होता रहता था, इसलिए मेरी प्रारंभिक शिक्षा अलग-अलग शहरों में हुई। कुछ शहरों में, जहां मेरा बचपन बीता, अद्भुत पुस्तकालय मिले और उनमें पढ़ते हुए मेरे अंदर के लेखक को विकसित होने का मौका तो मिला ही, एक अंतर्मुखी व्यक्ति को अपनी शिनाख्त बनाने में भी मदद मिली। मैं दोस्तबाज था। इस बात का मुझे हमेशा संतोष रहा कि मुझे बेहद चाहने वाले दोस्त मिले।

आपके जीवन में लेखन का प्रवेश कब और कैसे हुआ? शुरू में आप क्या लिखते थे?

पढ़ने की लत तो बहुत शुरुआती बचपन में ही लग गई थी। उन दिनों *धर्मयुग* और *साप्ताहिक हिन्दुस्तान* जैसी पत्रिकाएं थीं, जो मेरे जैसे बच्चे के लिए किसी नशे से कम नहीं थीं। थोड़ा बड़ा हुआ, तो *सारिका* और *दिनमान* मिलने लगीं। उन दिनों हिंद पाकेट बुक्स से एक रुपये में विश्व क्लासिक्स मिला करते थे। पाठ्य पुस्तकों से ज्यादा उनमें मन रमता। हम चार भाई थे और एक बहन। चचेरे भाई-बहनों की भी बड़ी फौज थी। बचपन में दो महीने गांव आजमगढ़ या ननिहाल में बीतता। नानी अद्भुत किस्सागो थीं। वे रात-रात भर चलने वाली कहानियां सुनातीं, जिनमें पता ही नहीं चलता कि वाचक और श्रोताओं में से कब कौन सो गया।

इलाहाबाद से जुड़ा कोई रोचक प्रसंग सुनाएं। उस समय के, जब आप वहां छात्र थे और उस समय के भी, जब आप वहां के एसएसपी थे?

इलाहाबाद मुझे तब दुनिया का सबसे खूबसूरत शहर लगता था। 1969 में जब मैं पहली बार वहां छात्र के रूप में पहुंचा, तभी उसने मुझे मोह लिया। उन दिनों का इलाहाबाद था भी बड़ा अद्भुत। हिंदी और उर्दू के बहुत बड़े नाम यहां मौजूद थे। छात्र के रूप में मेरे लिए उनके साथ कुछ समय बिताना भी यादगार अनुभव बन जाता था। यहां मशहूर शायर फिराक गोरखपुरी साहब के साथ बिताई शामें आधी शताब्दी बाद भी मुझे याद हैं। पुलिस की नौकरी के दौरान मैं कई बार इलाहाबाद में तैनात रहा। वहीं मुझे राज्य और अल्पसंख्यकों के रिश्तों को समझने का मौका मिला और वहीं के अनुभवों की वजह से मैं *शहर में कर्फ्यू* उपन्यास लिख सका।

आपने पुलिस जैसी कठिन नौकरी के साथ साहित्य साधना की। सत्ता के खिलाफ और बेखौफ लिखा। आपको ऐसे लिखने की प्रेरणा कहां से मिली?

मैंने हमेशा दोहरी जिंदगी जी है। मैं पुलिस में था, जिसे साहित्य विरोधी संस्था के रूप में जाना जाता है, और लेखक भी था। कोशिश यही की कि दोनों शिनाख्त गड्डमड्ड न हों। हमारे बहुत सारे अफसर लेखक, अफसरों के बीच लेखक और लेखकों के बीच अफसर बन जाते हैं। मैंने कोशिश की कि इस प्रवृत्ति से बचूं। इतना जरूर कहूंगा कि दोनों पेशों ने मेरी मदद की है। पुलिस ने मेरे अनुभव संसार को खूब समृद्ध किया। जिस तरह के अनुभव मुझे पुलिस में रहते हुए, वे किसी दूसरे पेशे में नहीं मिलते। मुझे चोरों, उचक्कों, दलालों, भ्रष्ट राजनेताओं से लेकर भले-भोले, आदर्शों के लिए जान देने वालों से लेकर जरूरतमंद गरीब गुरबा से निकट से साक्षात्कार करने का मौका मिला।

आपके साथ कुछ न कुछ विवाद भी जुड़े रहे हैं। आपने एक साक्षात्कार में कहा था कि हिंदी लेखिकाओं में एक वर्ग ऐसा है, जो अपने आपको बड़ा छिनाल साबित करने में लगा है। ऐसा कहने से आपको कितना नुकसान हुआ और इसके निहितार्थ क्या थे?

दरअसल, मुझे शुरू से ही कुछ-न-कुछ विवाद पैदा करने में आनंद आता है। यह विवाद भी इसी चक्कर में पैदा हुआ। करेले पर नीम इसलिए भी चढ़ गया कि इस प्रकरण के दूसरे पात्र रवींद्र कालिया हद दर्जे के विनोदी थे। हमने जिसे खिलवाड़ समझा, वह देखते-देखते झंझावात में तब्दील हो गया। सब साहित्य की राजनीति से जुड़ा था। मुखालिफीन में कुछ लोग कालिया का सिर चाहते थे, तो कुछ लोग मुझसे नाराज थे। बहरहाल, डेढ़-दो साल बड़े तल्ख अनुभवों से गुजरना पड़ा। तकलीफ यह थी कि जो हमारे खिलाफ तलवार भांज रहे थे, उनमें अधिकांश मित्र थे। इसके चलते कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे ऐसे भी थे, जिन पर कोई बहस नहीं हुई। मसलन, मेरा मानना था और आज भी यही मानता हूं कि स्त्री मुक्ति सिर्फ देह के रास्ते नहीं हो सकती। और भी कई मसले हैं, जिन पर गंभीर चर्चा होनी चाहिए थी। विवाद के शोर में उस साक्षात्कार पर वैसी गंभीर चर्चा नहीं हो सकी, जिसकी मैं उम्मीद कर रहा था।

आप लगातार लिखते रहे हैं। अखबारों में स्तंभ और जमाने के साथ बदलता साहित्य। आपने हाल के वर्षों में अपराध कथा लिखी है। क्या आगे भी आप रहस्य-रोमांच जैसे विषयों पर लिखते रहेंगे?

रिटायरमेंट के बाद मेरे पास समय-ही-समय है, इसलिए मैंने नियमित कॉलम लिखने शुरू कर दिए। दैनिक *हिंदुस्तान* में ही मुझे नियमित कॉलम लिखते लगभग दस वर्ष हो रहे हैं। हिंदी समाज में एक खास तरह का पाखंड है। यहां कुछ विषयों पर लिखना कमतर माना जाता है। मसलन, अगर आप जासूसी उपन्यास लिखें, बच्चों के लिए रचें या विज्ञान कथाओं पर कलम चलाएं, तो आप मुख्यधारा से बाहर के माने जाएंगे। *रामगढ़ में हत्या* उपन्यास दो कारणों से लिखा गया- एक तो मेरे पास उस समय कोई दूसरी कहानी नहीं थी। मैंने *हाशिमपुरा 22 मई* खत्म ही की थी और नए प्लॉट की तलाश में था, दूसरे मुझे यह एक चुनौती भी लगी कि कोई जासूसी उपन्यास लिखूं और पाठकों से पढ़वा भी लूं।

आपको अपना कौन-सा उपन्यास ज्यादा पसंद है?

मेरी पहचान तो बनी *शहर में कर्फ्यू* उपन्यास के चलते, पर मुझे सबसे ज्यादा पसंद है - *प्रेम की भूतकथा*। यह एक प्रेम उपन्यास है और प्रेम मेरा सबसे पसंदीदा क्षेत्र है। प्रेम की उपस्थिति निरंतर बनी रहती है। जब यह लिखा जा रहा था, तब दूधनाथ सिंह ने मेरी किसी दूसरी किताब पर टिप्पणी करते हुए कहा कि इसकी भाषा बड़ी सपाट है। इस टिप्पणी को चुनौती के रूप में लेते हुए मैंने इस उपन्यास की भाषा पर जमकर मेहनत की।

आपने व्यंग्य भी लिखे हैं। *तबादला* आपका चर्चित उपन्यास है। आपने उपन्यास के लिए यह विधा क्यों चुनी? क्या व्यंग्य का असर ज्यादा गहरा होता है?

मैंने शुरू में व्यंग्य खूब लिखे। *वागर्थ* और *नया ज्ञानोदय* के कॉलम व्यंग्य ही थे। उपन्यास *तबादला* भी व्यंग्य रूप में है। जिस नौकरशाही व राजनीति के घालमेल को केंद्र में रखकर मैं इसे लिख रहा था, उसके विद्रूप को पकड़ने का धारदार माध्यम मुझे व्यंग्य ही लगा। आज भारतीय समाज पर सबसे अच्छी टिप्पणी व्यंग्य के माध्यम से ही हो सकती है।

आपने लगातार काम किया है। कुलपति रहे। *वर्तमान साहित्य* जैसी पत्रिका निकाली। आप अब कैसा जीवन चाहते हैं? क्या कोई हसरत बाकी है?

मैं जब पीछे मुड़कर देखता हूं, तो लगता है कि जितने का मैं पात्र था, उससे अधिक मुझे मिला। मैंने एक भरापूरा जीवन जिया। बहुतों से प्यार किया और बहुतों का प्यार पाया। मैं तो किशोरावस्था से ही नास्तिक हूं और अब जीवन की इस सांध्य बेला में ज्यादा कट्टर नास्तिक हो गया हूं। ऊपर जाकर मुझे किसी को हिसाब नहीं देना, इसलिए शेष जीवन को भी भरपूर जीना चाहता हूं। पिछले दिनों दिल के चलते मृत्यु के मुंह में पहुंच गया था। पत्नी पद्मा और बेटा शाश्वत मुझे खींच लाए। कुछ महीने आईसीयू में रहा, तो मुझे बड़े दिलचस्प अनुभव हुए। आजकल उन्हीं पर लिख रहा हूं।

पुस्तक अंश

शिक्षा के जरिये मैकाले ने बोए गुलामी के बीज

'हिंद स्वराज' को भारतीय परंपरा का आधुनिक क्लासिक कहा जाता है। गांधीजी ने हिंद स्वराज को अपने तरुणकाल में लिखा था। इसके बावजूद आज तक इसकी जरूरत बनी हुई है। हाल में आई पुस्तक 'हिंद स्वराज और नया मन्वन्तर' अतीत की घटनाओं अथवा भविष्य की आशाओं पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय सीधे वर्तमान में 'हिंद स्वराज' की जांच करती है। इसकी उपयोगिता तथा व्यापकता पर जोर देती है। प्रस्तुत है इस पुस्तक से एक अंश...

हिंद स्वराज और नया मन्वन्तर

लेखिका: सु. श्री. पांढरीपांडे
अनुवाद: श्रद्धा भारद्वाज
प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य: ₹350

गांधीजी की स्वराज्य की संकल्पना के संदर्भ में हमने इस चर्चा की शुरुआत की-'हिंदुस्तान अंग्रेजों के पैरों तले नहीं, बल्कि आधुनिक सभ्यता के पैरों तले रौंदा जा रहा है।' ऐसा गांधीजी का मत था, इसलिए इस सभ्यता से या जीवन दृष्टि से मुक्ति प्राप्त करना स्वराज्य का ध्येय था।

'हिंद स्वराज' के 18वें अध्याय में गांधीजी ने शिक्षा के संबंध में जो विचार रखा है, यह उसका संदर्भ है। 'संसार की कोई भी शिक्षा-पद्धति तटस्थ नहीं होती,' ऐसा पॉवलो फ्रिअरी ने अपनी 'पेडागॉजी ऑफ दी ऑप्रेस्ड' किताब में कहा है। यह बात इससे भी पूर्व गांधीजी ने पहचान ली थी।

भारतीय प्रबोधन पर्व में भारत का सुशिक्षित वर्ग अंग्रेजी शिक्षा की वाहवाही कर रहा था; अंग्रेजी भाषा को 'शेरनी का दूध' कह रहा था और अंग्रेजी सत्ता को ईश्वरीय वरदान कह रहा था। अंग्रेजी शिक्षा के संबंध में गांधीजी का यह मत ध्यान देने योग्य है, 'करोड़ों लोगों को अंग्रेजी शिक्षा देना यानी उन्हें परतंत्र बनाना है। मैकाले ने जो इस शिक्षा के बीज बोये, वह सही मायने में परतंत्रता के बीज बोना था... अंग्रेजी शिक्षा से दंभ, द्वेष, जुल्म बढ़े। अंग्रेजी सीखे लोगों ने अन्य लोगों को फंसाने एवं उन्हें तकलीफ देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। सभ्यता के रोग से हम इस तरह ग्रसित हैं कि अंग्रेजी शिक्षा लिए बिना हमारा जीवन नहीं चलेगा, ऐसा हमें लगता है।'

भारतीय आंदोलन का नेतृत्व करनेवाले सुधारवादियों और गांधीजी की शिक्षा विषयक भूमिका में अंग्रेजी शिक्षा के समाज पर प्रभाव के आकलन में जमीन-आसमान का अंतर है। 'इस शिक्षा ने भारत में द्वेष और दंभ फैलाने का काम किया', ऐसा गांधीजी कहते हैं।

अंग्रेजी शिक्षा का भारतीय उच्चभ्रू वर्ग की मानसिकता पर कैसा और कौन-सा परिणाम हुआ, यह गांधीजी आगे बताते हैं। उनके मतानुसार मैकाले को यही चाहिए था। मैकाले की इसी नीति के कारण यहां का अंग्रेजी साम्राज्यवाद दृढ़ और दृढ़तर बनता चला जा रहा था। आखिर मैकाले को क्या चाहिए था?

भारत पर यह आक्रमण एक सभ्यता, एक जीवन दृष्टि का है, ऐसा जब गांधीजी कहते थे; वह कितना सत्य, अंतर्भेदी आकलन था। यह सिद्ध करने के लिए और सबूत देने की गरज नहीं है। मैकालेप्रणीत शिक्षण अगर एक बार यहां जड़ जमा लेता है, तो अंग्रेज भारत में रहते हैं या भारत छोड़कर चले जाते हैं, इसका विशेष महत्व नहीं रह जाता, क्योंकि उनकी शिक्षा-पद्धति से उनका राज सदियों तक टिका रह सकेगा, ऐसी प्रणाली उन्होंने स्थापित कर दी थी।

इस शिक्षा से सुशिक्षित भारतीयों में एक प्रकार का श्रेष्ठत्व निर्मित हुआ। इतना ही नहीं गांव-देहात में रहनेवाली गरीब जनता के प्रति एक तुच्छता की भावना निर्मित हुई, परिणामतः संपूर्ण भारतीय समाज में अभिजन वर्ग और जनसामान्य का वर्ग, ऐसी दोहरी मानसिकता पनपने लगी। सुशिक्षित अभिजन वर्ग का भारत की संस्कृति और परंपराओं से संबंध क्षीण होने लगा।

पुस्तकें आई हैं

प्रतिनिधि कहानियां

(कहानी-संग्रह)

लेखक: मंजूर एहतेशाम
संपादक: वंदना राग
प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य: ₹199

धर्म, राजनीति, प्रेम और गरीबी जैसे विषय मानो लेखन के अनिवार्य तत्व जैसे हों। इनके बिना लेखन असंभव भले ही न हो, लेकिन मुश्किल जरूर हो जाता है। इस संग्रह की कहानियों में भी ये तमाम विषय हैं। इन कहानियों का फलक भले ही छोटा हो, लेकिन इनमें उठनेवाले सवाल बड़े और वाजिब हैं। 'प्रतिनिधि कहानियां' संग्रह की कहानियां साधारण चरित्रों के असाधारण हो जाने की गवाह हैं।

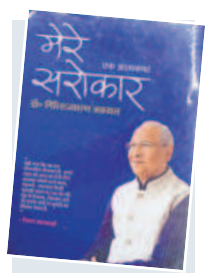

मेरे सरोकार: एक आत्मकथा

(आत्मकथा)

लेखक: डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
प्रकाशक: हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर
मूल्य: ₹1000

ईमानदारी ऐसा शब्द है, जिसकी इच्छा इंसान हमेशा दूसरों से करता है। इसके बावजूद इसका मोल जीवन के हर क्षेत्र में है। साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। लेखन में भी ईमानदारी चाहिए, फिर आत्मकथा तो इसकी विशेष मांग रखती है। इसे लिखनेवाले व्यक्ति को निस्पृह होकर अपने को पाठकों के सामने रखना चाहिए। इस कसौटी पर इधर आई पुस्तक 'मेरे सरोकार : एक आत्मकथा' खरी उतरती है।

शाम तक लौटा नहीं

(गजल-संग्रह)

लेखक: डॉ. सोमनाथ शुक्ल
प्रकाशक: गुफ्तगू पब्लिकेशन, प्रयागराज
मूल्य: ₹200

'**जब** बड़ों ने हाथ सिर पर रख दिया, लू भी सच में पुरवाई लगी।' जैसे शेर इस बात की तसदीक करते हैं, जिंदगी की परेशानियों में जब घर के बुजुर्ग सिर पर हाथ रखते हैं, तो परेशानी भी परेशान हो जाती है। परिवार, प्यार, नाते-रिश्ते, प्रकृति चित्रण यानी जीवन के तमाम जरूरी पहलुओं को छूती है 'शाम तक लौटा नहीं' गजल-संग्रह की गजलें। ये दिल को सिर्फ छूती ही नहीं हैं, हौसला भी देती हैं।

खजाने की शोधयात्रा

लेखक: प्रशांत पोल
प्रकाशक: प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य: ₹450

भारत में 'भाष्य' की परंपरा सनातन है, इसलिए देश-काल-परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन होते रहेंगे। संकल्पनाएं बदलती रहेंगी और नए शोध सामने आते रहेंगे। इसी कड़ी में है पुस्तक 'खजाने की शोधयात्रा।' पुस्तक में 'सूर्य मंदिरों का रहस्य' से लेकर 'वैश्विक गणेश' तक अठारह अध्याय हैं। पुस्तक में भारत के प्राचीन वैभव को गहन शोध के साथ रेखांकित किया गया है।

रोजनामचा

साप्ताहिक भविष्यफल

(23 नवंबर से 29 नवंबर 2025)

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष (21 मार्च-20 अप्रैल)
मन परेशान हो सकता है। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। सेहत का ध्यान रखें। बातचीत में संयत रहें। 24 नवंबर से कारोबार में सुधार होगा। किसी मित्र का सहयोग भी मिल सकता है।

वृष (21 अप्रैल-20 मई)
मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। आत्मसंयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। परिवार का साथ मिलेगा। मित्रों का सहयोग भी मिलेगा। बौद्धिक कार्यों से आय में वृद्धि होगी।

मिथुन (21 मई-21 जून)
आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन में उतार-चढ़ाव भी हो सकते हैं। माता की सेहत का ध्यान रखें। 24 नवंबर के बाद आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। कारोबार के लिए पिता से धन मिल सकता है।

कर्क (22 जून-23 जुलाई)
आत्मसंयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। परिवार का साथ मिलेगा। कारोबार में वृद्धि होगी। भागदौड़ अधिक रहेगी। सेहत का ध्यान रखें। लाभ के अवसर भी मिलेंगे। आय में वृद्धि भी होगी।

सिंह (24 जुलाई-22 अगस्त)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। 24 नवंबर के बाद कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ के अवसर मिलेंगे। 27 नवंबर के बाद वाहन सुख में वृद्धि हो सकती है।

कन्या (23 अगस्त-22 सितंबर)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। कारोबार में वृद्धि होगी। भागदौड़ अधिक रहेगी। परिवार का साथ मिलेगा। किसी मित्र का सहयोग भी मिल सकता है। बौद्धिक कार्यों से आय में वृद्धि होगी।

तुला (23 सितंबर-23 अक्तूबर)
सप्ताह के प्रारंभ में आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। 24 नवंबर के बाद किसी नए व्यापार की शुरुआत हो सकती है। परिवार से दूर किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं। भागदौड़ अधिक रहेगी।

वृश्चिक (24 अक्तूबर-21 नवंबर)
आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे। वाणी में मधुरता रहेगी। फिर भी संयत रहें। अपनी भावनाओं को वश में रखें। सप्ताह के प्रारंभ में जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी।

धनु (22 नवंबर-21 दिसंबर)
सप्ताह के प्रारंभ में मन प्रसन्न रहेगा, परंतु आत्मविश्वास में कमी रहेगी। पारिवारिक समस्याएं परेशान कर सकती हैं। भागदौड़ अधिक रहेगी। कारोबार में भी कठिनाइयां आ सकती हैं।

मकर (22 दिसंबर-19 जनवरी)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान भी हो सकता है। आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें।

कुंभ (20 जनवरी-18 फरवरी)
मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। किसी अज्ञात भय से परेशान हो सकते हैं। मन में नकारात्मक विचारों से बचें। 24 नवंबर से कारोबार में वृद्धि होगी। किसी मित्र के सहयोग से लाभ में वृद्धि होगी।

मीन (19 फरवरी-20 मार्च)
मन में शांति रहेगी। आत्मविश्वास भी भरपूर रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। 24 नवंबर के बाद कारोबार में बदलाव के साथ परिवार से दूर किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

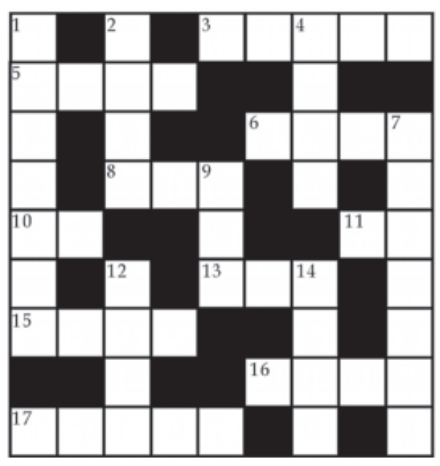

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

23 नवंबर, रविवार, **शक संवत्**: 02 मार्गशीर्ष (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग**: 08 मार्गशीर्ष मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम**: 01 जमादि-उल्सानी, 1447, **विक्रमी संवत्**: मार्गशीर्ष शुक्ल तृतीया तिथि सायं 07.25 मिनट तक। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, धृति योग दोपहर 12.09 मिनट तक पश्चात शूल योग, गर करण। चंद्रमा धनु राशि में (दिन-रात)।

सूर्य दक्षिणायन। सूर्य दक्षिण गोल। हेमंत ऋतु। सायं 04.30 मिनट से सायं 06 बजे तक राहुकालम्। गंडमूल सायं 07.28 मिनट तक। जमादि-उल्सानी (मु.) मास प्रारंभ।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

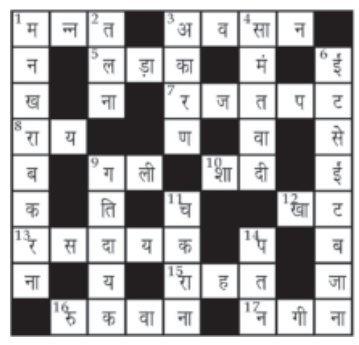

हम पिछले बहुत समय से घर लेना चाह रहे हैं, लेकिन कोई व्यवस्था ही नहीं बन पा रही है। कोई उपाय बताएं?
-कुमार आदर्श, रांची

- आपके ईशान कोण में स्टोर है, जिसके कारण आप यह निश्चय ही नहीं कर पा रहे हैं कि कैसा घर लेना है। आपकी पूर्व दिशा में जूतों की रैक रखी हुई है, जिसके कारण आपको ब्रोकर ही सही नहीं मिल पा रहे हैं, जो अच्छा घर दिखाएं। आपके दक्षिण पूर्व दिशा में काला रंग है तथा कट भी है, जिसके कारण कैश फ्लो की समस्या बनी रहती है। आपके नार्थ वेस्ट में एक्सटेंशन है, जिसके कारण आपको बैंक से लोन मिलने में दिक्कत आ सकती है। अपने घर की पश्चिम दिशा से लाल रंग के पर्दे हटा दीजिए। इसके कारण आपकी इच्छा पूरी नहीं हो पा रही है।

वर्ग पहेली: 8157

ऊपर से नीचे

1. हक के साथ; अधिकारिक रूप से (7)
2. चिंता; व्यग्रता; ध्यान; भरोसा; बहाव (4)
4. एक राय; एक मत; जिनका विचार मिलता हो (4)
7. करिश्मा करना; चमत्कार करना; तिलिस्म दिखाना (4,3)
9. कालिख; दाग; धब्बा; लांछन (3)
12. आकर्षित करने वाला; खींचने वाला; मोहक; रोचक (4)
14. निर्वाचन पर्ची; मतदान हेतु दिया जाने वाला पत्रक (4)

बाएं से दाएं

3. सभा का सदस्य; सभासद (2,3)
5. भर्त्सना करना; लानत देना (4)
6. युद्ध संबंधी; यौद्धिक; समर का; समर संबंधी (4)
8. अनादर; अपमान; बेइज्जती; हेठी (3)
10. सारा; संपूर्ण; अखंड; समूचा; समग्र; भरपूर (2)
11. अंतिम छोर; पराकाष्ठा; नियम; मर्यादा; सरहद; हद (2)
13. शपथ; शपथपूर्वक की गई प्रतिज्ञा; सौगंध (3)
15. कराहना; टीसना; दर्द करना; पीड़ा होना; सालना (4)
16. भेंट; नजराना (4)
17. बंधन मुक्त करना; मुक्ति देना (2,3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली 8156 का उत्तर

सुडोकू: 8139

*कठिन

3							5	
			7	2			9	
		7			9	2	4	1
							1	
2				6				3
	5							
4	7	9	5			1		
	2			7	1			
	1							8

खेलने का तरीका: दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। तर्क से इसे हल कर सकते हैं। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

हल: सुडोकू नं. 8138

4	7	2	5	9	1	3	6	8
8	9	5	7	3	6	2	4	1
6	3	1	2	4	8	5	9	7
5	4	3	8	2	9	7	1	6
2	8	9	6	1	7	4	3	5
1	6	7	4	5	3	8	2	9
7	1	6	3	8	4	9	5	2
3	2	8	9	6	5	1	7	4
9	5	4	1	7	2	6	8	3